समृद्ध बनने की असीम शक्ति

आपने अवचेतन मन की शक्ति से
वह समृद्धि प्राप्त करें जिसके आप हकदार हैं

जोसेफ़ मर्फ़ी, पीएच.डी., डी.डी.

द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड के लेखक

Hindi translation of
Your Infinite Power to Be Rich by *Joseph Murphy*

समृद्ध बनने की असीम शक्ति

अपने अवचेतन मन की शक्ति से
वह समृद्धि प्राप्त करें जिसके आप हकदार हैं

जोसेफ़ मर्फ़ी, पीएच.डी., डी.डी.

अनुवाद : डॉ. सुधीर दीक्षित

MANJUL
मंजुल पब्लिशिंग हाउस

First published in India by

Manjul Publishing House Pvt. Ltd
Corporate Office:
2nd Floor, Usha Preet Complex,
42 Malviya Nagar, Bhopal. INDIA-462003
Email: manul@manjulindia.com
Website: www.manjulindia.com

Sales & Marketing Office:
7/32, Ground Floor, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi- 110002
Email: Sales@manjulindia.com

Hindi translation of ***YOUR INFINITE POWER TO BE RICH***
By Joseph Murphy, Ph.D., D.D.

Copyright © 1996 by Parker Publishing Company, Inc

All rights reserved including the right of reproduction in whole or in part in any from. This edition published by arrangement with **Prentice Hall Press**, a member of Penguin Group (USA) Inc.

This edition first published in 2012
Second impression 2014

ISBN 978-81-8322-276-1

Translation by Dr. Dixit

Printed & bound in India by Thomson Press (India) Ltd.

All right reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in

or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any from, or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise) without the prior written permission of the publisher. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

यह पुस्तक आपको कैसे लाभ पहुँचा सकती है

यह पुस्तक इस प्रकार लिखी गई है कि इस पर अमल करना बहुत व्यावहारिक हो। यह उन स्त्री-पुरुषों के लिए लिखी गई है जिन्हें पैसों की ज़रूरत है और जो उस दौलत को खोज रहे हैं, जो जीवन उन्हें दे सकता है।

यह उन लोगों के लिए है, जो तुरंत परिणाम चाहते हैं। इसमें ज़मीन से जुड़ी सरल तकनीकें विस्तार से बताई गई हैं; आपको तो बस अपने मन में उन पर अमल करने की इच्छा जागृत करनी है। आगे दिए पन्नों में आपको इन तकनीकों के विशेष विवरण और उदाहरण मिलेंगे, जिनसे आप समझ लेंगे कि उनका इस्तेमाल करके आप सहजता से दौलत कैसे पा सकते हैं।

इस पुस्तक में बताए गए मस्तिष्क के बुनियादी नियमों पर आप उतना ही विश्वास कर सकते हैं जितना कि आप एडिसन या आइंस्टीन के विद्युत या गणित के नियम-सिद्धांतों पर करते हैं। यही नहीं, इनके द्वारा आप उनके जितने ही निश्चित और सटीक परिणाम भी पा सकते हैं।

इस पुस्तक को मैंने सादगीपूर्ण सहज शैली में लिखा है, ताकि बारह साल का लड़का भी इसमें बताई तकनीकों को समझ सके और उन पर अमल कर सके।

इस पुस्तक में उन लोगों के बहुत से उदाहरण दिए गए हैं, जो मानसिक और आध्यात्मिक नियमों का इस्तेमाल करके समृद्ध बने। मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ कि वे किसी ख़ास धर्म के नहीं थे। यही नहीं, वे हर आय वर्ग और हर सामाजिक स्तर के थे। उनमें बस यही समानता थी कि उन सभी ने एक विशेष तकनीक से सोचा, अपने अवचेतन मन की शक्ति का सही तरीक़े से इस्तेमाल किया और फलस्वरूप दौलत इकट्ठी की।

इस पुस्तक में शामिल कुछ उदाहरणों की संक्षिप्त झलक नीचे देखें:

- किस प्रकार एक सेल्समैन ने एक वर्ष के भीतर ही अपनी सालाना आमदनी 5,000 डॉलर से बढ़ाकर 50,000 डॉलर कर ली?
- किस प्रकार बहुत से लोग बिलों का भुगतान करने के लिए एक जादुई फ़ॉर्मूला अपनाते हैं और बेहतरीन परिणाम पाते हैं?
- किस प्रकार लॉस एंजेलिस का एक व्यवसायी मिलियन डॉलर-फ़ॉर्मूले पर चला और फिर “कंगाली” से करोड़ों की स्टोर चेन का मालिक बन गया?
- किस प्रकार छुटपुट काम करने वाला एक बढ़ई अट्टालिकाओं का निर्माता बना और उसने बहुत सारी दौलत इकट्ठी कर ली?

- किस प्रकार एक दिवालिया आदमी ने अमीरी के तीन विशिष्ट क़दमों पर अमल किया और इसके बाद जीवन में दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी की?
- किस प्रकार एक दौलतमंद खनिक ने अमीरी का विचार अपने बेटे को बताया, जो आज एक मशहूर सर्जन है और उसकी कहानी में अमीरी की कुंजी छिपी हुई है?
- किस प्रकार मि. टाइंग ने सत्य के युगों-युगों पुराने सबक़ पर अमल किया और एक मल्टीमिलियन-डॉलर कॉरपोरेशन की स्थापना की? किस प्रकार उन्होंने बाइबल से दौलत का फ़ॉर्मूला सीखा और इसे कारगर साबित कर दिया?
- किस प्रकार कवि, लेखक चित्रकार, वैज्ञानिक और व्यवसायी अपने भीतर के असीमित ख़जाने में से दौलत निकालते हैं?
- दस वर्ष का एक लड़का जहाँ भी जाता है, लगातार धनराशियों के उपहार किस प्रकार पाता है?
- किस प्रकार मानसिक और आध्यात्मिक नियमों के ज्ञान के संदर्भ में समृद्ध बनें तथा यह अहसास करें कि इसके बाद जीवन की सभी अच्छी चीज़ें आपके पास अपने आप आ जाएँगी?

समृद्ध बने बिना आप पूर्ण और ख़ुशहाल जीवन नहीं जी सकते! अमीर बनने का एक तर्कसंगत और विज्ञानसम्मत उपाय है, जो इस पुस्तक में बताया जा रहा है। यदि आप समृद्ध ख़ुशहाल और सफल जीवन की फ़सल काटना चाहते हैं, तो आपको इस पुस्तक का बार-बार अध्ययन करना चाहिए। यह आपसे जो करने को कहती है, वह निर्दिष्ट तरीक़े से करें। जब आप ऐसा करेंगे, तो ज़्यादा भव्य, ज़्यादा श्रेष्ठ, ज़्यादा ख़ुशहाल ज़्यादा समृद्ध और ज़्यादा महान जीवन की राहें आपके सामने खुल जाएँगी।

इस पन्ने के बाद हम साथ-साथ जीवन की दौलत की ओर आगे बढ़ेंगे।

विषय सूची

1. असीमित ख़जाना

2. दौलत आपके चारों ओर है

3. ज्ञान ही दौलत है

4. ईश्वर के साथ साझेदारी करें

5. प्रार्थना करके अमीर कैसे बनें

6. दान का जादुई नियम

7. अमीर लोग ज़्यादा अमीर बनते हैं

8. मूर्त दौलत कैसे उत्पन्न करें

9. सारा व्यवसाय ईश्वर का है

10. वृद्धि का नियम

11. कल्पना के चित्र और संपन्नता

12. ऊर्ध्वगामी और समृद्ध बनें

13. कृतज्ञ हृदय संपन्नता को आकर्षित करता है

14. आपके शब्दों की शक्ति द्वारा दौलत के चमत्कार

15. मौन की अद्भुत दौलत

अध्याय एक

असीमित ख़ज़ाना

बाइबल में कहा गया है, मैं यहाँ इसलिए आया हूँ ताकि लोगों को जीवन मिल सके और वे इसे ज़्यादा संपन्नता के साथ जी सकें। (जॉन 10: 10)

आप यहाँ भरा-पूरा और ख़ुशहाल जीवन जीने आए हैं। आप यहाँ ईश्वर को महिमामंडित करने और उसका चिर आनंद लेने के लिए आए हैं। सृष्टि की सारी आध्यात्मिक, मानसिक और भौतिक समृद्धि ईश्वर की देन है। इसीलिए हर प्रकार की समृद्धि अपने आप में अच्छी है तथा उसका अच्छा उपयोग किया जा सकता है।

ईश्वर ही सब कुछ देता है और सारे उपहार ईश्वर के दिए हुए हैं; मनुष्य तो सिर्फ़ लेता है। ईश्वर मनुष्य के हृदय में वास करता है। इसका अर्थ यह है कि असीमित दौलत का ख़जाना आपके भीतर तथा चारों ओर हमेशा मौजूद है। जब आप मस्तिष्क के नियम सीख लेते हैं तो इसके बाद आप अपने भीतर के असीमित भंडार से अपनी ज़रूरत की हर वह चीज़ निकाल सकते हैं, जिससे आपको भव्य, ख़ुशहाल और समृद्ध जीवन जीने में मदद मिले।

समृद्ध बनने का आपका अधिकार

आप समृद्ध बनने के लिए जन्मे हैं। आप ईश्वर की दी हुई क्षमताओं का उपयोग करके और असीम के साथ सामंजस्य में आकर समृद्ध बनते हैं। जब आपका मस्तिष्क सृजनात्मक और अच्छे विचारों से भरपूर हो जाता है, तो आपका श्रम भी अधिक सार्थक होता है और आपको सभी प्रकार की भौतिक समृद्धि दिलाता है।

हृदय में ईश्वर के साथ एकरूप होने की भावना से ही आप अमीर बनते हैं। आप अपने मानसिक नज़रिए और आस्था के अनुरूप ही सभी अच्छी चीज़ो में अमीर होते हैं। असीमित ख़ज़ाने की सारी दौलत - भीतर की भी और बाहर की भी - आपकी है और आप उसका आनंद ले सकते हैं।

ग़रीबी में एक भी सद्‌गुण नहीं होता। वास्तव में यह एक मानसिक रोग है और पृथ्वी से इसका समूल नाश कर देना चाहिए। आप जीवन में अपनी सच्ची जगह खोजने के लिए यहाँ आए हैं। आप संसार को अपनी प्रतिभा से लाभान्वित करने के लिए यहाँ आए हैं। आप ईश्वर प्रदत्त क्षमताओं को एक अद्‌भुत अंदाज़ में प्रकट करने और विस्तार करने के लिए यहाँ आए हैं। आप आध्यात्मिक, मानसिक और भौतिक दौलत को उजागर करने के लिए यहाँ आए हैं, ताकि मानव जाति को अनगिनत तरीक़ों से लाभ हो। ख़ुद को सौंदर्य और विलासिता की वस्तुओं से घेर लेने का उपाय सीखें। यह अहसास करें कि

जीवन, स्वतंत्रता और मानसिक शांति आपका अखंड अधिकार है।

ईश्वर की असीमित शक्ति, सौंदर्य और समृद्धि को प्रकट करना, मंचित करना, चित्रित करना तथा व्यक्त करना आपका दैवीय अधिकार है।

समृद्ध बनने का विज्ञान

सृष्टि नियमों के अनुसार चलती है। ऐसे कुछ निश्चित नियम और सिद्धांत हैं, जो हमारे सारे अनुभवों, परिस्थितियों और जीवन में होने वाली घटनाओं को नियंत्रित करते हैं। हर चीज़ के मूल में कारण और परिणाम का निश्चित नियम है। समृद्ध बनने का विज्ञान आस्था के नियम पर आधारित है। यदि आप विश्वास कर सकते हैं, तो विश्वासी के लिए सारी चीज़ें संभव हैं (मार्क 9:23)। जीवन का नियम वास्तव में विश्वास का नियम है। विश्वास करने का अर्थ है किसी चीज़ को सच मानना। संपन्न जीवन, ख़ुशहाल जीवन, सफल जीवन में विश्वास करें। जब आप सर्वश्रेष्ठ की सुखद आशा करेंगे, तो आपकी ओर हमेशा सर्वश्रेष्ठ ही आकर्षित होगा। मनुष्य का विश्वास ही दौलत या ग़रीबी सफलता या असफलता और स्वास्थ्य या रोग पैदा करता है। सृष्टि का अकाट्य नियम है कि विचार हमेशा अपने समान फल प्रदान करते हैं, इसलिए जो व्यक्ति साहस के साथ असीमित ख़ज़ाने की दौलत पर दावा करता है, उसे यह अवश्य मिलेगी।

आप समृद्ध बनने के लिए पैदा हुए थे

आप संपूर्ण, ख़ुशहाल और सफल जीवन जीने के लिए आवश्यक सारे साज़ोसामान के साथ पैदा हुए थे। आप विजय पाने, सभी बाधाओं के ऊपर उठने और अपने भीतर की सुंदरता तथा अलौकिक गौरव को दिखाने के लिए पैदा हुए थे। ईश्वर की सारी शक्तियाँ, गुण, विशेषताएँ और पहलू आपके भीतर मौजूद हैं। आपका जीवन ईश्वर का जीवन है और उसका जीवन अब आपका जीवन है। ईश्वर जो भी काम हाथ में लेता है, उसमें हमेशा सफल होता है, चाहे यह पेड़ के सृजन की बात हो या सृष्टि के। आप असीम, अनंत ईश्वर के साथ एकरूप हैं, इसलिए आप भी कभी असफल नहीं हो सकते।

आप इस संसार में सिर्फ़ रोज़ी-रोटी कमाने नहीं आए हैं। जीवन आपको उपहार में दिया गया है। आप अपनी छिपी हुई योग्यताओं व गुणों को अपने मन, शरीर और आत्मा द्वारा प्रकट करने के लिए यहाँ आए हैं। आप जीवन को अभिव्यक्त करने के लिए यहाँ आए हैं। स्वास्थ्य, समृद्धि, खुशी, शांति और जीवन में सच्चा स्थान पाने की आपकी इच्छाएँ वास्तव में असीम जीवन की आकांक्षाएँ, प्रेरणाएँ तथा संकेत हैं, जो आपके माध्यम से अभिव्यक्ति चाहती हैं। इसी समय यह कामना करें कि आप अपना अधिकतम विकास करेंगे!

दौलत की दिशा में एक व्यवसायी के तीन क़दम

बेवर्ली हिल्स के मेरे एक व्यवसायी मित्र ने अपने स्टोर में मुझसे कहा था, “मेरा भाई भी मेरे ही व्यवसाय में है। उसकी दुकान मेरी दुकान से सिर्फ़ तीन ब्लॉक ही दूर है,

लेकिन वह दौलत में खेल रहा है। हाल ही में उसने दो नए सेल्स क्लर्क भी रख लिए हैं। वहीं दूसरी ओर, मेरा तो गुज़ारा भी नहीं हो पा रहा है। इसका कारण संभवत: माहौल या सामान नहीं है; शायद मैं ख़ुद ही हूँ!"

मैंने टिप्पणी की कि समृद्ध बनने और जीवन में आगे बढ़ने का किसी निश्चित व्यवसाय या स्थान से कोई संबंध नहीं होता। दौलत तो इंसान के मस्तिष्क में होती है। कुछ बेहद प्रतिभाशाली लोग ग़रीब और कुंठित बने रहते हैं, जबकि दूसरे लोग बहुत कम योग्यता या शिक्षा के बावजूद अपने सबसे ऊँचे सपनों से भी ज़्यादा दौलतमंद बन जाते हैं। मैंने उसे दौलत हासिल करने के तीन अचूक क़दम बताए।

उसने इन तीन क़दमों का पालन किया, जिसके बाद उसने उल्लेखनीय प्रगति की।

पहला क़दम: कभी भी अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में कोई नकारात्मक बात न कहें जैसे "मैं अपना किराया नहीं चुका सकता," "मैं पूरा महीना नहीं खींच सकता," "कारोबार की हालत बड़ी ख़राब है" "मैं अपने बिलों का भुगतान नहीं कर सकता," आदि। जैसे ही कोई नकारात्मक विचार, "मैं..... .नहीं कर सकता" दिमाग में आए, उसके बजाय सकारात्मक अंदाज़ में कहें: "मैं अपने भीतर के असीमित भंडार के साथ एकरूप हूँ और मेरी सभी आवश्यकताएँ तुरंत पूरी होती हैं।" हो सकता है कि शुरुआत में आपको एक घंटे में पचास बार ऐसा करना पड़े, लेकिन लगन से जुटे रहें। कुछ समय बाद नकारात्मक विचार आपको सताना छोड़ देंगे।

दूसरा क़दम: असीमित दौलत के प्रति अपने मन को तैयार करने के लिए यह कहने की आदत डालें, "संकट के समय में मदद करने के लिए ईश्वर हमेशा मौजूद होता है," और "ईश्वर मेरे लिए त्वरित आपूर्ति का सतत स्रोत है; मुझे जितनी भी योजनाओं या विचारों की ज़रूरत होती है, उन्हें ईश्वर हर पल और हर स्थान पर मेरी ओर भेजता है।"

तीसरा कदम: हर रात सोते वक़्त इस महान सत्य को लोरी की तरह दोहराएँ: "मैं ईश्वर की नियामतों के लिए हमेशा कृतज्ञ हूँ, जो हमेशा सक्रिय हैं मौजूद हैं, अपरिवर्तनीय हैं और सर्वव्यापी हैं।"

इस व्यवसायी ने पूरी निष्ठा से इस आध्यात्मिक नुस्ख़े का पालन किया और इसके बाद दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करने लगा। उसने बाइबल का एक उद्धरण मढ़वाकर अपनी डेस्क पर रख लिया: बीहड़ और सुखी ज़मीन बाग़-बाग़ हो जाएगी; रेगिस्तान आनंद से भर जाएगा और गुलाब की तरह खिल उठेगा" (इसाइया 35: 1)

हाल ही में उसने मुझसे कहा "मेरा मस्तिष्क एक बीहड़ रेगिस्तान था। अज्ञान, डर आत्म-आलोचना और अयोग्यता के अहसास के खरपतवार के सिवा वहाँ कुछ नहीं उग रहा था। अब मैं विजय, उपलब्धि और समृद्धि की राह पर हूँ।"

अवसरों की प्रचुरता

आज आप अंतरिक्ष युग में हैं। आज आप सुपरजेट्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, अंतरिक्ष यात्रा तथा विज्ञान, कला चिकित्सा और उद्योग-धंधों के क्षेत्रों में असंख्य नवाचारों और खोजों के

युग में हैं। मिसाल के तौर पर, कंप्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र अब भी अपने शैशव काल में हैं तथा उनमें अनंत उद्यमी संभावनाएँ मौजूद हैं। विमान यात्रा - दूसरे ग्रहों तक भी - निस्संदेह एक वृहद उद्योग में बदल रही है और लाखों, संभवत: संसार भर के करोड़ों, लोगों को रोज़गार दे रही है।

उन स्त्री-पुरुषों के लिए अवसरों की भरमार है, जो जीवन-प्रवाह के साथ बहते हैं और उसके ख़िलाफ़ तैरने की कोशिश नहीं करते हैं। अमीरी का नियम आपके लिए भी वही है, जो कि दूसरों के लिए है।

ऐसा कहा गया है कि हर साल उष्णकटिबंधीय वनों में जितने फल ज़मीन पर गिरकर सड़ जाते हैं, वे पूरे संसार का पेट भरने के लिए काफ़ी हैं। प्रकृति उदार है, आवश्यकता से बहुत अधिक देती है और प्रचुरता से भरी हुई है। मनुष्य को कमी और अभाव सिर्फ़ इसलिए होता है, क्योंकि वह प्रकृति के उदार उपहारों का अनुचित वितरण और दुरुपयोग करता है। अमेरिका में मौजूद इमारत बनाने की सामग्री पर नज़र डालें। यहाँ इतनी सारी लकड़ी, पत्थर, सीमेंट, लोहा, स्टील और अन्य सामान हैं, जिनसे अमेरिका के हर व्यक्ति के लिए एक महल खड़ा हो सकता है। यहाँ कपड़े बनाने की इतनी सामग्री है कि सारी महिलाओं के लिए महारानी जैसी और सारे पुरुषों के लिए महाराजा जैसी पोशाकें बनाई जा सकती हैं!

सही नज़रिए से देखें, तो इतनी ज़्यादा आपूर्ति है कि इसका भंडार कभी खाली नहीं हो सकता। आप जानते हैं कि असीम स्रोत कभी ख़त्म नहीं हो सकता। यह वह झरना है, जो कभी नहीं सूख सकता। इस सृष्टि की सारी चीज़ें एक ही सर्वव्यापी, प्राचीन तत्व से बनी हैं। ताँबे, सीसे, सोने, चाँदी, लकड़ी, पत्थरों और आपकी कलाई घड़ी के बीच एकमात्र अंतर उन इलेक्ट्रॉन्स की संख्या और गति है, जो एक न्यूक्लियस के चारों ओर घूम रहे हैं। पूरा संसार और इसकी सारी चीज़ें इसी सर्वव्यापी प्राचीन तत्व से बनी हुई हैं।

आपके भीतर विचारों का जो असीम भंडार है, वह कभी ख़त्म नहीं हो सकता। यदि मनुष्यों को ज़्यादा सोने-चाँदी की ज़रूरत है, तो वे पहले से मौजूद तत्वों से प्रयोगशाला में बनाए जा सकते हैं। असीम बुद्धि आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप प्रतिक्रिया करती है और इसका स्थायी स्वभाव यह है कि यह स्वयं का विस्तार करती है और आपके ज़रिए पूर्ण अभिव्यक्ति पाती है।

उसे दौलत अपने भीतर मिली

एक महिला हर सुबह मेरा रेडियो कार्यक्रम सुनती है। उसने मुझे पत्र में बताया, “बिलों का ढेर बढ़ता जा रहा है। मेरे तीन बच्चे हैं और मेरे पास बिलकुल भी पैसा नहीं है। मैं क्या करूँ?”

मैंने सुझाव दिया कि वह निश्चिंत रहे और अपनी आवश्यकताओं को एक छोटे वाक्यांश में व्यक्त करें: “ईश्वर इसी क्षण मेरी सभी आवश्यकताएँ पूरी करता है।”

उसके लिए इन शब्दों का अर्थ था उसकी सारी इच्छाएँ पूरी होना, जैसे बिलों का

भुगतान, एक नया पद, एक मकान, एक पति, बच्चों के लिए भोजन और वस्त्र तथा बहुत सारा पैसा।

उसने लोरी की तरह यह वाक्य बार-बार दोहराया। जब भी वह यह सकारात्मक टिप्पणी करती थी, "ईश्वर इसी समय मेरी सभी आवश्यकताएँ पूरी करता है" तो हर बार उसके मन में निश्चिंतता और गर्मजोशी की एक भावना आ जाती थी और अंतत: वह विश्वास के बिंदु पर पहुँच गई और इसकी वास्तविकता को महसूस करने लगी।

कुछ ही समय में उस महिला को आश्चर्यजनक परिणाम मिले! जिस बहन से वह पंद्रह साल से नहीं मिली थी, वह ऑस्ट्रेलिया से उससे मिलने आई और अन्य उपहारों के अलावा उसे 5,000 डॉलर नक़द भी दे गई। फिर वह एक डॉक्टर की सेक्रेटरी बन गई और एक माह के भीतर ही उन दोनों की शादी हो गई। आज वह बेहद ख़ुश है। असीमित प्रज्ञा के तरीक़े सचमुच अबूझ होते हैं! इस महिला को वाक़ई अपने भीतर दौलत का ख़ज़ाना मिल गया।

ग़रीबी एक रोग है

ग़रीबी का अर्थ है आराम, सुख, संतुलन और चैन का अभाव। अपने चारों ओर नज़र डालें। आपको जीवन के सभी क्षेत्रों और सभी प्रकार के व्यवसायों तथा पेशों में ऐसे लोग मिलेंगे, जो अमीर बन रहे हैं और जीवन में अपने लक्ष्य हासिल कर रहे हैं, जबकि बाक़ी लोग उनके आस-पास रह रहे हैं, वही काम कर रहे हैं, उसी पेशे में हैं, लेकिन इसके बावजूद ग़रीब हैं ख़राब कपड़े पहन रहे हैं और सस्ता, घटिया भोजन कर रहे हैं।

यदि आपको कोई शारीरिक रोग है, तो आपको समस्या को तत्काल सही करने के लिए डॉक्टर के पास जाकर अपनी शारीरिक जाँच करानी चाहिए। चाहे आप कितने ही ग़रीब दिखते हों, यदि आप दौलत, उन्नति, विस्तार और प्रगति के बारे में सोचने की आदत डाल लें, तो आपको अपने अवचेतन मन से स्वत: ही एक उपचारक प्रतिक्रिया मिलेगी, जिससे आपकी ख़ुशक़िस्मती असंख्य तरीक़ों से कई गुना बढ़ जाएगी।

हो सकता है कि आप कर्ज़ में हों और आपके पास पैसा, प्रभाव या मूर्त संपत्ति न हो, लेकिन यदि आप यह दावा करने लगें, "ईश्वर की दौलत मेरे जीवन में प्रवाहित हो रही है और दैवी संपन्नता हमेशा मौजूद है," तो आपके जीवन में जल्द ही चमत्कार होने लगेंगे!

"यह एक चमत्कार था।"

जब मैं इस पुस्तक का यह अध्याय लिख रहा था, तो एक बुजुर्ग महिला ने मुझे फ़ोन करके कहा "यह एक चमत्कार था!" उसे और उसके पति को बहुत कम पेंशन मिलती थी, जिसमें वे बमुश्किल ख़र्च चला पाते थे। मैंने उसे एक ख़ास प्रार्थना करने को दी थी, जो इस प्रकार थी: "ईश्वर की दौलत मेरे जीवन में प्रवाहित हो रही है। उसकी दौलत संपन्नता के सैलाब में मेरी ओर प्रवाहित होती है और मैं इस सारी दौलत तथा अपनी भलाई के लिए ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ।"

उसने दिन में कई बार पूरी चेतना और भावना से यह प्रार्थना दोहराई। लगभग दो सप्ताह बाद एक आदमी ने उसका दरवाजा खटखटाया (उस महिला ने कहा कि वह तो “आसमान से टपका था”) और उससे रेगिस्तान के बीच स्थिति उस प्लॉट के बारे में पूछताछ की, जिसकी वह मालिक थी। वहाँ पर न तो कोई घर था, न ही पानी - सिर्फ़ कँटीली झाड़ियाँ और कैक्टस थे। वह कई सालों से उस प्लॉट को बेचने की कोशिश कर रही थी, लेकिन कोई उसे देखने को भी तैयार नहीं था। उस आदमी ने कहा, “हमारी कंपनी पास में ही निर्माण कार्य करने के लिए बिजली लगाना चाहती है, इसलिए हम आपका प्लॉट ख़रीदना चाहते हैं।”

जिस प्लॉट को वह मूल्यहीन समझ रही थी उसके बदले उसे 10,000 डॉलर मिल गए। यह कोई चमत्कार नहीं था: यह तो उसके आग्रह पर उसके अवचेतन मन की प्रतिक्रिया थी। इसके असंख्य तरीक़े सचमुच अबूझ होते हैं।

आप पूँजी पा सकते हैं

विचार ही वह एकमात्र अमूर्त और अदृश्य शक्ति है, जिसे आप जानते-बूझते हैं। आप जो भी सोचते हैं, वही आपके जीवन में साकार होता है, जब तक कि आप विपरीत विचार सोचकर उसे निष्क्रिय न कर दें। आपका विचार निश्चित रूप से आपके अवचेतन मन द्वारा धन-दौलत उत्पन्न कर सकता है।

आपका अवचेतन मन आपके विचारों के अनुरूप ही कार्य करता है। यदि आप “ग़रीबी” के बारे में सोचते हैं, तो आप ग़रीब बनेंगे - चाहे आप इस वक़्त कितने ही अमीर क्यों न हों। यदि आप दौलत - आध्यात्मिक, मानसिक और भौतिक - के बारे में सोचने की आदत डाल लेते हैं, तो साहचर्य के नियम के अनुसार आप अमीर बन जाएँगे। दूसरे शब्दों में, जब आप यह सोचते हैं,” अब दौलत मेरी है,” और इस विचार के प्रति आस्थावान रहते हैं तो आपका अवचेतन मन प्रतिक्रिया करेगा और आपके विचार की प्रकृति के अनुसार ही दौलत प्रदान करेगा।

सभी आविष्कार - भवन, शहर और सभी तरह के उपकरण, जिनमें सभी मानव-निर्मित तथा प्राकृतिक रूप व प्रक्रियाएँ शामिल हैं - आपके भीतर के इसी अदृश्य भंडार से उत्पन्न हुए हैं। जब आप अपनी कुर्सी से हिलने के बारे में सोचते हैं, उसके बाद ही आप हिलते हैं। किसी वैज्ञानिक ने आपके घर में ध्वनियाँ और दृश्य दिखाने के बारे में सोचा; फलस्वरूप टेलीविज़न का आविष्कार हुआ। इलेक्ट्रॉनिक तरंगें आकार, आवाज़, संगीत आदि में रूपांतरित हो गईं। आप वाक़ई “विचार जगत” में रहते हैं।

असीम उपस्थिति ने संसार के बारे में सोचा और सर्वव्यापी मस्तिष्क उसी विचार के अनुसार सक्रिय हो गया। इसने एक भौतिक, गतिशील ब्रह्मांड का रूप ले लिया। साथ ही तारों, सूर्य, चंद्रमा व अंतरिक्ष की अंतहीन आकाशगंगाओं का तंत्र भी अस्तित्व में आ गया। यह सब एक असीम विचारक का सृजन है, जो एक सुव्यवस्थित, गणितीय अंदाज़ में पूरी सटीकता के साथ विचार कर रहा था।

कवि जॉयस किल्मर ने कहा था, “केवल ईश्वर ही वृक्ष बना सकता है।” चाहे यह बलूत हो या सेव, वृक्ष का सृजन करते समय असीम विचारक वृक्षों के बारे में सोचता है

और सर्वव्यापी मस्तिष्क सभी वृक्षों की प्रकृति के अनुसार उन्हें साकार करने की शक्तियों को सक्रिय कर देता है। ध्यान रहे, वृक्षों की प्रकृति विकास के सिद्धांत द्वारा निधारित है, जो पूरी सृष्टि में निहित है।

आकर्षण का महान नियम

कुछ महीनों पहले एक आदमी ने मुझे इंजीनियरिंग का एक बड़ा आविष्कार दिखाते हुए कहा, “इसके प्रचार-प्रसार के लिए मुझे पैसों की ज़रूरत है - ढेर सारे पैसों की।”

मैंने उसे बताया कि आकर्षण का एक नियम होता है। यही नियम उसका सपना साकार करने के लिए ज़रूरी हर चीज़ देगा। मैंने सुझाव दिया कि वह मानसिक रूप से यह दावा करने की आदत डाले: “मेरे अवचेतन मन की असीमित प्रज्ञा उस आदर्श कंपनी को आकर्षित करती है, जो इस आविष्कार का उत्पादन करेगी, इसका प्रचार करेगी और इसे बेचेगी। इससे जुड़े सभी लोगों को आपसी संतुष्टि, सामंजस्य और दैवी अनुबंध का वरदान प्राप्त होगा।” यह कथन उसकी स्थायी प्रार्थना बन गया।

उसका अवचेतन काम में जुट गया। कुछ ही समय बाद उसे लॉस एंजेलिस के विलशायर ईबेल थियेटर में एक प्रतिष्ठित व्यवसायी मिल गया, जहाँ मैं व्याख्यान दे रहा था। इस व्यवसायी ने उस आविष्कार को प्रायोजित किया और आविष्कार से अधिकतम लाभ उठाने के लिए सही पक्षों से संपर्क तथा अनुबंध किया। उसने मुझे हाल ही में बताया कि यह एक क्रांतिकारी और अद्‌भुत प्रॉडक्ट है, जिसमें लाभ की असीम संभावना है।

यह आकर्षण के नियम को स्पष्ट करता है। जिस प्रकार किसी बीज में मौजूद बुद्धिमत्ता अपने विकास के लिए आवश्यक हर चीज़ को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है, उसी प्रकार मनुष्य भी सोचकर दौलत एकत्रित करने के आदर्शों, लक्ष्यों और उद्‌देश्यों को पाने के लिए आवश्यक बुद्धिमत्ता तथा नए विचार उत्पन्न कर सकता है।

याद रखें, सभी मानव-निर्मित आकार, प्रक्रियाएँ और वस्तुएँ सबसे पहले मनुष्य के विचार जीवन में बनती हैं। मनुष्य किसी चीज़ को तब तक ढाल नहीं सकता, बना नहीं सकता या आकार नहीं दे सकता, जब तक कि वह उसके बारे में सोच न ले। यह अकाट्य सत्य है: विचार ही विश्व पर शासन करता है।

सोचे और दौलत हासिल करें

1. मस्तिष्क के नियमों का इस्तेमाल करें और अपने भीतर के असीमित भंडार से हर वह चीज़ निकालें, जिसकी ज़रूरत आपको एक भव्य, यशस्वी और सफल जीवन जीने के लिए है।
2. आप समृद्ध बनने के लिए पैदा हुए हैं और एक भरा-पूरा व ख़ुशहाल जीवन जीने के लिए यहाँ आए हैं। ईश्वर चाहता है कि आप ख़ुश रहें।
3. हर चीज़ में कारण और परिणाम का एक निश्चित नियम काम करता है। ईश्वर की

धन-संपदा पर विश्वास करेंगे, तो वह आपको अवश्य मिलेगी। जैसा आपका विश्वास होता है, वैसा ही आपको मिलता है।

4. ईश्वर जो भी करता है, उसमें हमेशा सफल होता है। आप ईश्वर के साथ एकरूप हैं, इसलिए आप असफल नहीं हो सकते। आप जीतने के लिए जन्मे हैं।

5. सारी संपत्ति मस्तिष्क में रहती है। आपका मानसिक नज़रिया ही अमीरी या ग़रीबी को तय करता है। दौलत के बारे में सोचेंगे, तो दौलत मिलेगी। ग़रीबी के बारे में सोचेंगे, तो ग़रीबी मिलेगी।

6. आपके सामने प्रचुर अवसर मौजूद हैं। जीवन के प्रवाह के साथ बहें और बहाव के ख़िलाफ़ तैरना छोड़ दें। आप अपने अवचेतन मन से असंख्य विचार बाहर निकाल सकते हैं; हो सकता है कि आपके दिमाग़ में आने वाले किसी नए विचार का मूल्य 50,000 डॉलर हो।

7. अपने भीतर के असीम भंडार से संपर्क करने का शानदार तरीक़ा यह कहने की आदत डालना है: "ईश्वर तुरंत मेरी सभी आवश्यकताएँ पूरी कर देता है।" जब आप इस तरह से प्रार्थना करते हैं, तो चमत्कार हो जाता है।

8. ग़रीबी एक मानसिक रोग है। साहस के साथ दावा करें, "मेरे जीवन में ईश्वर की दौलत प्रवाहित हो रही है और यहाँ दैवी समृद्धि हमेशा मौजूद रहती है।"

9. आपका अवचेतन मन, जो दौलत का ख़जाना है, आपके अच्छे विचारों पर ऐसे-ऐसे तरीक़ों से प्रतिक्रिया करता है, जिनके बारे में आपको पता भी नहीं होता।

10. विचार ही वह एकमात्र अमूर्त और अदृश्य शक्ति है, जो इंसान के पास होती है। आपका विचार निश्चित रूप से धन-दौलत उत्पन्न कर सकता है।

11. आकर्षण का नियम आपकी ज़रूरत की हर चीज़ को आपकी ओर आकर्षित करता है। यह सब आपके विचारों की प्रकृति के अनुसार होता है। आपका परिवेश और आर्थिक स्थिति आपके स्थायी सोच का ही प्रतिबिंब हैं। विचार ही विश्व पर शासन करता है।

अध्याय दो

दौलत आपके चारों ओर है

बाइबल में कहा गया है: ... पृथ्वी ईश्वर की अच्छाई से भरी हुई है (साल्म 33:5)। आपके चारों ओर दौलत है, तो बस इसलिए क्योंकि अदृश्य दैवीय शक्ति हर जगह मौजूद है।

यह हमारे चारों ओर की हवा जैसी है: इसकी कोई कमी नहीं है। हर मनुष्य जितनी साँस लेना चाहे, ले सकघृणा है, लेकिन इसके बावजूद अंतहीन हवा बाक़ी रहती है। आप इस दैवीय उपस्थिति की तुलना समुद्र से कर सकते हैं। आप चाहें तो समुद्र से एक बाल्टी पानी निकालें या फिर एक बोतल ही निकालें। समुद्र को इस बात की परवाह नहीं है कि आप कितना पानी निकाल रहे हैं। इसके बाद भी समुद्र में अथाह पानी बचा रहघृणा है।

यह दैवीय उपस्थिति ही असीमित जीवन है। इससे पृथक कोई जीवन नहीं है। यही उपस्थिति असीमित तत्व भी है, जिस प्रकार कि आपके विचार और भावनाएँ उसके पीछे का तत्व हैं, जो आप हैं, जो आपके पास है और जो आप करते हैं।

जब आप इस दैवीय उपस्थिति के साथ चेतन रूप से “एकरूप” हो जाते हैं, तो आप वंचना या अभाव के सभी तरह के अहसास से उबर जाते हैं, क्योंकि यह उपस्थिति जीवन से भरपूर है। यही वह जीवंत झरना है, जिससे सारे वरदान प्रवाहित होते हैं और हर वस्तु की आपूर्ति होती है।

जो व्यक्ति असीमित के साथ एकरूप हो जाघृणा है और बड़ा सोचघृणा है, उसके लिए समृद्धि और अवसर प्रचुरघृणा में मौजूद हैं। असीमित प्रज्ञा उसके निर्देशों पर प्रतिक्रिया करेगी और सारी अच्छी वस्तुएँ उसके आस-पास ही प्रकट हो जाएँगी।

परम पिघृणा ने अपनी ख़ुशी से आपको स्वास्थ्य, प्रसन्नघृणा, शांति, आनंद और भौतिक वस्तुओं की संपन्नघृणा का साम्राज्य दिया है।

सब कुछ पर्याप्त है

स्पष्टघृणा के साथ अहसास करें कि आपके भीतर असीमित सृजनात्मक शक्ति है। आप इस शक्ति के जरिए मनचाहा सृजन कर सकते हैं। आप इसका कितना आनंद लेते हैं और कितना अनुभव करते हैं, उसकी कोई सीमा नहीं है। आप सारी चीज़ें असीमित स्रोत से ले रहे हैं, इसलिए आपको कभी चिंघृणा करने की ज़रूरत नहीं है कि कहीं आप अपने हिस्से से ज़्यादा तो नहीं ले रहे हैं। ध्यान रखें, असीमित भंडार कभी ख़त्म नहीं होता। यह अनंत है। यह कल, आज और हमेशा उतना ही रहघृणा है।

मनुष्य की बहुत बड़ी मूर्खघृणा यह है कि वह यही नहीं पहचान पाघृणा कि उसके भीतर कितनी सच्ची दौलत छिपी है और वह अपने मस्तिष्क की सृजनात्मक शक्ति के बजाय बाहरी वस्तुओं, संपत्तियों और परिस्थितियों को सच्ची दौलत मानने लगघृणा है।

याद रखें, आपको असीमित भंडार से कितना ग्रहण करना है, इसकी कोई सीमा नहीं है। आपकी वास्तविक दौलत यह पहचानने में निहित है कि प्रचुर धन-संपत्ति का स्रोत आपके भीतर ही है। प्रचुर संपत्ति के बारे में सोचें, यानी बड़ा सोचें। इस बारे में खुले दिल और खुले मन से सोचें। इसके बाद आप देखेंगे कि सभी दिशाओं से अच्छी चीज़ें आपकी ओर आ रही हैं, जैसे धन-दौलत और अमीरी की सूचक असंख्य अन्य चीज़ें।

सर्वशक्तिमान आपके भीतर ही है, इसलिए आपके पास प्रचुर शक्ति है। आपके पास अपार शांति, असीम आनंद और पूर्ण सद्भाव पाने की क्षमघृणा है। हर व्यक्ति अपने मन में सफलघृणा, विस्तार सुधार, प्रगति और रचनात्मकघृणा के असंख्य विचार ला सकघृणा है। इसके लिए तो आपको बस अपने भीतर निहित ईश्वर की असीमित संपदा से जुड़ना भर है। “सारी चीज़ें तैयार होती हैं, बशर्ते मनुष्य का मन तैयार हो।”

उसने अपने दिमाग़ में दौलत का बीज कैसे बोया

मेरे सामने एक व्यवसायी का पत्र है। इसमें उसने लिखा है कि बचपन से ही उसके दिमाग़ में यह धारणा ठूँस दी गई थी कि ग़रीबी एक सद्गुण है। वह जानघृणा था कि उसके अवचेतन की यह ग़लत धारणा उसके निजी सुख और व्यावसायिक प्रगति में बाधक थी। बहरहाल, रविवार सुबह मेरे भाषणों की श्रृँखला सुनने के बाद उसने हर दिन यह कथन दोहराया:

“ईश्वर की बुद्धिमत्ता, शक्ति और सृजनात्मक ऊर्जाएँ मुझमें उसी तरह अभिव्यक्त होती हैं, जिस तरह किसी पेड़ की शाखा पेड़ के ही जीवन का विस्तार होती हैं। मैं ईश्वर की संघृणान हूँ और मुझे ईश्वर की संपत्ति का सारा अधिकार, उपभोग और वरदान विरासत में मिले हैं। मैं अपना मस्तिष्क ईश्वर पर केंद्रित करघृणा हूँ और इस अदृश्य उपस्थिति के साथ एकरूप होने की अनुभूति करघृणा हूँ। मैं असीमित तत्व और असीम आपूर्ति में विश्वास करघृणा हूँ। मैं इसी क्षण में विश्वास करघृणा हूँ तथा मानसिक रूप से स्वीकार करघृणा हूँ कि ईश्वर मुझ पर अपनी दौलत की बारिश कर रहा है और मेरे जीवन में आनंद, प्रेरणा नियामतें व संपत्ति ला रहा है। मैं अपने पिघृणा के साथ एकरूप हूँ। उनकी रचनात्मक शक्ति मेरी है। उनकी बुद्धिमत्ता, शक्ति, प्रज्ञा और समझ मेरी भी बुद्धिमत्ता, शक्ति, प्रज्ञा और समझ है। असीमित प्रज्ञा हर संभव तरीक़े से मेरा मार्गदर्शन करती है और मेरी संपत्ति, सफलघृणा तथा नेकी उसी की अभिव्यक्ति है। मैं दैवीय दौलत के प्रति अपना दिलोदिमाग़ खोलघृणा हूँ। ईश्वर और मनुष्य एक हैं। मेरे पिघृणा और मैं एक हैं।”

ऊपर दी गई प्रार्थना बहुत सुंदर है और कारगर भी। यह आदमी हर दिन अपने ऑफ़िस में सच्चाई से भरे ये कथन तीन-चार बार दोहराघृणा रहा। परिणाम यह हुआ कि उसने तीन और स्टोर्स खोल लिए तथा इस व्यवसाय को सँभालने के लिए पच्चीस नए कर्मचारियों को नौकरी पर रख लिया।

यह तथाकथित चमत्कार सिर्फ़ इसलिए हुआ, क्योकि उसने अपने दिमाग़ की दिशा बदल ली और समृद्धि की भावना विकसित कर ली।

उसकी आर्थिक समस्या का कारण और समाधान

मेरे पड़ोस में रहने वाला लगभग सोलह साल का एक लड़का मुझसे मिलने आया। उसने शिकायत की कि उसके पिघृणा उसे कॉलेज पढ़ने नहीं भेज रहे हैं और उसका इंजीनियर बनने का ख़्वाब कभी पूरा नहीं हो पाएगा। उसके पिघृणा लगाघृणार यही कह रहे थे, "हमारे पास तुम्हारे कॉलेज की पढ़ाई के पैसे नहीं हैं। हम अपने घर की क़िस्त ही नहीं चुका पा रहे हैं, न ही निश्चित समय पर बैंक का कर्ज़ अदा कर पा रहे हैं। हमारी आमदनी में महीने का ख़र्च ही कभी पूरा नहीं हो पाघृणा है। इसलिए कॉलेज जाने के बारे में भूल जाओ!"

आप इस पिघृणा के आर्थिक अभाव का कारण देख सकते हैं। उसका ध्यान हर वक़्त अभाव, सीमा और सभी प्रकार की आर्थिक बंदिशों पर केंद्रित था। ज़ाहिर है, उसका अवचेतन मन उसके स्थायी विचारों की प्रकृति के अनुसार ही स्वाभाविक प्रतिक्रिया कर रहा था। अमीरी के बारे में सोचेंगे, तो अमीर बनेंगे। ग़रीबी के बारे में सोचेंगे, तो ग़रीब बनेंगे।

उसके विपरीत नज़रिए ने चमत्कार कर दिया

मैंने उस लड़के के पिघृणा को समझाया कि उसे तो सिर्फ़ अमीर होने की भावना विकसित करनी है और लगाघृणार कल्पना करनी है कि उसके पास हर प्रकार की दौलत है। बात उसकी समझ में आ गई और सोने से पहले हर रात को उसने यह काल्पनिक तस्वीर देखी कि उसे अपने बेटे का एक पत्र मिला है, जिसमें उसने लिखा है कि वह कॉलेज में आकर कितना ख़ुश है। उस पत्र में उसने अपने पिघृणा को उन सभी चीज़ों के लिए धन्यवाद भी दिया, जो उन्होंने उसके लिए की थीं। यही नहीं उस पिघृणा ने मन ही मन प्रबल भावना के साथ दावा किया: "ईश्वर मेरे लिए आपूर्ति का शाश्वत स्रोत है और हर पल मेरी सभी आवश्यकघृणाएँ पूरी कर रहा है।"

दिन में जब भी उसके मन में नकारात्मक विचार उठते थे, जैसे "मेरे पास पैसों की कमी है। क्या पघृणा मैं अपने बिलों का भुगघृणान कैसे कर पाऊँगा? मैं कंगाल हूँ," आदि, तो वह कभी भी अपने दिमाग़ में इस वाक्य को पूरा नहीं होने देघृणा था। नकारात्मकघृणा को ख़ारिज करने के लिए वह तुरंत ही यह संकल्प ले लेघृणा था: "ईश्वर मेरे लिए आपूर्ति का शाश्वत स्रोत है और हर पल मेरी सभी आवश्यकघृणाएँ पूरी कर रहा है।" शुरुआत में तो उसे एक घंटे में तीस-चालीस बार ऐसा करना पड़घृणा था, लेकिन कुछ दिनों बाद पुराने नकारात्मक विचारों का आना तथा उनकी शक्ति ख़त्म हो गई और उन्होंने उसे सताना छोड़ दिया।

कुछ समय बाद ही एक चमत्कार हुआ। उसकी लॉटरी लग गई और उसे बहुत सारा पैसा मिल गया। इससे उसने अपने सारे कर्ज़ पटा दिए तथा अपनी मानसिक शक्ति में

उसका विश्वास और बढ़ गया। अब वह जान गया था कि उसका मस्तिष्क हर समय, हर जगह उसकी सभी आवश्यकघृणाएँ पूरी कर सकघृणा है।

आज उसका बेटा अपनी मनचाही युनिवर्सिटी में पढ़घृणा है और सच्ची दौलत की खोज को लेकर दिल से कृतज्ञ है। एक बात तो तय है कि जब भी आर्थिक समस्याएँ और आपातकालीन स्थितियाँ सामने आएँगी, तो ये पिघृणा-पुत्र डर और चिंघृणा के मारे कभी थर- थर नहीं काँपेंगे।

बिलों के भुगघृणान का जादुई फ़ॉर्मूला

लंदन के एक फ़ार्मासिस्ट ने कुछ साल पहले मेरे व्याख्यान सुने थे। उसने मुझे बघृणाया कि उसने बहुत कम पूँजी से अपनी केमिस्ट शॉप खोली थी। उसने अपने ससुर से पैसे उधार लिए थे और वे पैसा वापस करने के लिए उस पर लगाघृणार दबाव डाल रहे थे। बिलों का भुगघृणान नहीं हो पा रहा था और उसकी आर्थिक स्थिति बहुत ख़राब थी।

बहरहाल, कुछ साल पहले लंदन के कैक्स्टन हॉल में मेरे एक व्याख्यान में उसने यह कथन सुना: “जब भी आपको किसी चीज़ का बिल मिले, तो इस बात के लिए तत्काल धन्यवाद दें कि आपको बिल के जितनी ही धनराशि मिल गई है।” इस सैद्धांतिक विचार पर थोड़ा मनन करने के बाद उसने यह काम नियमित और सुनियोजित तरीक़े से ऐसा करना शुरू किया। देखिए, मस्तिष्क जिस भी चीज़ पर ध्यान केंद्रित करघृणा है, वह बहुत ज़्यादा बढ़ती और फैलती है, इसलिए उसका व्यवसाय भी बढ़ने लगा: उसके इलाक़े के तीन डॉक्टर अपने सारे पर्चे उसकी फ़ार्मेसी में भेजने लगे। मुझे यह कहते हुए ख़ुशी हो रही है कि आज वह लंदन शहर में तीन बहुत सफल फ़ार्मेसयों का मालिक बन चुका है।

बिल में दी गई धनराशि पाने का विचार-चित्र धीरे-धीरे उसके अवचेतन मन में समा गया। उसे समझ में आ गया कि धन का विचार-चित्र मनचाही चीज़ें गढ़ने का मूल तत्व और उन चीज़ों का प्रमाण है, जो नज़र नहीं आतीं। मैंने यह जादुई फ़ार्मूला कई व्यवसायियों को सिखाया है और उनमें से प्रत्येक को इससे लाभ हुआ और वह कृतज्ञ भी हुआ। जो भी चीज़ें आप प्रार्थना में आस्था के साथ माँगेंगे, वे सभी आपको मिल जाएँगी। (मैथ्यू 21:22)

आर्थिक समस्याओं का सामना कैसे करें

अमीर बनने की कला का पहला सिद्धांत यह महसूस करना है कि विचार ही एकमात्र अमूर्त शक्ति है, जो असीमित ख़ज़ाने से मूर्त दौलत उत्पन्न कर सकती है।

सृष्टि में आप जो भी देखते हैं- हर वह चीज़, आकार और प्रक्रिया जिसका सृजन हुआ है- वह असीमित प्रज्ञा के विचार की साकार अभिव्यक्ति है। जब असीमित प्रज्ञा गति के बारे में सोचती है, तो विचार गति का रूप ले लेघृणा है। जब असीमित प्रज्ञा किसी आकृति के बारे में सोचती है, तो विचार आकृति का रूप ले लेघृणा है। इसी तरीक़े से इस संसार की सारी चीज़ों का सृजन हुआ था। आप विचार जगत में रहते हैं, इसलिए अमीर

बनने तथा अपनी आर्थिक समस्याओं को सुलझाने के लिए आपको लगाघृणार दौलत, संपत्ति तथा सफलघृणा के विचार सोचने होंगे।

सागौन के वृक्ष को अस्तित्व में लाने के लिए असीमित प्रज्ञा को सागौन के वृक्ष के बारे में सोचना पड़ा और उस विचार से वह पेड़ उत्पन्न हो गया, हालाँकि हो सकघृणा है कि उसे पूर्णघृणा तक आने में कई सदियाँ लग गई हों। अब असीमित विचारक ने सागौन के वृक्ष के बारे में सोचा, तो इससे तत्काल बड़ा वृक्ष नहीं बन गया। इसने तो बीज में स्वत: सक्रिय बुद्धिमत्ता के ज़रिए वृक्ष उत्पन्न करने के लिए आवश्यक सभी शक्तियों को सक्रिय कर दिया।

इसी तरह, अगर आप सारी आर्थिक समस्याओं और ग़रीबी से जुड़ी शर्मिंदगी के समूचे अहसास से मुक्त होना चाहते हैं, तो आपको यह समझ लेना चाहिए कि आप एक चिंतक हैं और अपने विचारों, चित्रों योजनाओं तथा उद्देश्यों को साकार रूप दे सकते हैं। यही नहीं, यह भी जान लें कि आपके हाथों से बनी सारी चीज़ें, सारी इमारतें और हुए सारे आविष्कार पहले आपके दिमाग़ में विचार-चित्र के रूप में उत्पन्न हुए थे। दरअसल आप इस संसार में कोई चीज़ तब तक बना ही नहीं सकते, जब तक कि आप पहले अपने मन में उस चीज़ का विचार न कर लें।

यह पूरी तरह सच है, इसलिए अपने दिमाग़ में इस सत्य को बैठा लें: “मुझे ईश्वर और सभी अच्छी चीज़ों पर पूरा विश्वास है। मैं जानघृणा हूँ कि मैं किसी भी वक़्त किसी भी स्थिति का मुक़ाबला करने में सक्षम हूँ, क्योंकि ईश्वर मेरे लिए आपूर्ति का स्थायी स्रोत है और मुझे सारे आवश्यक विचार सही तरीक़े से तथा सही समय पर देघृणा है। ईश्वर की दौलत हमेशा मेरे जीवन में उन्मुक्तघृणा से प्रवाहित हो रही है और हमेशा दैवी संपन्नघृणा क़ायम रहती है। इन सत्यों को दोहराते समय मैं जानघृणा हूँ कि मेरा मस्तिष्क सतत प्रवाहित होने वाली उस दैवी आपूर्ति को पाने के लिए तैयार हो रहा है।”

जब आप ऊपर दिए गए सत्यों को दोहराते हैं और अपने हृदय में उनकी वास्तविकघृणा को महसूस करते हैं, तो आप दौलत का मनोभाव विकसित कर लेंगे। इसके बाद आपकी आर्थिक स्थिति संपन्न बनी रहेगी, भले ही शेयर बाज़ार कहीं भी जा रहा हो या अन्य परिस्थितियाँ चाहे जैसी हों। चाहे धन को शक्ति को कोई भी रूप लेने की ज़रूरत पड़ जाए, आपकी आपूर्ति में कभी कमी नहीं आएगी।

सालाना **5,000** से **50,000**डॉलर तक

एक सेल्समैन मेरे रविवार के व्याख्यान और मेरा दैनिक रेडियो कार्यक्रम भी सुनघृणा है। उसने कुछ साल पहले मुझसे पूछा “मैं 50,000 डॉलर सालाना कैसे कमा सकघृणा हूँ? मैं विवाहित हूँ और मेरे तीन बच्चे हैं। मेरा महीना बड़ी मुश्किल से चल पाघृणा है। ख़र्च चलाने के लिए मेरी पत्नी को भी नौकरी करनी पड़ती है!”

कई मामलों में परिस्थितियों का वर्णन या व्याख्या ही इलाज होती है। मैंने उसके सामने यह स्पष्ट किया कि मन में दौलत का विचार-चित्र या समृद्धि की मानसिकता ही मूल कारण है। यह दौलत का वास्तविक तत्व है, जिस पर अभाव, सीमा या पुरानी

नकारात्मक परिस्थितियों का कोई असर नहीं होता।

उसे विचार-चित्र से शुरुआत करनी थी। उसे अहसास हुआ कि यह हर प्रकार की अभिव्यक्ति की कार्यविधि है, चाहे यह सर्वव्यापी मस्तिष्क के स्तर पर हो या उसके व्यक्तिगत मस्तिष्क- जो सर्वव्यापी मस्तिष्क का एक हिस्सा है- के स्तर पर। वह सेल्समैन इस नतीजे पर पहुँचा कि उसे तो केवल अपना विचार-चित्र अपने अवचेतन मन तक पहुँचाना है और इसके फलस्वरूप उसका विचार साकार रूप में सामने आ जाएगा।

हमारी पहली बातचीत के बाद उसके साथ जो हुआ, वह उसने मुझे पत्र में लिखकर बघृणाया:

“प्रिय डॉ.मर्फ़ी, आपसे बातचीत के बाद तीन महीनों तक मैंने हर सुबह ख़ुद को दर्पण-चिकित्सा दी। मैं दाढ़ी बनाने के बाद अपने दर्पण के सामने खड़ा हो जाघृणा था और प्रबल भावना तथा पूरी चेतना के साथ ज़ोर से घोषणा करघृणा था: ‘जॉन, तुम बहुत कामयाब हो चुके हो। तुम हर साल 50,000 डॉलर कमा रहे हो। तुम ग़ज़ब के सेल्समैन हो।” मैं हर सुबह इसे दस-बारह मिनट तक दोहराघृणा था। मैं जानघृणा था कि इस तरह अंतत: मैं अपने अवचेतन मन में 50,000 डॉलर का समतुल्य विचार बना लूँगा और मनोवैज्ञानिक रूप से उस राशि का बीज बोने में सफल हो जाऊँगा। मेरे मन में लोगों के सामने भाषण देने का विचार आया। नतीजा यह हुआ कि लगभग दस सप्ताह पहले मैंने कंपनी की वार्षिक बिक्री बैठक में भाषण दिया। इसके बाद वाइस प्रेसिडेंट ने मुझे बधाई दी और मुझे तरक़्क़ी मिल गई। यही नहीं मुझे 10,000 डॉलर की सालाना तनख़्वाह के साथ ज़्यादा आमदनी वाला जिला भी मिल गया। पिछले साल कमीशन और तनख़्वाह को मिलाकर मुझे 50,000 डॉलर से अधिक आमदनी हुई। वाक़ई मस्तिष्क ही इस पृथ्वी की समूची दौलत और स्वर्ग की संपत्ति का स्रोत है।”

उसने कड़ी मेहनत की, लेकिन कहीं नहीं पहुँच पाया

एक बार एक जूनियर एक्ज़ीक्यूटिव से मेरी बातचीत हुई। उसने मुझे बघृणाया, “मैं बहुत कड़ी मेहनत करघृणा हूँ, कंपनी में देर तक काम करघृणा हूँ और हर रात को प्रार्थना करघृणा हूँ, ‘ईश्वर सारे तरीक़ों से मुझे दौलतमंद बना रहा है और मैं अपनी नियामत को इसी क्षण स्वीकार करघृणा हूँ।’ लेकिन इसके बावजूद मैं बिलकुल प्रगति नहीं कर पा रहा हूँ। पिछले पाँच वर्षों में न तो मेरी तनख़्वाह बढ़ी है, न ही प्रमोशन हुआ है।”

बहरहाल, उसने स्वीकार किया कि वह कंपनी में कार्यरत अपने पुराने सहपाठियों की सफलघृणा और प्रगति से जलघृणा था। उसके कॉलेज के पुराने मित्र सफलघृणा की सीढ़ी पर उससे आगे पहुँच गए थे। उनकी तरक़्क़ी को लेकर उसके मन में कटुघृणा और आलोचना भरी हुई थी। इसी वजह से वह सफल नहीं हो पा रहा था।

अपने सहयोगियों के बारे में नकारात्मक सोच रखने और उनकी दौलत, तरक़्क़ी व सफलघृणा की निंदा करने का नतीजा यह निकला कि जिस धन-दौलत के लिए वह प्रार्थना कर रहा था, वह उड़नछू हो गई। वह एक ओर जिन चीज़ों के लिए प्रार्थना कर

रहा था, दूसरी ओर उन्हीं की निंदा कर रहा था! वह ख़ुद को ही नुक़सान पहुँचा रहा था, क्योंकि मस्तिष्क की ये नकारात्मक अवस्थाएँ वह ख़ुद सोच रहा था और महसूस कर रहा था। दरअसल, वह दो तरह की प्रार्थनाएँ कर रहा था। एक तरफ़ तो वह कह रहा था, "ईश्वर इसी वक़्त मुझे दौलतमंद बना रहा है," और अगली ही साँस में, मन ही मन या ज़ोर से, वह यह कह रहा था, "मैं उस आदमी की तरक़्क़ी और वेतनवृद्धि से जलघृणा हूँ।"

उसे यह अहसास होने लगा कि मस्तिष्क एक सृजनात्मक माध्यम है और हम सामने वाले के बारे में जैसे विचार सोचते हैं, वैसे ही विचार हमारे जीवन में प्रकट हो जाते हैं। उसने अपना मानसिक नज़रिया बदल लिया और इस बात का विशेष संकल्प लिया कि वह अपने सभी सहयोगियों के लिए स्वास्थ्य, ख़ुशी, शांति तथा जीवन की सभी नियामतों की कामना करेगा। उसने दूसरों की दौलत, तरक़्क़ी और सफलघृणा पर ख़ुश होने की आदत डाल ली। यह नज़रिया अपनाने के बाद उसे भी प्रमोशन मिल गया और उसने तरक़्क़ी की। नज़रिया बदलने से सब कुछ बदल गया।

आर्थिक रूप से सुरक्षित बनने का अचूक तरीक़ा

धन आदान-प्रदान का साधन है। यह स्वतंत्रघृणा, सौंदर्य, विलासिघृणा, शक्ति, सुरुचि और समृद्ध व आनंददायक जीवनशैली का प्रतीक है। धन को एक दैवी विचार के रूप में देखा जा सकघृणा है, जिसकी बदौलत राष्ट्रों की आर्थिक सेहत क़ायम है। इसलिए इसका उपयोग समझदारी, बुद्धिमत्ता और सृजनात्मक तरीके से करना चाहिए।

आप आर्थिक रूप से सुरक्षित तब होते हैं, जब आप अपने मस्तिष्क पर यह छाप छोड़ देते हैं कि पैसा न सिर्फ़ अच्छा है बल्कि बहुत अच्छा है और यह असंख्य तरीक़ों से मानव जाति के लिए वरदान है। अपने मन में यह कल्पना करते रहें कि आप एक वितरण केंद्र हैं, कि आपके पास सभी प्रकार की दौलत है और आप ये वरदान दूसरों को प्रदान कर रहे हैं। ऐसा करके आप वह राह खोल देते हैं, जिससे धन आपकी ओर अधिक तीव्र गति से प्रवाहित होगा।

आप अपने दिल में जानते हैं कि आपका उद्देश्य सही है और आप बहुत सारी धन-संपत्ति के हक़दार हैं। आप समृद्धि के सैलाब को अपनी ओर आने की आशा करते हैं। आपको जो संपन्नघृणा और ख़ुशहाली मिलती है, वह अवचेतन मन में निहित शक्ति और बुद्धिमत्ता का समझदारी से उपयोग करने का ही परिणाम है।

जीवन आपको तब पुरस्कार देगा, जब आप यह विश्वास करेंगे और मानेंगे कि सफलघृणा आपका दैवी अधिकार है। आर्थिक सुरक्षा की वास्तविक कुंजी निरंतर यह महसूस करना, जानना और कल्पना करना है कि आप ज़्यादा भव्य, ज़्यादा महान और ज़्यादा अद्भुत तरीक़े से दूसरों की सेवा कर रहे हैं। कल्पना करें कि ज़्यादा बड़ी सफलघृणा और दौलत आपके पास आने का इंतज़ार कर रही हैं। जो भी पैसा आपको मिलघृणा है उसे गहरी कृतज्ञघृणा के साथ स्वीकार करें और उसका निश्चिंतघृणा से उपयोग करें। साथ ही उस परम सत्ता के प्रति कृतज्ञघृणा जघृणाएँ, जिससे सारे वरदान प्रवाहित होते हैं।

नीचे दी गई प्रार्थना बार-बार करें। इससे आर्थिक सुरक्षा का विचार आपके अवचेतन मन तक पहुँच जाएगा:

“मैं जानघृणा हूँ कि धन दैवीय मस्तिष्क का एक विचार है। यह संपत्ति का प्रतीक है। मैं समझघृणा हूँ कि यह आदान-प्रदान का साधन है। ईश्वर के सभी विचार अच्छे हैं। ईश्वर ने ही सारी चीज़ें बनाई हैं। उसने अपनी सृष्टि को अच्छा और बहुत अच्छा घोषित किया है। धन अच्छा है। मैं समझदारी से, न्यायपूर्वक और सृजनात्मक तरीक़े से इसका इस्तेमाल करघृणा हूँ। मैं मानव जाति के भले के लिए इसका इस्तेमाल करघृणा हूँ। यह बहुत उपयुक्त प्रतीक है; इसके संचार से मुझे आनंद मिलघृणा है। मेरे मन में ईश्वर के विचार हर पल मौजूद हैं। मेरे पास दैवी संपन्नघृणा है। ईश्वर मेरी आपूर्ति का स्रोत है; वह इसी समय मेरी आपूर्ति सुनिश्चित करघृणा है। सभी प्रकार की दौलत संपन्नघृणा के सैलाब में मेरी ओर प्रवाहित होती है। केवल एक ही ईश्वर और एक ही मस्तिष्क है; ईश्वर के मस्तिष्क का हर विचार आध्यात्मिक है। धन के साथ मेरा मित्रघृणापूर्ण संबंध है। यह ईश्वर की दौलत और उसकी असीम समृद्धि का प्रतीक है। धन का विचार सर्वव्यापी है; मेरे पास संसार की सारी दौलत है। मैं इसका उपयोग केवल भलाई के लिए करघृणा हूँ। हे परम पिघृणा, आपको धन्यवाद, जो आपने धन-दौलत की इतनी सारी आपूर्ति की।”

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. दौलत आपके चारों ओर है और इसका सीधा सा कारण यह है कि आप ईश्वर में ही जीते हैं रहते हैं, और अस्तित्व में हैं; और ईश्वर आपमें जीघृणा, रहघृणा तथा अस्तित्व में है। ईश्वर सर्वव्यापी है, इसलिए उसकी सारी दौलत हर जगह मौजूद है - आपके भीतर भी और आपके चारों ओर भी।
2. आपके भीतर की सृजनात्मक शक्ति असीमित है और कभी ख़त्म नहीं हो सकती। समृद्धि के भाव के साथ ख़ुद को एकरूप करना ही आपकी सच्ची दौलत है।
3. अपने मस्तिष्क को ईश्वर पर केंद्रित करें और दौलत के आतरिक ख़ज़ाने के साथ एकरूप होने की भावना महसूस करें; दौलत अपने आप आपके जीवन में प्रवाहित होने लगेगी।
4. यदि आप अभाव, सीमा और बंदिशों के बारे में सोचते हैं, तो आप सभी तरह के अभावों और सीमाओं को बढ़ा लेंगे। आप जिस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वही आपके संसार में बढ़घृणा है।
5. यह अहसास करें कि ईश्वर आपके लिए आपूर्ति का शाश्वत स्रोत है और तत्काल आपकी सारी आवश्यकघृणाएँ पूरी करघृणा है। इसके बाद आपके जीवन में चमत्कार होने लगेंगे।
6. बिल चुकाने और सारे कर्ज़ से मुक्ति पाने का जादुई फ़ॉमूला यह है कि जब आपको किसी प्रकार का बिल मिले, तो बिल के जितनी ही धनराशि के लिए धन्यवाद दें। ऐसा करने पर वह विचार आपके अवचेतन मन में धीरे-धीरे रच-बस जाएगा।

7. आपका विचार ही वह एकमात्र अमूर्त शक्ति है, जिसे आप जानते हैं। आपका विचार अदृश्य ख़ज़ाने से मूर्त दौलत उत्पन्न कर सकघृणा है। अमीरी के बारे में सोचेंगे, तो अमीरी आएगी। ग़रीबी के बारे में सोचेंगे, तो ग़रीबी आएगी।

8. दौलत का आपका विचार-चित्र या मानसिकघृणा ही समृद्धि का मूल कारण है। यह मनचाही वस्तुओं का मूल तत्व और अदृश्य चीज़ों का प्रमाण है।

9. किसी दूसरे की दौलत और धन-संपत्ति की निंदा करना दरअसल ख़ुद को नुक़सान पहुँचाना है। आपका मस्तिष्क एक सृजनात्मक माध्यम है और आप दूसरों के लिए जो चाहते हैं, वह आप स्वयं के लिए चाह रहे होते हैं। आप विचारक हैं और आपके हर विचार से सृजन होता है।

10. आर्थिक सुरक्षा पाने के लिए आपूर्ति के उस शाश्वत स्रोत के मानसिक सामंजस्य में आएँ, जो कभी नहीं सूखघृणा। ज़्यादा बड़े, ज़्यादा अच्छे और उदात्त तरीक़े से दूसरों की सेवा करने की गहरी इच्छा रखें। इसके बाद ईश्वर आपकी सारी ज़रूरतें पूरी कर देगा और आपके जीवन में हमेशा दैवी संपन्नघृणा रहेगी।

अध्याय तीन

ज्ञान ही दौलत है

आप जो सबसे बड़ी खोज कर सकते हैं, वह इस बारे में जागरूक होना है कि आपके भीतर एक असीमित शक्ति और बुद्धिमत्ता वास करती है, जो आपको सभी समस्याओं से उबरने, सभी बाधाओं पर विजय पाने और जीवन के सभी कार्य करने में समर्थ बनाती है। आप जीतने के लिए पैदा हुए हैं और आपको वे सारे आवश्यक गुण, विशेषताएँ और क्षमताएँ प्रदान की गई हैं, जिनकी बदौलत आप अपनी तक़दीर के स्वामी तथा आत्मा के मुखिया बन सकते हैं।

यदि आप अपनी आध्यात्मिक शक्तियों को नहीं जानते हैं, तो आप सांसारिक घटनाओं और स्थितियों द्वारा शासित व नियंत्रित होंगे। आपमें आत्म-आलोचना की प्रवृत्ति होगी और आप आम तौर पर अपना मूल्य कम आँकेंगे। दूसरे शब्दों में, अपने ज्ञान के अभाव के कारण आप परिस्थितियों की शक्ति को कुछ ज़्यादा ही मान बैठेंगे तथा आपको अपने भीतर की उन ज़बर्दस्त शक्तियों का आभास भी नहीं होगा, जो आपको ऊपर उठा सकती हैं और ख़ुशहाली स्वास्थ्य, स्वतंत्रता व आनंद के राजमार्ग पर पहुँचा सकती हैं।

अपने ज्ञान से उसे कैसे लाभ हुआ

यूनान में एथेंस के पास डेल्फ़ी का मशहूर मंदिर है। अगस्त 1965 में वहाँ की यात्रा के दौरान महिला गाइड से मेरी बातचीत हुई। वह अँग्रेज़ी, फ़्रेंच और जर्मन भाषाएँ फ़र्राटे से बोलती थी। इस बात से हमारे समूह की एक पर्यटक इतनी प्रभावित हुई कि उसने उसके सामने फ़्रांस तथा जर्मनी के सफ़र में साथ रहने का प्रस्ताव रखा और न्यूयॉर्क सिटी में अपने तीन बच्चों की गवर्नेस भी बना दिया। तनख़्वाह 400 डॉलर प्रति माह थी। इसके अलावा रहने-खाने की व्यवस्था घर में ही होने के कारण मुफ़्त थी। गाइड ने मुझे बघृणाया कि उसकी वर्तमान तनख़्वाह 100 ड्रेकमा प्रति दिन यानी लगभग 3 डॉलर थी। उसने कहा कि यह अवसर किसी बड़े सपने की तरह था, क्योंकि वह कई सालों से अमेरिका जाना चाहती थी और अब इस प्रस्ताव से उसका सपना साकार हो गया।

इस युवती के बारे में रोचक बात यह थी कि वह हर दिन पूरे जोश से मदर मैरी से ज़्यादा पैसों और अमेरिका यात्रा के लिए प्रार्थना करती थी। बेशक, उसका पूर्ण विश्वास उसके अवचेतन मन में बीज बोने में सफल हो गया और उसी का नतीजा था कि उसके सामने यह असाधारण प्रस्ताव रखा गया।* पैरासेल्सस ने कहा था, “जिस चीज़ पर आपकी आस्था है, चाहे सच्ची हो या झूठी, परिणाम आपको एक जैसे ही मिलेंगे।”

भविष्यदृष्टि की दौलत

मैं इंग्लैंड, जर्मनी, आयरलैंड और यूनान के एक लेक्चर टूर पर गया, जिसमें हर देश में कुछ दिनों की छुट्टियाँ मनाने की सुविधा भी थी। कॉर्क, आयरलैंड में मैंने एक युवा वाइन सेल्समैन और उसकी आकर्षक पत्नी के यहाँ डिनर किया। वह लगभग चौबीस साल का था। उसने मुझे बघृणाया कि उसने एक सपना देखा था कि वह अपनी कंपनी का सबसे अग्रणी वाइन सेल्समैन बन चुका है और हाल ही में उसका यह सपना साकार हो गया। उसे डबलिन के मुख्यालय में आमंत्रित किया गया। वहाँ एक औपचारिक समारोह में उसे सोने की नक़्क़ाशी वाली घड़ी भेंट की गई और उसकी तनख़्वाह भी बहुत ज़्यादा बड़ा दी गई। लगाघृणार तीन वर्षों से वह बिक्री में प्रथम स्थान पर आ रहा है।

यह युवक हर रात को सोने से पहले कहघृणा था, "मैं सबसे अग्रणी सेल्समैन हूँ और मुझे बहुत अच्छा भुगघृणान मिलघृणा है।" वह अपने मन में यह छवि देखघृणा था कि उसकी पत्नी उसे बधाई दे रही है। इसके साथ ही वह गहरी नींद में सो जाघृणा था। वह मेरी पुस्तक द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइड का बड़ा उत्सुक पाठक था और उसका दावा था कि उसका जीवन इसी की बदौलत बदला है।

यह युवक मेरा रिश्तेदार है। उसके मन में किसी के साथ प्रतिस्पर्धा करने का कोई विचार नहीं था। वह अपने अवचेतन मन में "सबसे अग्रणी सेल्समैन" के विचार का बीज बोने में सफल हो गया। और उसके अधिक गहरे मस्तिष्क ने- जो हमेशा प्रतिक्रिया करघृणा है- अपने अनूठे और असाधारण तरीक़ों से प्रतिक्रिया की। इसके अनंत तरीक़े अबूझ हैं।

ज्ञान द्वार खोल देघृणा है

यूनान में अपोलो के मंदिर की यात्रा के दौरान मुझे एक यूनानी युवती दिखी, जो अपनी बाँह में एक पुस्तक दबाए थी। मुझे वह पुस्तक जानी-पहचानी लगी। ग़ौर से देखने पर मुझे यह सुखद आश्चर्य हुआ कि वह पुस्तक मेरी ही लिखी हुई थी: द मिरेकल ऑफ़ माइंड डायनैमिक्स।* मैंने तुरंत अपना परिचय दिया और उसने तुरंत सभी प्रकार के रोचक सवालों की झड़ी लगा दी।

उसकी प्रमुख समस्या यह थी कि वह अमेरिका में बसना चाहती थी, लेकिन एथेंस के अमेरिकी दूघृणावास में उसे बघृणाया गया कि प्रतीक्षा सूची बहुत लंबी है- इतनी लंबी कि उसे वहाँ जाने में कई साल लग जाएँगे। उसने मुझसे कहा, "आपने इस पुस्तक में जो तकनीकें बघृणाई हैं, मैं उनका इस्तेमाल कर रही हूँ। मुझे अपनी सारी प्रार्थनाओं का फल भी मिल गया है। सिर्फ़ एक ही प्रार्थना पूरी नहीं हो पाई है- अमेरिका जाकर रहने की अनुमति मिलना।"

वह सुनियोजित और नियमित रूप से यह कथन विश्वासपूर्वक दोहरा रही थी: "असीमित प्रज्ञा दैवीय व्यवस्था में मेरे अमेरिकी अप्रवास की राह खोल रही है। जब मनुष्य कहघृणा है, 'कोई रास्ता नहीं है,' तब ईश्वर कहघृणा है कि रास्ता है, और मैं अब

उसी रास्ते को स्वीकार करती हूँ।”

उसकी मदद करने की ख़ातिर मैंने न्यूयॉर्क की एक असाधारण बुद्धिमती महिला वकील को पत्र लिखा, जो साइंस ऑफ़ माइंड की विद्यार्थी और मेरी पुरानी मित्र थी। मैंने उसे बघृणाया कि इस यूनानी लड़की की बहन न्यूयॉर्क में व्यवसायी है और कई सालों से वहाँ रह रही है। वह बीमार है और चाहती है कि उसकी बहन यूनान से आकर व्यवसाय सँभालने में उसकी मदद करे। उस वकील ने लगभग तुरंत ही कार्य शुरू कर दिया और यूनान में द मिरेकल ऑफ़ माइर्ड डायनेमिक्स की युवा विद्यार्थी को पत्र लिखकर बघृणाया कि वह अमेरिका में प्रवेश सुनिश्चित करने के लिए कौन से क़ानूनी क़दम उठा सकती है।

यह अध्याय लिखते वक़्त मुझे एथेंस की उस युवती का पत्र मिला, जिसने लिखा था, “आपसे होने वाली मुलाक़ात यूँ ही नहीं हुई थी। जब मैंने आपको पादरी की पोशाक में देखा और आपको बोलते सुना, तो मैं जान गई कि आप अमेरिका के पादरी हैं। मैं यह भी जानती थी कि आप मुझसे बातें करेंगे और आपके पास मेरे सवाल का कोई न कोई जवाब होगा।”

मैं तो केवल एक निमित्त था, जिसके माध्यम से उसके अवचेतन की असीमित प्रज्ञा ने उसकी सतत और लगनशील इच्छा का जवाब दिया। वह कभी नहीं डगमगाई, कभी नहीं लड़खड़ाई और उसने अपनी इच्छा के साकार होने की संभावना पर कभी प्रश्न नहीं किया। वह तो बस जानती थी कि एक जवाब था। उसकी लगनशीलघृणा और संकल्प की वजह से उसे फ़ायदा हुआ।

उसकी प्रार्थना के जवाब में पहला क़दम तो यह था कि एक एयरलाइन होस्टेस ने उसे द मिरेकल ऑफ़ माइंड डायनैमिक्स की एक प्रति उपहार में देते हुए कहा, “ इससे तुम्हारी अँग्रेज़ी काफ़ी सुधर जाएगी और अगर तुम इसका सही इस्तेमाल करोगी, तो यक़ीनन अमेरिका पहुँच जाओगी।”

अवचेतन के तरीक़े प्राय: रोचक, आकर्षक, रोमांचक और मोहक होते हैं। आपको यह एहसास होने लगघृणा है कि चमत्कार कभी ख़त्म नहीं होंगे और “ईश्वर कभी असफल नहीं होता।”

नई अवधारणा से उसे अनुबंध मिल गया

जिस यात्रा के बारे में मैं लिख रहा हूँ, उसी के दौरान लंदन के कैक्स्टन हॉल में मैंने प्रेम के अद्‌भुत नियम* पर भाषण दिया। भाषण के बाद एक अभिनेत्री मुझसे बात करने आई। उसने मुझे बघृणाया कि उसने मंच पर काम करना छोड़ दिया है, क्योंकि वह आधुनिक नाटकों की अश्लीलघृणा से ऊब गई थी। उसने कहा, “अब मैं जान चुकी हूँ कि मुझसे कहाँ ग़लती हुई। मेरे पास देने के लिए कुछ है। मैं ख़ुद की अवनति कर रही हूँ। मेरे मन में उन प्रकाशकों के प्रति गहरा द्वेष भरा हुआ है, जिन्होंने मेरी नई पुस्तक पर हँगामा मचाया। मैं कल जाकर यह साबित करने वाली हूँ कि प्रेम सारे डर, घृणा और द्वेष को निकाल बाहर करघृणा है।”

मैं केवल एक सप्ताह के लिए लंदन में था। मेरे वहाँ से रवाना होने से पहले इस अभिनेत्री ने बॉन्ड स्ट्रीट स्थित मेरे होटल में फ़ोन करके गर्व और ख़ुशी से बघृणाया, "मैंने आज एक अनुबंध पर दस्तख़त कर दिए! पिछली रात दो घंटे तक मैंने ज़ोर-ज़ोर से कहा था, 'मेरी आत्मा दैवी प्रेम से भरी है।' मैं समूची मानव जाति के प्रति प्रेम और सद्भावना की गहरी भावना के साथ सोने गई थी।"

इस अभिनेत्री ने प्रेम के अर्थ का एक नया विचार हासिल किया और उसे अपने मस्तिष्क के सिंहासन पर बैठा लिया। उसे यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि दैवीय प्रेम हर विरोध और हर नकारात्मक चीज़ को घोल देघृणा है। प्रेम सर्वव्यापी विलायक है। भाषण के दौरान उसे अहसास हो गया कि अपने बारे में हुए जिस मिथ्या प्रचार से वह आगबबूला हो गई थी, दरअसल उस प्रचार में उसे चोट पहुँचाने की कोई शक्ति नहीं थी। चोट तो उसे सिर्फ़ अपने विचारों के माध्यम से ही पहुँच सकती थी। जिन लोगों ने उसके बारे में यह मूर्खघृणापूर्ण बकवास गढ़ी थी, उनके लिए उसने दुआ की। इसकी वजह से वह इन नकारात्मक विचारों से वह मुक्त हो गई।

आज मैं अमीर हूँ

मैंने म्युनिख़, जर्मनी के एक निजी घर में एक छोटे समूह के सामने मानसिक नियमों पर भाषण दिया। मैं जिस युवक का अतिथि था, वह पहाड़ों पर स्कीइंग सिखाने वाला बढ़िया शिक्षक था। आल्प्स पर्वाघृणारोहण के एक अभियान में उसकी एक विद्यार्थी- जो उसकी मँगेतर भी थी- दुर्घटनावश एक हिमस्थलन में लापघृणा हो गई और बाद में उसकी लाश मिली। उस पर मुकदमा चला और दो अदालतों ने उसे दोषी ठहराया। बहरहाल, तीसरी अदालत ने उसे पूरी तरह से निर्दोष करार दिया। इसके बावजूद उसके भीतर गहरी ग्लानि और भीषण पश्चाघृणाप था। इसके अलावा, स्थानीय अख़बारों में छपने वाली आलोचनात्मक टिप्पणियों से भी उसके दिल को चोट पहुँची थी।

मैंने उसे बघृणाया कि उसे दूसरों के कार्यों या पर्वघृणारोहण के निर्देशों की जान-बूझकर अवहेलना के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकघृणा। मैंने यह भी जोड़ा कि कुछ लोगों में मृत्यु की चाह और मृत्यु ग्रंथि होती है। इसी कारण वे अचेतन रूप से ऐसे दुस्साहसी कार्य चुनते हैं, जिनसे वे तबाह हो सकते हैं। आत्म-आलोचना और आत्म-घृणा की वजह से लोग शराब पी-पीकर काल के गाल में समा जाते हैं या नींद की गोलियों अथवा किसी अन्य ज़हरीले पदार्थ की तगड़ी ख़ुराक़ ले लेते हैं। उसे समझ में आ गया कि वह नाहक ही ख़ुद को सज़ा दे रहा था और इसके बजाय उसे लड़की के लिए प्रार्थना करनी चाहिए तथा उसे ईश्वर की ओर मुक्त कर देना चाहिए। वह जान गया कि उसे स्वयं को और अपनी पूर्व मँगेतर को मुक्त कर देना चाहिए।

मैंने उसे याद दिलाया कि इस धरती पर रहने वाले हम सभी लोग एक न एक दिन गुज़र जाएँगे और यह असंभव है कि कोई भी अपनी माँ, पिता, बहन, भाई या प्रिय व्यक्ति के साथ पूरे समय रहे। देर-सबेर वह वक़्त आता है, जब हर एक के जाने का समय हो जाता है। यह संसार का अटल नियम है। यह सर्वव्यापी है और संसार के सभी स्त्री-पुरुषों पर लागू होता है। इसलिए हमें अपने हृदय की फुसफुसाहट सुननी चाहिए

और यह अहसास करना चाहिए कि हममें से प्रत्येक के अगले आयाम पर पहुँचने का वक़्त ईश्वर ने निधारित कर रखा है और यह अच्छा ही होगा, वरना ईश्वर ऐसा कभी नहीं करता।

प्रियजनों* के बारे में रुग्ण या उदास विचार रखना भी ग़लत है, क्योंकि यह नकारात्मक, उदास नज़रिया उन्हें पीछे रोके रखता है। हमें उनसे प्रेम करना चाहिए और यह समझते हुए उन्हें ईश्वर की ओर मुक्त कर देना चाहिए कि उनकी यात्रा हमेशा ऊपर, आगे तथा ईश्वर की ओर होती है। उनके बारे में सोचते समय हमें यह अहसास करना चाहिए कि उनकी आत्मा में ईश्वर का प्रेम भर रहा है।

इस व्याख्या को सुनकर उसकी आँखों में चमक आ गई और वह बोला, "आज मेरे मन से एक भारी बोझ उठ गया! अब मैं मुक्त हूँ। अब मैं संपूर्ण हूँ!"

उसने विचार का स्वागत किया

यूनान में कोरिंथ के पास एक्लेपायस मंदिर की यात्रा के दौरान मैंने गाइड की बातें पूरी दिलचस्पी से सुनीं। गाइड ने बताया कि प्राचीन समय में इस धर्मस्थल की तीर्थयात्रा करने के बाद लोगों की हर प्रकार की बीमारी ठीक हो जाती थी। उस महिला गाइड ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया कि अपनी प्रबल आशा, जीवंत कल्पना और दृढ़ विश्वास की बदौलत उनमें से अधिकांश तो वहाँ पहुँचने से पहले ही व्यावहारिक रूप से ठीक हो जाते थे। उसने यह भी कहा कि प्राचीन दस्तावेज़ बताते हैं कि मंदिर के पुजारी रोगियों को मादक दवाएँ देकर गहरी सम्मोहक निद्रा में सुला देते थे और उस निद्रा के दौरान पुजारी प्रत्येक रोगी को यह सुझाव देता था कि देवी ने उस पर कृपा कर दी है और अब वह ठीक हो जाएगा। पुरातत्व संबंधी शोध बताता है कि इससे निस्संदेह कई उल्लेखनीय उपचार हुए।

गाइड ने प्राचीन युग की तकनीकों को जिस तरह समझाया, उससे मुझे अहसास हुआ कि वह अवचेतन मन की कार्यशैली से भली-भाँति परिचित थी। उसने कहा, "ज़ाहिर है, डॉ. मर्फ़ी, धर्मस्थल पर सोने से उन्हें जो परिणाम मिलते थे, उनका मूल कारण उन लोगों का यह दृढ़ विश्वास था कि उनका रोग ठीक हो जाएगा। अपने विश्वास के अनुरूप ही उन्हें मिलता था। उनका दृढ़ विश्वास उनके अवचेतन मन के उपचारक प्रवाह को सक्रिय कर देघृणा था, जिसका श्रेय वे बहुत से देवी-देवताओं को देते थे, जिनमें उनके प्राचीन देवता एक्लेपायस भी शामिल थे।"

इस गाइड युवती के पास बुद्धि की संपदा थी। उसके पिता अँग्रेज़ थे और माँ यूनानी। वह दोनों भाषाएँ बहुत अच्छी तरह बोल लेती थी। उसने मुझे बताया कि वह एथेंस के एक ग़रीब इलाक़े में पैदा हुई थी और कई बार तो वह स्कूल इसलिए नहीं जा पाती थी, क्योंकि उसके माता-पिता के पास उसके कपड़े ख़रीदने तक के पैसे नहीं होते थे। उसने प्रार्थना की कि ईश्वर उसे विचार सुझाए कि वह अपनी इस दुखद स्थिति से कैसे ऊपर उठे, जो हर उम्मीद का गला घोंट रही थी और जिसकी वजह से गहन मानसिक विषाद उत्पन्न हो रहा था।

अचानक उसके मन में एक विचार कौंधा: अमेरिकी बच्चों को यूनानी भाषा पढ़ाओ।

बस फिर क्या था, वह एक ऑइल कंपनी के एक्ज़ीक्यूटिव की पत्नी के पास गई और उसके घर पर अपनी सेवाएँ देने का प्रस्ताव रखा। उस महिला ने कहा, " बेहतरीन विचार है!" उस महिला ने तुरंत उसे अच्छी तनख्वाह पर रख दिया। बाद में वह उसे छुट्टियाँ मनाने के लिए अमेरिका और कई अन्य देशों की यात्रा पर भी ले गई- वह भी बिलकुल मुफ़्त।

आज वह युवती अमीर बन चुकी है, लेकिन अब भी उसे पर्यटकों को प्राचीन यूनान का इतिहास बताना पसंद है। प्राचीन यूनान के भव्य मंदिरों, मध्ययुगीन महलों, ख़ूबसूरत तस्वीरों जैसे टापुओं और प्राचीन समय के धार्मिक स्थलों की ख़ूबियाँ बताना उसे अच्छा लगता है। उसके मन में जो विचार आया, उसे उसने हल्के में नहीं लिया। इसके बजाय उसने उस पर तुरंत अमल किया और ख़ुद के सामने यह साबित कर दिया कि विचार हमारे स्वामी होते हैं और वे ही जीवन में हमारी तक़दीर को नियंत्रित करते हैं।

अपने विचार के साथ पूरे रास्ते जाएँ! यह न कहें, "ओह, यह इतना अधिक अच्छा विचार है कि सच हो ही नहीं सकघृणा।" इसके बजाय कहें, "मैं इस विचार का स्वागत करता हूँ! मैं इसे पूरे दिल से स्वीकार करता हूँ और जब ईश्वर की इच्छा होगी, तब यह घटित होगा।"

प्रकाश अंधकार को दूर भगाता है

एक मशहूर यूनानी मंदिर के महंत से मेरी एक रोचक बातचीत हुई। सने कहा कि उसके ख़्याल से बाइबल का सबसे शक्तिशाली कथन यह है, "तुम्हारे भीतर मौजूद शक्ति इस संसार में मौजूद शक्ति से ज़्यादा बड़ी है।" उन्होंने कहा, "ईश्वर अपनी बुद्धिमत्ता और शक्ति के साथ मेरे दिल की गहराई में रहता है, इस अहसास से मुझे आत्मविश्वास और शांति मिलती है। जब मैं अपनी समस्या को सुलझाने के लिए प्रकाश या समझ-बूझ की प्रार्थना करता हूँ, तो मेरे भीतर एक नया विचार या ज्ञान उमड़ आता है और मैं समस्या के पार देख लेघृणा हूँ। ईश्वर का प्रकाश मेरे मस्तिष्क में छाए अंधकार को हटा देता है।"

इस महंत ने जीवन का रहस्य खोज लिया है और जीवन की दौलत का स्रोत भी। उसने मुझसे विदा लेते हुए कहा, "वास्तविकता सिर्फ़ उतनी ही नहीं है, जितनी हम अपनी इंद्रियों से इस भौतिक जगत में देखते हैं। वास्तविकता तो वह भी है, जिसे हम सोचते हैं, महसूस करते हैं, कल्पना करते हैं और विश्वास करते हैं।"

उस महंत ने जो भी कहा, वह दरअसल मस्तिष्क के सभी विद्यार्थी जानते हैं: सृजन की शक्ति कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे भीतर होती है। याद रखें, सृजन करने वाला अपने सृजन से ज़्यादा बड़ा होता है। विचारक अपने विचारों से ज़्यादा बड़ा होता है; चित्रकार अपनी कला से ज़्यादा बड़ा होता है। कूचियों और पत्थरों या बाहरी चीज़ों को शक्तिशाली न मानें। केवल सृजनात्मक शक्ति को ही शक्तिशाली मानें। अपने विचारों और भावनाओं में ही निष्ठा, वफ़ादारी और आस्था रखें, क्योंकि उन्हीं से सृजन होता है। आपके विचार और भावनाएँ ही आपकी तक़दीर बनाती या बिगाड़ती हैं। जिस विचार-चित्र को आप सच महसूस करते हैं, वह... मनचाही चीज़ें मिलने का मूल कारण और

नज़र न आने वाली वस्तुओं का प्रमाण है। (हिब्रूज़ 11:1)

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. आपके पास जीवन की सभी समस्याओं, बाधाओं और मुश्किलों से उबरने तथा उन पर विजय पाने की आध्यात्मिक शक्ति है।
2. ज्ञान से आपको ज़बर्दस्त लाभ हो सकघृणा है। मिसाल के तौर पर, किसी विदेशी भाषा का ज्ञान दौलत, पर्यटन और रोमांचक अभियानों की राह खोल सकता है।
3. ख़ुद के बारे में भविष्य-दृष्टि या मानसिक आकलन आपके अवचेतन मन को सक्रिय कर देता है और आपको वह सब बनने के लिए विवश करता है, जो आप स्वयं के होने की कल्पना करते हैं। आपके अवचेतन का नियम अटल होता है।
4. ज्ञान बंद द्वार खोल देता है। जब मनुष्य कहता है, “कोई रास्ता नहीं है,” तब आपके भीतर की असीम बुद्धिमत्ता कहती है... मैंने तुम्हारे सामने एक द्वार खुला रखा है और कोई भी इंसान इसे बंद नहीं कर सकता... (रेवेलेशन 3:8) जब आप इस आंतरिक मार्गदर्शक पर विश्वास करके प्रार्थना करेंगे, तो चमत्कार होने लगेंगे।
5. ख़ुद का एक बिलकुल नया श्रेष्ठ आकलन करें। आपकी नई अवधारणा से आपको नए संपर्क, तरक़्क़ी और अनसोची दौलत हासिल होगी।
6. आप किसी दूसरे व्यक्ति के कार्यों के लिए उत्तरदायी नहीं हैं। सामने वाला आपसे सिर्फ़ प्रेम और सद्भावना की उम्मीद ही कर सकता है। इससे आप स्वतंत्र हो जाते हैं और सभी प्रकार के अपराधबोध से मुक्त हो जाते हैं।
7. प्रार्थना की प्रतिक्रिया में मन में जो भी नया विचार आए, उसका स्वागत करें। अपने विचार के साथ पूरे रास्ते जाएँ। एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचें और ख़ुद के सामने यह साबित करें कि आपका नया विचार आपके जीवन में दौलत ला सकघृणा है।
8. जब आप असमंजस में हों, बाधित हों या मानसिक दुविधा में हों, तो एक नई जागरूकता लाएँ, यानी नया प्रकाश या समझ। यह जान लें कि आपके भीतर की शक्ति संसार के भीतर की शक्ति से ज़्यादा बड़ी है। इस बात पर यक़ीन करेंगे, तो आपको एक नया ज्ञान प्राप्त होगा, जिसकी बदौलत आपको अपनी समस्याओं से उबरने का रास्ता नज़र आ जाएगा। याद रखें कि प्रकाश (समझ, नया ज्ञान, सत्य, नया विचार) सारे अंधकार को दूर हटा देता है। अनंत और असीमित प्रकाश को अपने भीतर चमकने दें; आर्थिक अभाव का सारा अंधकार दूर भाग जाएगा।

---

*देखें द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड, जोसेफ़ मर्फ़ी, प्रेंटिस हॉल प्रेस, न्यूयॉर्क द्वारा 1963 में प्रकाशित।

* देखें द मिरेकल ऑफ़ माइंड डायनैमिक्स, जोसेफ़ मर्फ़ी प्रेंटिस हॉल प्रेस, न्यूयॉर्क द्वारा 1964 में प्रकाशित

*देखें, द अमेज़िंग लॉज़ ऑफ़ कॉस्मिक माइंड पॉवर, जोसेफ़ मर्फ़ी, पार्कर पब्लिशिंग

कंपनी, इंक, वेस्ट न्याक, न्यूयॉर्क द्वारा 1965 में प्रकाशित।

*देखें एवरी एंड इज़ अ बिगिनिंग, पेज 63, द मिरेकल ऑफ़ माइंड डायनैमिक्स, जोसेफ़ मर्फ़ी, प्रेंटिस हॉल प्रेस, न्यूयॉर्क द्वारा 1964 में प्रकाशित

अध्याय चार

ईश्वर के साथ साझेदारी करें

मैंने हाल ही में यूनान के कई सुंदर टापुओं की यात्राएँ कीं। इनमें मेरी ऑस्ट्रेलिया, रोडेशिया, दक्षिण अफ़्रीका और अन्य देशों के कई पर्यटकों से मुलाक़ात हुई। मैं यह देखकर दंग रह गया कि इनमें से कई व्यवसायियों और पेशेवर लोगों को मस्तिष्क के नियमों का काफ़ी अच्छा ज्ञान था। उन्होंने ख़ुद को अपने उच्चतर स्वरूप के साथ एकरूप कर लिया था और जैसा उनमें से कुछ ने कहा:

"हमने ईश्वर को अपना वरिष्ठ साझेदार माना और अपने कामकाज में उसका मार्गदर्शन माँगा। हमने प्रार्थना की कि सही कर्मचारी हमारी ओर आकर्षित हों। हमने दुआ माँगी कि असीम प्रज्ञा हमारे प्रॉडक्ट्स के निर्माण, बिक्री और वितरण की आदर्श योजना प्रकट करे। हमारी कामयाबी और उपलब्धि का श्रेय हमारे उच्चतर स्वरूप के मार्गदर्शन को ही जाता है।"

इनमें से कुछ लोग भवन निर्माता थे, तो कुछ आर्किटेक्ट, इंजीनियर, बिज़नेस एक्ज़ीक्यूटिव और खदानों या अन्य बड़ी कंपनियों के संचालक थे। उन्होंने अपने जीवन के सभी पहलुओं में ईश्वर को अपना मार्गदर्शक, सलाहकार और परामर्शदाता बनाया। फलस्वरूप वे अपने सबसे ऊँचे सपनों से भी ज़्यादा दौलतमंद बन गए।

कई लोग ईश्वर को एक तरह के पिंजरे में बंद करके रखते हैं और उसे तीज-त्योहार, विवाह, अंत्येष्टि और अन्य ख़ास अवसरों पर ही बाहर निकालते हैं। ईश्वर कोई आसमान में रहने वाला जीव नहीं है, बल्कि वह बुद्धिमत्ता और शक्ति है, जिसने आपको बनाया है, जिसने आपके हृदय की धड़कन शुरू की, जो आपके सिर पर बाल उगाता है और आपके सारे अत्यावश्यक अंगों को नियंत्रित करता है, तब भी जब आप गहरी नींद में सोए होते हैं। यदि आप अपने भीतर की बुद्धिमत्ता और शक्ति को पहचानते नहीं हैं या उसका इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो इनके आपके पास होने का क्या फ़ायदा?

आपके भीतर के असीमित मस्तिष्क और प्रज्ञा का नाम ही ईश्वर है। वास्तव में, आप इस शक्ति का हमेशा उपयोग करते हैं, चाहे आपको यह बात मालूम हो या न हो। उदाहरण के लिए, जब आप अपनी उँगली उठाते हैं, तो यह ईश्वर की शक्ति ही है, जिसने आपको यह क्षमता प्रदान की। जब आप कोई समस्या सुलझाते हैं, तो यह आपके भीतर की सृजनात्मक बुद्धि है, जो जवाब सुझा रही है। जब आपकी उँगली कट जाती है, तो असीमित उपचारक उपस्थिति वहाँ थक्का जमा देती है और उसे दुरुस्त करने के लिए उसके चारों ओर नई कोशिकाएँ बनाती है। जब आप अपने बच्चे पर प्रेम की बौछार करते हैं, तो आप ईश्वर के असीमित प्रेम के अंश का इस्तेमाल कर रहे होते हैं। जब आप शांति स्थापित करते हैं, तो आप ईश्वर की असीम शांति के अंश को प्रकट कर रहे होते हैं। ईश्वर के साथ टीम बनाकर काम करें और अपने जीवन में आर्थिक समृद्धि को

आमंत्रित करें।

दौलत का हिस्सा

एथेंस के पास मोनी टापू पर जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ़्रीका के एक लेखक से मेरी लंबी बातचीत हुई। उसने कुछ रोचक बातें बताईं और कहा कि उसके लेख नियमित रूप से अस्वीकृत होते थे। उसकी पहली पुस्तक भी प्रकाशकों ने यह कहकर ठुकरा दी, “पढ़ा ही नहीं” और “रुचि नहीं है।” उसके भीतर अस्वीकृति की ग्रंथि विकसित होने लगी, जब तक कि उसने मानसिक नियमों से संबंधित एक पुस्तक नहीं पढ़ी, जिसने उसकी विचार प्रक्रियाओं को पूरी तरह बदल दिया।

फिर वह अपनी कल्पना का उपयोग अधिक सृजनात्मक तरीक़े से करने लगा। अपने उपन्यास के पात्रों पर विचार करते वक़्त वह उन विशेष स्थितियों, कथासूत्रों तथा सत्यों के बारे में सोचता था, जिन्हें वह अभिव्यक्त करना चाहता था। इसके बाद वह हर दिन सुबह-शाम लगभग आधे घंटे तक यह साहसिक कथन दोहराता था: “ईश्वर की बुद्धिमत्ता मेरे माध्यम से यह उपन्यास लिख रही है। मेरी बुद्धि दैदीप्यमान हो गई है और मैं एक ऐसा उपन्यास लिखता हूँ, जो प्रेरित करता है, भला करता है और जो मानव जाति के लिए वरदान है।”

उसने कहा, “प्राय: जब मैं सुबह जागता हूँ, तो पाता हूँ कि उपन्यास मेरे ज़रिए अपने आप लिखा जा रहा है। मेरा चेतन मन भीतर के आदेशों का पालन करता है।”

जब से उसने यह विधि अपनाई है, उसकी एक भी पुस्तक या लेख को नहीं ठुकराया गया। उसे अपने भीतर भारी ख़ज़ाना मिल गया और उसने अपनी क़लम के माध्यम से मानव आत्मा को ऊपर उठाने तथा गरिमामय बनाने के लिए इसका इस्तेमाल किया।

उसने खोज लिया कि उसका मस्तिष्क ईश्वर के सर्वव्यापी मस्तिष्क का एक हिस्सा है। उसने यह भी पाया कि जब वह सही तरीक़े से अपने दिमाग़ का इस्तेमाल करता है, तो उसका ज़्यादा गहरा मस्तिष्क प्रतिक्रिया करता है। यह लेखक अपनी अधिकांश आर्थिक सफलता का श्रेय बाइबल की इन पंक्तियों में अपने गहरे विश्वास को देता है: यदि तुममें से किसी में भी मेधा की कमी है, तो तुम्हें ईश्वर से माँगना चाहिए, जो सभी लोगों को उदारता से देता है और निंदा नहीं करता है; और मेधा उसे दे दी जाएगी। (जेम्स 1:5)

विश्वास ही दौलत है

यूनान की यात्रा का एक अच्छा अनुभव केप साउनियन में मिला, जहाँ समुद्र के देवता पॉसीडॉन का सफ़ेद संगमरमर से निर्मित बड़ा ही सुंदर मंदिर है। यहाँ से सूर्यास्त का नज़ारा दुर्लभ आनंद और अवर्णनीय सौंदर्य का दृश्य होता है।

यहाँ महिला गाइड से मेरी लंबी बातचीत हुई और उसने मुझे अपनी कहानी बताई। वह एथेंस के सबसे ग़रीब इलाक़े में पैदा हुई थी और उसमें गहरी हीन भावना थी।

लड़कपन में वह देखती थी कि पर्यटक गाइड की सेवाएँ लेकर यूनान के शानदार ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा करते हैं। एक दिन उसने अपने माता-पिता से कहा कि वह भी ज्ञानी और बुद्धिमान बनना चाहती है, ताकि वह गाइड बन सके। उन्होंने अपनी बेटी की खिल्ली उड़ाई और उसे याद दिलाया कि शिक्षा सिर्फ़ अमीरों को मिलती है और दुर्भाग्य से वह ग़रीब घर में पैदा हुई है।

बहरहाल, उस लड़की ने अपने विचार को जकड़ लिया। जब वह बड़ी होकर हाई स्कूल गई, तो उसने प्रिंसिपल से पूछा कि क्या वह पुरातत्ववेत्ता बन सकती है। प्रिंसिपल बोले, "हाँ, अगर तुम्हें ख़ुद पर भरोसा हो, तो तुम अवश्य बन सकती हो। और तुम्हें भरोसा तभी होगा, जब तुममें यह आस्था होगी कि 'ईश्वर और मैं यह काम कर सकते हैं।'"

महिला गाइड ने मुझसे कहा, "मैंने उस वाक्य को अपने दिल में बसा लिया और आज मैं आर्कियोलॉजी के थर्ड ईयर में पढ़ रही हूँ। दो साल बाद मैं पुरातत्ववेत्ता बन जाऊँगी।"

वह जो बनना चाहती थी, वह बनने की अपनी शक्ति में उसे विश्वास था। यह विश्वास धन, उत्साह, कार्य के प्रति प्रेम, स्फूर्ति, आकर्षण और अद्‌भुत, ख़ुशमिज़ाज व्यक्तित्व में बदल गया। बाइबल का उसका प्रिय उद्धरण यह है: अतंत: बंधुओ, ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखो और उसकी शक्ति से शक्ति पाओ। (एफ़ेसियन्स 6:10)

पुरातत्ववेत्ता बनने का विचार उसके दिमाग़ में सबसे ऊपर और सबसे प्रबल था। इसके बाद उसके अवचेतन मन ने, जो बुद्धिमत्ता और शक्ति से पूर्ण होता है, इसे दैवीय योजना के अनुरूप साकार कर दिया।

प्रतिभा आपके भीतर है

मैंने यूरोपीय भ्रमण के दौरान केपटाउन, दक्षिण अफ़्रीका के एक शीर्षस्थ व्यवसायी के साथ डिनर लिया। उसने खुलकर बताया कि बरसों पहले वह केपटाउन में शुरू किए गए चार कारोबारों में असफल हुआ था। उसकी असफलता का मुख्य कारण यह था कि उसने तथाकथित विशेषज्ञों की सलाह मानी थी कि वह दुकान कहाँ खोले, माल कैसे ख़रीदे और प्रचार-प्रसार तथा विज्ञापन कैसे करे। उसने बताया कि उसके सारे कष्टों का कारण यही था कि वह सलाह के लिए दूसरों पर निर्भर था। अपने भीतर छिपी बुद्धिमत्ता को न पहचान पाने की वजह से ही उसे दुख, कष्टों और असफलताओं का अनुभव हुआ।

उसकी पत्नी ने उसे सुझाव दिया कि वह अपने उच्चतर स्वरूप पर भरोसा करे। पत्नी ने बाइबल का एक उद्धरण बताते हुए उसे सलाह दी कि यदि वह मन ही मन इसके अनुरूप जिए, तो वह निश्चित रूप से कामयाब होगा। कामयाबी की यह कुंजी थी: मेरा इश्वर अपनी महिमा और दौलत से तुम्हारी सारी ज़रूरतें पूरी कर देगा... (फ़िलिप्पियन्स 4:19)

इसके बाद वह असीमित प्रज्ञा के सामंजस्य में आने लगा। उसे अहसास हुआ कि

दैवीय समाधान उसके सामने आने वाली सारी समस्याओं से बढ़कर था, क्योंकि ईश्वर- जो सबसे बुद्धिमान है- उसके भीतर ही रहता है और उसकी हर प्रार्थना का जवाब देता है। अब वह परिस्थितियों, स्थितियों और समस्याओं को अपने से बड़ा नहीं मानता था। इसके विपरीत वह जान चुका था कि सारी समस्याएँ सुलझ सकती हैं और उन पर विजय पाई जा सकती है। वह हर मुश्किल का मुक़ाबला आस्था और विश्वास से करने लगा, क्योंकि वह जान गया था कि मुश्किलों से बाहर निकलने का रास्ता हमेशा मौजूद रहता है और उनसे उबरने में ज़बर्दस्त आनंद मिलता है। उसे अपनी राह में आने वाली चुनौतियाँ पसंद आने लगीं!

उसने अपने भीतर की बुद्धिमत्ता और ज्ञान को खोज लिया। इसके बाद वह अपने सामने आने वाली परिस्थितियों और स्थितियों का सम्मोहित शिकार नहीं रह गया था। आज वह बेहद सफल है और उसकी कंपनियों में सैकड़ों कर्मचारी काम करते हैं। सफलता पाने के साथ-साथ वह उच्चतर शिक्षण संस्थाओं और कई अन्य परोपकारी संगठनों को ख़ुशी-ख़ुशी दान भी दे रहा है। आप उसे पूर्ण शाति देंगे जिसका मन आपमें रमा है: क्योंकि उसे आप पर विश्वास है। (इसाइया 26:3)

आप जीत सकते हैं

मैं जर्मनी के फ़्रैंकफ़र्ट में जिस होटल में ठहरा था, वहाँ मुझे एक युवा डॉक्टर मिला। उसने मुझे बघृणाया कि उसने यहाँ-वहाँ काम करके कॉलेज की पढ़ाई पूरी की है और इसका सारा ख़र्च ख़ुद जुटाया है। जब उसने डॉक्टरी की परीक्षा पास कर ली, तो उसके मन में ये विचार आए, “तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं। तुम अच्छे इलाक़े में क्लीनिक नहीं खोल सकते। तुम अपने ऑफ़िस को जरूरी उपकरणों और औज़ारों से लैस नहीं कर सकते।”

चिकित्सा मनोविज्ञान का अध्ययन करने के कारण वह जानता था कि ये सिर्फ़ नकारात्मक सुझाव थे, जो उसके दिमाग़ पर असर डालने की कोशिश कर रहे थे और इनकी अपने आप में कोई शक्ति नहीं थी। वह जानता था कि उसके अपने विचार और भाव ही एकमात्र सृजनात्मक शक्ति थे। उसने परिस्थितियों के झूठे और सीमित करने वाले सुझावों पर विश्वास करने के बजाय अपने मस्तिष्क की सृजनात्मक शक्ति में विश्वास रखने का विकल्प चुना।

उसने अपने मन से बाधाओं, रोड़ों, विलंब और समस्याओं से संबंधित सारी धारणाएँ हटाकर मस्तिष्क को साफ़ कर लिया और अपने मस्तिष्क की सृजनात्मक शक्ति से अपने लिए आदर्श ऑफ़िस खोलने को कहा। वह लगातार और पूरी चेतना के साथ यह दृश्य देखने लगा कि वह एक बेहतरीन ऑफ़िस में बैठा है और अपने पेशे के सभी नवीनतम उपकरणों और यंत्रों से घिरा हुआ है। उसने दावा किया कि उसके अवचेतन मन की असीम प्रज्ञा उसके आग्रह पर उसी वक़्त काम कर रही है और दैवीय योजना के अनुरूप इसे साकार कर रही है।

कुछ ही समय बाद एक युवती उसके घर अपना इलाज कराने आई। सच तो यह था कि वह घर भी उस युवा डॉक्टर का नहीं था; उसने तो अस्थायी रूप से अपने पिता के

घर पर क्लीनिक खोला था। युवती गंभीर दर्द से पीड़ित थी। युवा डॉक्टर तुरंत समझ गया कि उसे गंभीर अप़ेडिसाइटिस हो गया है। वह उसे फटाफट अस्पताल ले गया, उसने उसका ऑपरेशन किया और युवती उल्लेखनीय रूप से ठीक हो गई।

अंतत: उन दोनों में प्रेम हो गया। युवती ने न सिर्फ़ उसके लिए एक नया क्लीनिक खोलने का ख़र्च उठाया, बल्कि उसके लिए एक रॉल्स-रॉयस कार भी ख़रीदी, जो उनकी शादी के दिन इंग्लैंड से उनके घर पहुंची। युवती के पिता बेहद दौलतमंद उद्योगपति थे और वे इस बात पर ख़ुश थे कि उन्हें अपने दामाद को चिकित्सा के सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित क्लीनिक खोलकर देने का अवसर मिल रहा है।

यह दिखाता है कि आप परिस्थितियों के शिकार नहीं हैं। परिस्थितियों के शिकार तो आप तब होते हैं, जब आप ऐसा मानते हैं। ईश्वर की असीमित बुद्धिमत्ता को अपने भीतर प्रवाहित होने की अनुमति दें। इससे आपके जीवन की सारी आर्थिक परिस्थितियाँ बदल जाएँगी- चमत्कारिक रूप से और तुरंत!

इस युवा डॉक्टर की तरह ही आपको भी दरअसल अपनी आंतरिक शक्ति को खोजने और इससे परिचित होने की ज़रूरत है। इस प्रक्रिया को आत्म-साक्षात्कार कहा जाता है। ईश्वर आपके भीतर वास करता है। लेकिन इसके बावजूद संसार के करोड़ों लोग बीमार, कुंठित, पराजित और ग़रीब बने रहते हैं। इसका कारण सिर्फ़ उनका अज्ञान है। उन्हें यह जानकारी ही नहीं है कि ईश्वर उनके भीतर वास करता है।

आपका और मेरा काम इस दैवीय उपस्थिति के बारे में जागरूक बनना है, ताकि हम सारे अवरोधों, हताशाओं और ग़रीबी से मुक्त हो जाएँ। उससे परिचित हो जाओ और शाति से रहो: इससे नेकी तुम्हारे पास आएगी। (जॉब 22:21) अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचान लेंगे, तो आपको ख़ुशी, समृद्धि और मानसिक शांति का अनुभव होगा।

आप किलार्नी की झील के पास रहकर भी उतने ही ख़ुश रह सकते हैं, जितने कि हॉलीवुड बूलेवार्ड में रहकर। सच तो यह है कि स्थान का आपके स्वास्थ्य, दौलत या सफलता से कोई संबंध नहीं है। आप अपनी सफलता, दौलत और समृद्धि का निर्माण स्वयं करते हैं।

आपका उच्चतर स्वरूप इस पल आपके माध्यम से बोल रहा है। यह आपसे आगे, ऊपर और ईश्वर की ओर बढ़ने का आग्रह कर रहा है। ईश्वर हमारी इच्छाओं के ज़रिए हममें से प्रत्येक से संवाद करता है। हर इच्छा दरअसल ईश्वर की आवाज़ है, जो हमारे ज़रिए अभिव्यक्ति चाहती है।

आप ईश्वर के असीमित वाद्ययंत्र हैं और आप ईश्वर का सुर निकालने की ख़ातिर यहाँ आए हैं। पूरे उत्साह, जोश और विश्वास के साथ अपने नए काम, नौकरी या अध्ययन को शुरू करें, चाहे यह जो भी हो। इस अवस्था में शुरू करने पर आप पाएँगे कि वह काम, नौकरी या अध्ययन उसी आनंद में ख़त्म भी होगा। ईश्वर के प्रेम के साथ शुरू करेंगे, तो अंत भी अच्छाई या ईश्वर के प्रेम के साथ ही होगा। अपने नए काम को ईश्वर में आस्था और विश्वास के साथ शुरू करें। इससे आपकी विजय और कीर्ति सुनिश्चित होगी- और निश्चित रूप से आर्थिक सफलता भी।

उसने कहा कि प्रारंभ और अंत एक ही है

मैंने एक युवा संगीतकार को किलार्नी, आयरलैंड में हार्प नामक वाद्ययंत्र बजाते सुना। मेरे साथ मेरी एक बहन भी थी, जो इंग्लैंड में रहती है और फ्रेंच लेटिन तथा गणित पढ़ाती है। मेरी बहन ने टिप्पणी की, “इतना मधुर संगीत तो मैंने आज तक नहीं सुना। यह लड़की बेहतरीन हार्प बजाती है!”

हमने उस युवती को अपनी टेबल पर डिनर के लिए आमंत्रित किया। उसने बताया, “हार्प बजाने से पहले मैं इस तरह से प्रार्थना करती हूँ: ‘महान संगीतकार ईश्वर मेरे माध्यम से हार्प बजाता है। मैं उसकी सेवक हूँ और मैं उसके लिए बजाती हूँ। वह मेरे ज़रिए अपना ख़ुद का गीत बजाता है। वह प्रेम की धुन निकालता है, क्योंकि ईश्वर प्रेम है।” इस तरह मैं शुरू करती हूँ और जीवन का नियम यह है कि प्रारंभ तथा अंत एक ही होते हैं। मैं दैवीय चीज़ों के प्रेम, प्रशंसा और आराधना के साथ प्रारंभ करती हूँ, इसलिए परिणाम भी उसके प्रेम, सौंदर्य और महिमा के चित्र जैसा ही होता है।”

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. ईश्वर के साथ साझेदारी करेंगे, तो आप अमीर बन जाएँगे।
2. आपके पास बाँटने के लिए दौलत है। अपने अवचेतन मन में वास कर रही ज़बर्दस्त शक्ति और बुद्धिमत्ता का पता लगाएँ। इनका दोहन करने पर आप असंख्य तरीक़ों से प्रेरित, ख़ुशक़िस्मत और समृद्ध हो सकते हैं। आप मानव जाति के लिए महान वरदान बन सकते हैं।
3. याद रखें, आपका आत्मविश्वास, आस्था और मस्तिष्क के नियमों की समझ आपको स्वास्थ्य, दौलत तथा सफलता प्रदान कर सकती हैं।
4. प्रतिभा आपके भीतर है। जब आप अपने अवचेतन मन की बुद्धि और ज्ञान के साथ लयबद्ध होते हैं, तो आपके भीतर की प्रतिभा प्रकट हो जाती है। आपके अवचेतन मन की असीमित प्रज्ञा आपकी सारी आर्थिक समस्याएँ सुलझा सकती है और आपको सही जवाब दे सकती है।
5. दैवी समाधान सारी समस्याओं से बड़ा होता है। परिस्थितियाँ और स्थितियाँ सृजनात्मक नहीं होतीं। सृजनात्मक शक्ति बाहरी चीज़ों के झूठे और सीमित करने वाले सुझावों में नहीं, बल्कि आपके विचारों और भावों में होती है।
6. जीवन का नियम यह है कि प्रारंभ और अंत एक ही हैं। अपने नए कार्य को उत्साह, जोश, आस्था और विश्वास से शुरू करें। आपके काम का परिणाम उसी अवस्था और भाव जैसा ही होगा, जिसमें आपने काम शुरू किया था। अपने भीतर वास करने वाली ईश्वरीय शक्ति में आस्था के साथ शुरुआत करें। इससे आपको आर्थिक पहलू समेत अपने सभी कार्यों में अद्‌भुत परिणाम मिलेंगे।

अध्याय पाँच

प्रार्थना कर के अमीर कैसे बनें

धरती की गहराइयों से आपको असंख्य संपदाएँ मिल सकती हैं, जैसे सोना, चाँदी, प्लेटिनम, यूरेनियम, गैस, तेल, हीरे और अनगिनत अन्य क़ीमती पत्थर व धातुएँ, तथा उनसे उत्पन्न होने वाले ढेर सारे सह-उत्पाद। बहरहाल जैसा पहले बताया गया है, जीवन की असली दौलत मनुष्य के अवचेतन की गहराइयों में रहती है। यह मनुष्य की आंतरिक प्रज्ञा है, जो उसे हमेशा धरती के ख़जाने खोजने, उनका उपभोग करने और उनका वितरण करने में समर्थ बनाती है।

संसार की सबसे क़ीमती चीज़ें आपके भीतर हैं। मिसाल के तौर पर, अपनी अवचेतन गहराइयों में आप असीमित प्रज्ञा, अनंत बुद्धि, अपार शक्ति और ईश्वर की उपस्थिति के सारे चमत्कार व महिमा पाएँगे। मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें- और यह आपको मिल जाएगा। आप अपनी आंतरिक दौलत पाने के लिए चिंतन कर सकते हैं और नए रचनात्मक विचारों आविष्कारों, खोजों, मधुर संगीत, नए गीतों तथा सभी समस्याओं के जवाब रूपी क़ीमती पत्थर और रत्न निकाल सकते हैं। आंतरिक दौलत का ख़ज़ाना पाने के बाद आप हमेशा और शर्तिया प्रकृति की बाहरी दौलत भी पा लेंगे। क्योंकि “जैसा भीतर वैसा बाहर।”

उसने आध्यात्मिक स्वर्ण कैसे खोजा

हाल ही में मुझे एक महिला का पत्र मिला। इसमें उसने लिखा था, “मेरे पति और मेरी शादी को तीस साल हो गए हैं। उनकी उम्र पैंसठ है और मेरी पचपन। हमें पाँच बच्चों का वरदान मिला है। हम सुखद और शांतिपूर्ण जीवन जी रहे थे- या कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता था। बहरहाल, हाल ही में मेरे पति ने मुझे बताया कि तीन साल से भी ज़्यादा समय से उनका अपने ऑफ़िस की एक युवा स्टेनोग्राफर से चक्कर चल रहा है। उन्होंने मुझसे बड़ी बेरुख़ी से कहा कि मैं बात को समझूँ, ‘जब तक कि मामला रफ़ा-दफ़ा न हो जाए।’

“मैं क्रोधित और आहत हूँ। मेरा मन द्वेष और नफ़रत से भरा हुआ है। बच्चे सदमे में हैं। हालाँकि लोग कहते हैं कि मैं आकर्षक, बुद्धिमान और सुंदर हूँ, लेकिन मेरा ख़ुद पर से विश्वास उठता जा रहा है। चिंता मुझे खाए जा रही है और मैं रात को सो भी नहीं पाती हूँ। मेरे साथ विश्वासघात और छल हुआ है। मैं हताशा में हूँ। मैं क्या करूँ?”

मैंने उस महिला से कहा कि उसका पति निस्संदेह नैतिक दृष्टि से कमज़ोर है। पति में असमर्थता और कमतरी का गहरा अहसास भी है। लंबे समय से चले आ रहे चक्कर से यह पता चलता है कि उसकी निष्ठा और चरित्र खंडित हो चुके हैं, क्योंकि वह अपनी

सहकर्मी का शोषण कर रहा है। वह उस सहकर्मी के प्रति कोई ज़िम्मेदारी या समर्पण महसूस नहीं करता है, जो उसकी इस बात से स्पष्ट होता है, “जब तक कि मामला रफ़ा-दफ़ा न हो जाए।”

मैंने अपने पत्र में यह भी लिखा: “आपके पति के मन में गहरा अपराधबोध है, साथ ही परिणामों का डर भी है। वह जानता है कि इस चक्कर का पता चलने से आप पर कितना बुरा असर होगा। शायद उसने आपको मजबूरी में इसलिए बताया है, क्योंकि उसकी प्रेमिका उस पर दबाव डाल रही होगी कि वह आपको तलाक़ देकर उससे शादी कर ले।

“वह इस समय ‘दोहरी मानसिकता की अवस्था’ में है। एक ओर तो उस पर अपनी प्रेमिका के साथ रहने की ख़ुमारी सवार है, लेकिन अचेतन रूप से वह आपके साथ रहना चाहता है। अपने पति से खुलकर चर्चा करें और उसे साफ़-साफ़ बता दें कि उसमें इतना नैतिक साहस, मानसिक नियंत्रण तथा बुनियादी इंसानियत होनी चाहिए कि वह तुरंत इस चक्कर को ख़त्म कर दे। कह दें कि उसे यह करना ही होगा, क्योंकि आप इस तरह से नहीं रह सकतीं। जब विवाह में एक-दूसरे के प्रति कोई वफ़ादारी न बचे, तब विवाह एक नाटक, मजाक और खोखला संबंध बन जाता है, जो आपको गवारा नहीं है। शायद उसकी प्रेमिका आपको इस बारे में बताकर कहती कि आप अपने पति को छोड़ दें, लेकिन आपके पति ने संभवत: आपको यह बात पहले इसलिए बताई है, क्योंकि उसके मन में आपके साथ रहने की इच्छा है।”

मैंने ज़ोर दिया कि वह ऊपर बताए तरीक़े से अपने पति से खुलकर बातचीत करे। इसके अलावा मैंने उस महिला को नीचे दी गई प्रार्थना दोहराते रहने की सलाह भी दी: “मैं अपने पति के प्रति प्रेम, शांति, सद्भावना और ख़ुशी व्यक्त करती हूँ। हमारे बीच सद्भाव, शांति और दैवी समझ है। मैं अपने पति के देवत्व को प्रणाम करती हूँ। दैवी प्रेम हमें हर पल एक रखता है। ईश्वर उसके माध्यम से सोचता, बोलता और कार्य करता है जिस प्रकार वह मेरे माध्यम से सोचता, बोलता और कार्य करता है। हमारा विवाह ईश्वर और उसके प्रेम को अर्पित है।”

उस महिला ने ऊपर बताए तरीक़े से लगभग एक सप्ताह तक प्रार्थना की और इसके बाद अपने पति से खुलकर बातचीत की। पति फूट-फूटकर रोने लगा और उससे माफ़ी माँगने लगा। आज उनके घर में सद्भाव, शांति और प्रेम का माहौल है। एक बार जब इस महिला ने चिंतन करने का फ़ैसला कर लिया, तो उसे जल्द ही अपने भीतर आध्यात्मिक स्वर्ण मिल गया।

आपके भीतर की सोने की खदान

हाल ही में किलार्नी, आयरलैंड के एक सर्जन से मेरी बड़ी रोचक बातचीत हुई। वे अपनी आकर्षक पत्नी के साथ सैर-सपाटा कर रहे थे। हम मस्तिष्क के चमत्कारों के बारे में बातचीत करने लगे और उन्होंने मुझे अपने पिता के बारे में एक ज़बर्दस्त कहानी सुनाई। मैं यहाँ पर सबसे सरल संभव रूप में आपके सामने उसका सार पेश कर रहा हूँ।

यह युवा सर्जन वेल्स के एक खनिक का बेटा था। उसके पिता बहुत कम मज़दूरी में

बहुत ज़्यादा समय काम करते थे। बचपन में उस सर्जन को नंगे पैर स्कूल जाना पड़ता था, क्योंकि उसके पिता के पास जूते ख़रीदने लायक़ पैसे भी नहीं थे। उनकी डिनर टेबल पर फल और मीट साल में दो बार ही नज़र आते थे- ईस्टर और क्रिसमस पर। छाछ, आलू और चाय इस परिवार का मुख्य आहार थे।

एक दिन वह युवक अपने पिता से बोला, "डैडी, मैं सर्जन बनना चाहता हूँ। मैं आपको इसका कारण बताता हूँ। मैं जिस लड़के के साथ स्कूल जाता हूँ, उसे मोतियाबिंद हो गया था। आँखों के सर्जन ने उसका ऑपरेशन कर दिया, जिसके बाद उसकी आँखों की रोशनी पूरी तरह ठीक हो गई। मैं भी उस डॉक्टर जैसी नेकी करना चाहता हूँ।"

उसके पिता ने जवाब दिया, "बेटे मैंने पच्चीस साल तक पाई-पाई बचाकर तीन हज़ार पौंड (लगभग 8,000 डॉलर) अलग रखे हुए हैं। ये पैसे तुम्हारी शिक्षा के लिए हैं, लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करने तक इस पैसे को न छुओ। इसके बाद इन पैसों से तुम हार्ले स्ट्रीट (लंदन स्थित विशेषज्ञ डॉक्टरों का इलाका) में एक सुंदर क्लीनिक खोल सकते हो और अपने पेशे के सभी उपकरण ख़रीद सकते हो। इस दौरान, उस जमा पैसे पर ब्याज मिलता रहेगा और तुम्हारे पास सुरक्षा भी रहेगी। यदि डॉक्टरी की पढ़ाई में किसी वक़्त तुम्हें वाक़ई इन पैसों की ज़रूरत पड़े, तो तुम हमेशा इनका उपयोग कर सकते हो। यह धनराशि तुम्हारी ही है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम इसे ब्याज अर्जित करने दो। पढ़ाई पूरी करने के बाद यह तुम्हारे बहुत काम आएगी।"

यह सुनकर वह युवक इतना रोमांचित हुआ कि शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। उसने क़सम खाई कि जब तक वह अपनी डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी नहीं कर लेगा, तब तक उस पैसे को छुएगा भी नहीं। उसने मेडिकल कॉलेज की पढ़ाई बड़ी मेहनत से पूरी की। वह शाम को और छुट्टियों के दौरान फ़ार्मेसी में काम करता था। वह मेडिकल कॉलेज में फ़ार्मेकोलॉजी और केमिस्ट्री के प्रशिक्षक के रूप में भी पैसे कमाता था। उसका पूरा ध्यान इस बात पर केंद्रित था कि वह पिता से किया वादा पूरा करे और पढ़ाई पूरी होने तक बैंक में जमा पैसों को न छुए।

आखिर वह दिन भी आया, जब उसकी पढ़ाई पूरी हो गई। उस दिन पिता ने उसे बताया "बेटे, मैंने जीवन भर कोयले की खुदाई की है और मुझे बदले में कुछ नहीं मिला। बैंक में एक शिलिंग या पेनी भी जमा नहीं है और कभी थी भी नहीं। मैं चाहता हूँ कि तुम अपने दिल की गहराई में खुदाई करो और अपने भीतर सोने की खदान का ख़ज़ाना खोजो, जो असीमित है, शाश्वत है और कभी ख़त्म नहीं हो सकता।"

सर्जन ने कहा "एक पल के लिए तो मेरे होश उड़ गए, मैं अवाक रह गया और मेरे मुँह से शब्द नहीं निकले। कुछ मिनट बाद जब मैं इस सदमे से उबरा, तो हम दोनों ही ठहाके लगाने लगे। फिर मुझे अहसास हुआ कि डैडी दरअसल मुझे दौलत का अहसास दिलाना चाहते थे, जो इस बात से उत्पन्न होता था कि ज़रूरत पड़ने पर मेरी मदद के लिए बैंक में बहुत सा पैसा जमा है। इससे मुझे साहस, भरोसा और आत्मविश्वास मिला। इससे मुझे ख़ुद पर भरोसा रहा। मेरे पास बैंक में तीन हज़ार पौंड जमा हैं, इस विश्वास से वह उद्देश्य उसी तरह पूरा हुआ, जैसे वे सचमुच मेरे नाम पर जमा थे।"

इस सर्जन ने टिप्पणी की कि उसने बाहरी तौर पर जो कुछ भी हासिल किया था, वह उसकी आंतरिक आस्था, स्वप्न और विश्वास का प्रतीक है। इस मेडिकल विद्यार्थी की मदद करने के लिए पिता के पास पैसा नहीं था, एक पाई भी नहीं थी, लेकिन ज़रा उन चमत्कारों को तो देखें, जो उसके विश्वास की बदौलत उसके जीवन में हुए! यह संसार के हर व्यक्ति के संदर्भ में सही है। जीवन में उसके लक्ष्य की सफलता, उपलब्धि और पूर्णता का रहस्य उसके विचारों तथा भावों की चमत्कारी शक्ति खोजने में निहित है। हमारे सर्जन मित्र ने विश्वास के साथ कार्य किया- मानो पैसा पहले से ही मौजूद हो!

उसका निवेश कई गुना हो गया

हाल ही में मुझे एक आदमी का पत्र मिला जिसने "आपका अवचेतन एक बैंक है" नामक मेरा व्याख्यान सुना था। मैं आपको उस पत्र का एक अंश बताना चाहता हूँ:

"प्रिय डॉ. मर्फ़ी, मैंने आपका व्याख्यान सुना, जिसमें आपने बैंक के रूप में अवचेतन मन का इस्तेमाल करने की बात कही थी। मैंने पहले कभी इस तरह से नहीं सोचा था, लेकिन अचानक मुझे अहसास हुआ कि मेरे विचार, मानसिक चित्र, मनोदशा और नज़रिए अवचेतन में किए गए निवेश हैं। मुझे यह समझ में आ गया कि मैं घटिया विचारक हूँ, क्योंकि मैं अपने अवचेतन मन में द्वेष, आलस्य, टालमटोल, चिंता और आत्म-निंदा की धनराशियाँ जमा कर रहा हूँ। दरअसल मेरे अवचेतन मन ने इन सभी नकारात्मक चीज़ों को कई गुना कर दिया और अल्सर की वजह से मुझे अस्पताल पहुँचा दिया।

"आपका व्याख्यान सुने हुए मुझे तीन महीने हो चुके हैं। जिस दिन मैंने इसे सुना, उसी रात मैं ईश्वर के बारे में यह सोचने लगा कि वह स्वर्ग में बैठा इंसान नहीं है, जिसमें मनुष्य की ख़ामियों और कमज़ोरियाँ हों। इसके बजाय वह तो असीमित प्रज्ञा है, जो सभी चीज़ों में निहित है, पूरी सृष्टि को मार्गदर्शन देती है और मेरे आग्रह पर तत्काल प्रतिक्रिया करती है। मैं भावना और चेतना के साथ यह प्रबल दावा करने लगा: 'ईश्वर की शक्ति. शांति. बुद्धि और ख़ुशी अब मेरी है। उसका प्रेम मेरी आत्मा में भरता है और उसका प्रकाश मुझे मानव जाति की सेवा के बेहतर तरीक़े दिखाता है।'

"जब से मैं अपने व्यक्तिगत बैंक (अवचेतन मन) में ये विचार जमा करने लगा हूँ, सोने की आंतरिक खदान से अद्‌भुत सृजनात्मक विचार निकलकर मेरे पास आने लगे हैं। मेरा व्यवसाय तीन गुना बढ़ चुका है। मैं स्वस्थ, सुखी, खुश और ईश्वर की हँसी से ओत-प्रोत हूँ। यह अद्‌भुत है!"

अब आप अमीर हैं!

शांति की अवस्था में रहते हुए ख़ुद से कहें, "मैं अपने अंतर्मन की गहराई में जाने वाला हूँ, जिससे बेहतर सेवा देने और सफलता हासिल करने के कुछ ज़बर्दस्त विचार प्रकट होंगे। मैं जानता हूँ कि मुझमें ऐसे आतरिक संसाधन, शक्तियाँ, गुण और योग्यताएँ हैं, जिनका मैंने कभी दोहन नहीं किया है। मैं जानता हूँ कि जैसे ही मैं अपने आंतरिक

ख़ज़ाने का चेतन रूप से सृजन करूँगा, असीम प्रज्ञा उन्हें मेरे समक्ष तुरंत ही प्रकट कर देगी।”

आप यह देखकर दंग रह जाएँगे कि आपके मन में आने वाले नए विचार दौलत में कितनी आसानी से बदल सकते हैं। अपने अंदर छिपे ख़ज़ाने को पहचानें, अपने विचारों को व्यवस्थित करें और उनके अनुरूप कार्य करें।

आपके विचार का मूल्य अरबों डॉलर हो सकता है

प्रलय के बाद से कोयला ज़मीन के नीचे चट्टानों में दबा हुआ था। दौलत की तलाश करने वाले मज़दूर ने उसे सतह पर लाने के लिए एक जगह चुनी। इस खोज का परिणाम यह हुआ कि संसार भर में लाखों लोगों को रोज़गार मिला और यह बेशुमार धन-दौलत पाने का साधन बन गया। कोयला उष्णबंधीय गर्मी को उत्तर ध्रुव तक पहुँचाता है और ध्रुवीय इलाक़े के घरों को भी लॉस एंजेलिस जितना गर्म बना देता है।

स्कॉटलैंड के एक युवा लड़के ने एक ऐसे नए विचार के लिए अपने दिमाग़ में खुदाई की, जो उसके और अन्य लोगों के लिए पैसा बनाए। जब चाय की केतली से निकली भाप के दबाव से केतली का ढक्कन गिर गया, तो इस दृश्य में उसने दौलत की कल्पना की। अचानक उसके दिमाग़ में भाप की प्रबल शक्ति का विचार कौंधा। यह विचार दरअसल भाप के इंजन की वास्तविक शुरुआत था, जिसने पूरे संसार में क्रांति कर दी, करोड़ों लोगों को रोज़गार दिया और इस तरह पूरे संसार में बेशुमार दौलत का सृजन किया।

किसी ने मुझे हाल में हेनरी फ़ोर्ड का एक कथन बताया। उनसे किसी ने पूछा था कि अगर वे अपनी सारी दौलत और व्यवसाय गँवा दें, तो वे क्या करेंगे? उनका जवाब था “मैं सभी लोगों की किसी दूसरी मूलभूत व बुनियादी ज़रूरत के बारे में सोचूँगा। इसके बाद मैं किसी भी दूसरे व्यक्ति से ज़्यादा सस्ते और अच्छे तरीक़े से उस आवश्यकता को पूरी करूँगा। पाँच साल में मैं दोबारा करोड़पति बन जाऊँगा।”

इस इलेक्ट्रॉनिक और अंतरिक्ष युग में ज़बर्दस्त अवसर आपकी राह देख रहे हैं। अपने अधिक गहरे मस्तिष्क से कहें कि वह आपको नए रचनात्मक और प्रेरक विचार दे। इससे आप अपने अवचेतन मन की सृजनात्मक शक्तियों को मुक्त कर देंगे। आप मानवता की एक ऐसी आवश्यकता खोज लेंगे, जो समय के साथ आपको अमीर बनाएगी और आशीष देगी। इसी समय अपने भीतर क़ैद उस वैभव को मुक्त करना शुरू करें!

आपकी दौलत आपसे शुरू होती है

दौलत और ग़रीबी की जड़ें आपके दिमाग़ में होती हैं। आपको बिलकुल स्पष्ट निर्णय लेना चाहिए कि आप दौलतमंद और सफल बनना चाहते हैं। दौलत संयोग, क़िस्मत या तक़दीर की बात नहीं है। आपके पास सिर्फ़ वही अवसर होता है, जिसे आप ख़ुद बनाते हैं।

एक प्रतिभाशाली युवा एक्ज़ीक्यूटिव ने मुझसे कहा था, “मैं बहुत मेहनत करता हूँ और बहुत लंबे समय तक काम करता हूँ। मैनेजमेंट को मैंने जो सुझाव दिए थे, उनकी बदौलत कंपनी को बहुत फ़ायदा हुआ है। लेकिन पिछले तीन सालों से मुझे प्रमोशन के लिए दरकिनार किया गया है। यहाँ तक कि मेरे कई अधीनस्थों को भी प्रमोशन और वेतनवृद्धियाँ मिल चुकी हैं।”

यह आदमी मेहनती था, बुद्धिमान था और ज़ाहिर है, अपने काम में कड़ी मेहनत करता था। समस्या की जड़ पूर्व-पत्नी के साथ उसका संबंध था।

पिछले तीन सालों से उनमें ज़मीन-जायदाद, गुज़ारा भत्ते और परवरिश के लिए बच्चों के बँटवारे को लेकर मुकदमा चल रहा था। अचेतन रूप से मुकदमा ख़त्म होने तक वह और ज़्यादा पैसे नहीं कमाना चाहता था, क्योंकि उसे लगता था कि वह जितना ज़्यादा कमाएगा, अदालत पत्नी को उतना ही ज़्यादा गुज़ारा भत्ता दिलाएगी। वह अदालत द्वारा दिलाए जा रहे अंतरिम भत्ते को भी अप्रसन्नता से दे रहा था, क्योंकि उसे महसूस होता था कि यह बहुत ज़्यादा है। वह अंतिम निर्णय का इंतज़ार कर रहा था।

मैंने उसे समझाया कि अवचेतन मन किस तरह काम करता है। मैं समझाया कि दरअसल वह ख़ुद ही यह आदेश दे रहा है कि उसे और ज़्यादा पैसा नहीं चाहिए। भावविभोर होकर निश्चित ही उसने नकारात्मक अवधारणाओं को अपना लिया है। यही नहीं, उसका द्वेष, शत्रुता, विरोध और पूर्व-पत्नी से दौलत रोककर रखने की उसकी इच्छा अवचेतन मन पर छाप छोड़ चुकी है। यह उसके आर्थिक जीवन के सभी पहलुओं में प्रकट हो रही है।

जब आप मानसिक रूप से किसी दूसरे से दौलत रोककर रखना चाहते हैं, तो आप उसे अपने पास आने से भी रोक देते हैं। इसीलिए बाइबल का स्वर्णिम नियम आपसे कहता है कि अपने पडोसी के बारे में अच्छा सोचें, अच्छा बोलें और अच्छे काम करें। कभी भी नफ़रत, द्वेष या आलोचना न करें, क्योंकि आप अपनी सृष्टि के एकमात्र विचारक हैं और आपके नकारात्मक विचार आपके जीवन के सभी क्षेत्रों में नकारात्मक चीज़ें ले आएँगे। आपका अवचेतन मन आपके जीवन के समग्रित विचारों को बुनकर आपके मानस पटल पर व्यक्त कर रहा है।

इस युवा एक्ज़ीक्यूटिव को अहसास हो गया कि वह ख़ुद ही अपनी प्रगति और प्रमोशन को रोक रहा है। उसकी समस्या का जवाब उसके भीतर था। वह अपने भीतर उस निश्चित बिंदु पर आ गया, जहाँ उसे अहसास हुआ कि प्रेम नफ़रत को बाहर निकाल देता है। वह समझ गया कि अगर वह अपनी पूर्व-पत्नी तथा बच्चों के लिए स्वास्थ्य, प्रेम, शांति और समृद्धि की कामना करेगा, तो वह इन सभी को अपनी ओर भी आकर्षित करेगा। उसे यह भी समझ में आ गया कि तीन बच्चों की परवरिश के लिए पत्नी को पर्याप्त धन पाने का अधिकार है, इसलिए उसे यह धन ख़ुशी-ख़ुशी तथा प्रेमपूर्वक देना चाहिए। उसे भान हुआ कि अगर वह खुले मन से धन देगा, तो यह कई गुना होकर वापस लौटेगा। उसने नीचे दी गई प्रार्थना बार-बार की:

“ईश्वर प्रेम है और ईश्वर जीवन है। यह जीवन एक है और अखंड है। जीवन सभी लोगों में और उनके माध्यम से ख़ुद को प्रकट करता है। यह मेरे अस्तित्व के केंद्र में है। मैं

जानता हूँ कि प्रकाश अंधकार को हटा देता है। इसी तरह ख़रा प्रेम सारी बुराई पर विजय पा लेता है। प्रेम की शक्ति का मेरा ज्ञान सभी नकारात्मक परिस्थितियों पर इसी समय विजय पाता है। प्रेम और नफ़रत एक साथ नहीं रह सकते। मैं अब ईश्वर के प्रकाश को अपने दिमाग़ के चिंतातुर या भयभीत विचारों की ओर मोड़ता हूँ और वे ग़ायब हो जाते हैं। भोर (सत्य) का प्रकाश प्रकट होता है और अंधकार (डर और शंका) ग़ायब हो जाता है।

"मैं जानता हूँ कि दैवीय प्रेम मेरा ध्यान रख रहा है, मेरा मार्गदर्शन कर रहा है और मेरे लिए रास्ता साफ़ कर रहा है। मैं देवत्व की ओर बढ़ रहा हूँ। मैं अब अपने सभी विचारों, शब्दों और कार्यों में ईश्वर को व्यक्त कर रहा हूँ। प्रेम ही ईश्वर का स्वभाव है। मुझे ज्ञान है कि पूर्ण प्रेम डर को दूर भगा देता है।"

कुछ ही सप्ताह में इस युवक के भीतर कायाकल्प हो गया और वह दयालु, प्रेमपूर्ण तथा स्नेही बन गया। उसका आध्यात्मिक पुनर्जन्म हो गया। उसकी आर्थिक स्थिति तुरंत बेहतर हो गई और उसे बहुत अच्छा प्रमोशन मिल गया।

परिणाम बहुत ही सुखद रहा। उसकी पूर्व-पत्नी ने समझौते की पहल की और प्रेम के जिस दीपक ने उन्हें पहली बार एक किया था, वही उन्हें उस वेदी पर ले आया, जहाँ एक बार फिर उनके दो दिल एक हो गए... ईश्वर ने जिन दो लोगों को एक बंधन में बाँधा है, उसे किसी इंसान को अलग नहीं करना चाहिए। (मैथयू 19:6)

प्रार्थना करके अमीर कैसे बनें

यहाँ पर आर्थिक संपन्नता के लिए एक अचूक दैनिक प्रार्थना बताई जा रही है:

"मैं जानता हूँ कि इसी पल मेरी भलाई की संभावना मौजूद है। मुझे दिल से यक़ीन है कि मैं अपने लिए सद्भाव, स्वास्थ्य, शांति और ख़ुशी की भविष्यवाणी कर सकता हूँ। मैं इसी समय शांति, सफलता और दौलत के विचारों को अपने मन के सिंहासन पर बैठाता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि ये विचार (बीज) उगेंगे और मेरे अनुभव में लहलहाएँगे। मैं माली हूँ। मैं जो बोता हूँ, वही काटूँगा। मैं ईश्वरीय विचारों (बीजों) को बोता हूँ। ये अद्भुत बीज हैं शांति, सफलता, संपन्नता और सद्भाव। इनकी फ़सल अद्भुत है।

"इस पल के बाद मैं अपने अवचेतन मन में शांति, आत्मविश्वास, दौलत और संतुलन के विचार या बीज जमा कर रहा हूँ। मैं जो अद्भुत बीज बो रहा हूँ, उनके फल ग्रहण कर रहा हूँ। मैं इस तथ्य को मानता और विश्वास करता हूँ कि मेरी इच्छा अवचेतन में बोया गया एक बीज है। इसकी वास्तविकता को महसूस करके मैं इसे वास्तविक बनाता हूँ। मैं अपनी इच्छा की वास्तविकता को उसी तरीक़े से स्वीकार करता हूँ, जिस तरह मैं इसे स्वीकार करता हूँ कि ज़मीन में बोया गया बीज उग आएगा। मैं जानता हूँ कि यह अंधकार में उगता है। मेरी इच्छा या मनचाही वस्तु भी मेरे अवचेतन मन के अंधकार में उगती है। कुछ समय में बीज की तरह ही यह ज़मीन के ऊपर आ जाती है और किसी स्थिति, परिस्थिति या घटना के रूप में दिखने लगती है। यही मेरी आदर्श आर्थिक संपन्नता का सच्चा स्रोत है।

“असीम प्रज्ञा सभी तरीक़ों से मुझे नियंत्रित करती है और मार्गदर्शन देती है। मैं उन सभी चीज़ों पर मनन करता हूँ, जो सच्ची, ईमानदार, न्यायपूर्ण, प्रेमपूर्ण और अच्छी हैं। मैं इन चीज़ों पर विचार केंद्रित करता हूँ और भलाई के मेरे विचारों के साथ ईश्वर की शक्ति है। मैं शांत हूँ, क्योंकि मैं बेशुमार दौलत का स्वामी हूँ।”

अंत में, बंधुओ, जो भी चीज़ें सात्विक हैं, जो भी चीज़ें सुदंर हैं, जो भी चीज़ें अच्छी है; यदि कोई सद्‌गुण है और यदि कोई महिमा है तो इन्हीं चीज़ों के बारे में सोचें। (फ़िलिप्पियन्स 4:8)

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. जीवन की असली दौलत आपके अवचेतन की गहराइयों में दबी हुई है। खज़ाना आपके भीतर है और प्रार्थना के माध्यम से आप इस बेशुमार दौलत को ज़मीन से निकाल सकते हैं।

2. चतुर पत्नी अपने पति की प्रेमिका या रखैल को शक्ति नहीं देती है। वह जानती है कि उसका पति मानसिक रूप से बीमार है और दूसरी महिला कुंठित, मनोरोगी तथा लज्जित है। वह अपने पति से खुलकर बात करती है और प्रार्थना करती रहती है।

3. दौलत दिमाग़ में होती है। आस्था, आत्मविश्वास, उत्साह, जोश और स्वयं में विश्वास रखें, क्योंकि यही सेहत, सफलता, दौलत और उपलब्धि में बदलते हैं। एक बहुत ग़रीब लड़का सिर्फ़ इसलिए मशहूर सर्जन बन पाया, क्योंकि उसे विश्वास था कि उसके पिता के पास मेडिकल कॉलेज की पढ़ाई का ख़र्च उठाने के लिए बहुत पैसा है, हालाँकि उसके पिता के पास उसकी मदद करने के लिए एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। उस लड़के के दिमाग़ में विश्वास द्वारा उत्पन्न किए जादू को देखें! अपने विचार तथा भावना की बारीकियों को पहचानें और अपने जीवन का कायाकल्प कर लें!

4. आपके विचार, मानसिक कल्पनाएँ, मान्यताएँ, नज़रिए और भावनाएँ वे निवेश हैं, जिन्हें आप अपने अवचेतन मन में जमा करते हैं। आपका अवचेतन चक्रवृद्धि ब्याज देता है, यानी कि वह आपकी जमा की हुई चीज़ों को कई गुना कर देता है। अपने अवचेतन पर प्रेम, आस्था, विश्वास, सही कर्म, मार्गदर्शन, संपन्नता, सुरक्षा और अच्छे स्वभाव की छाप छोड़ेंगे, तो आपको जब भी प्रेम, आत्मविश्वास या किसी समस्या के जवाब की ज़रूरत होगी, आपका अवचेतन आपको वह प्रदान कर देगा। यही सोने की आंतरिक खदान से ख़ज़ाना निकालने का तरीक़ा है।

5. आपके पास सिर्फ़ वही अवसर होता है जिसे आप स्वयं बनाते हैं। यदि आप किसी दूसरे की दौलत से द्वेष करते हैं या अगर आप मानसिक रूप से उसकी भलाई को रोकना चाहते हैं, तो आप ख़ुद को न सिर्फ़ चोट पहुँचा रहे होते हैं, बल्कि जीवन की दौलतों से भी वंचित रख रहे होते हैं। आप अपनी सृष्टि के एकमात्र विचारक हैं और आप जो सोचते हैं, उसका सृजन करते हैं। सभी मनुष्यों के लिए स्वर्ग की दौलत की इच्छा करके दौलत का सृजन करें।

अध्याय छः

दान का जादुई नियम

टाइद शब्द का अर्थ है दसवाँ हिस्सा - मनुष्य की आमदनी का वह हिस्सा, जो युगों-युगों से पवित्र उद्देश्यों के लिए समर्पित होता रहा है। प्रारंभिक काल से खेतों, फलों और मवेशियों से होने वाली सालाना आमदनी का कुछ हिस्सा ईश्वर की सेवा में अर्पित किया जाता रहा है। यह परंपरा बैबीलोनिया से रोम तक के निवासियों में प्रचलित थी।

दान के नियम को लेकर बाइबल में एकरूपता का अभाव है। इसका मूल कारण यह है कि दान का आम सिद्धांत अलग-अलग युगों में अलग-अलग तरीक़ों से प्रयुक्त होता रहा और इसमें धार्मिक तथा राजनीतिक दबावों की वजह से बदलाव होते रहे।

दान जीवन के बुनियादी नियमों में से एक है और इसकी परंपरा अतीत में इतनी पहले शुरू हुई कि हम पता नहीं लगा सकते कि यह कब शुरू हुई। पैदावार पाने के लिए किसान को दान देना होता है। उसका दान फ़सल का वह दसवाँ हिस्सा होता है, जो वह अनाज, मक्का, जौ, या ओट्स के बीज के रूप में बोता है। यदि वह यह दान न दे, तो उसे फ़सल ही नहीं मिल पाएगी।

दौलत का दान देने का आदर्श तरीक़ा यह है कि आप अपने धन, ज़मीन, शेयरों, बॉण्ड्स या किसी अन्य प्रकार की भौतिक संपदा का एक निश्चित प्रतिशत निकालें और उसे सत्य के प्रचार-प्रसार के लिए दान दें- आम तौर पर उन चर्चों या परोपकारी संस्थाओं के सहयोग के लिए, जो ईश्वर के शाश्वत सत्य के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं।

दान का वास्तविक अर्थ

दान केवल वह पैसा ही नहीं है, जिसे आप अपनी मनपसंद धर्मप्रचारक संस्था और आध्यात्मिक गतिविधि की मदद करने के लिए खुले हाथ से देते हैं। इसका संबंध तो आपकी मान्यताओं, विश्वासों, अनुमानों और धारणाओं से भी है, जिन्हें आप अपने, दूसरों तथा पूरे संसार के बारे में मन ही मन सत्य मानते हैं। आप चेतन रूप से अपने, ईश्वर और सृष्टि के बारे में जिसे सच मानते हैं और जिस पर विश्वास करते हैं, वह भी अवचेतन मन के ख़ज़ाने को दिए निवेश (छाप) ही हैं।

याद रखें कि असीम प्रज्ञा (ईश्वर) आपके विचार की प्रकृति के अनुसार प्रतिक्रिया करती है। ईश्वर आपके स्वयं के विचार, कल्पना और विश्वास के अलावा आपके लिए कुछ नहीं करेगा। ईश्वर ने आपका सृजन किया है और उसने सृष्टि तथा उसकी सभी चीज़ों का सृजन किया है। आप अपने भीतर की शक्ति और बुद्धिमत्ता का लाभ उठाने के

लिए यहाँ आए हैं। आप भरपूर, ख़ुशहाल और समृद्ध जीवन जीने के लिए यहाँ आए हैं। आप दूसरों की दौलत, समृद्धि, सफलता और अच्छाई में योगदान देने के लिए भी यहाँ आए हैं।

एक वकील को दान के जादू का पता चला

जब मेरे एक वकील मित्र ने मुझे अपनी एक समस्या बताई, तो मैंने उसे दान का आध्यात्मिक अर्थ समझाया। उस वकील को अपने मुवक्किल की ओर से न्यू ऑरलियन्स जाना था। मुवक्किल ने उसे बताया कि लुसियाना के जिस वकील से उसे मिलना है, वह बदमिज़ाज, झगड़ालू, चिड़चिड़ा और बहुत असहयोगी है।

मैंने वकील को सुझाव दिया कि वह दान दे, यानी यह मान ले कि ईश्वर का कार्य सामने वाले वकील के दिलोदिमाग़ में हो रहा है। मैंने कहा कि उसका मानसिक विवेक या विश्वास ऐसा होना चाहिए कि एक सामंजस्यपूर्ण और दैवी समाधान निकल आए, जिससे सभी का भला हो।

फलस्वरूप, यात्रा से पहले मेरे वकील मित्र ने बहुत बार प्रार्थना की कि न्यू ऑरलियन्स में दूसरे वकील के साथ होने वाली उसकी मुलाक़ात में सद्भाव, शांति, प्रेम और समझ का माहौल बना रहे। जब आख़िरकार मुलाक़ात हुई, तो यह सचमुच बहुत सहयोग, सद्भाव और अच्छाई के माहौल में हुई। इससे सभी संबद्ध लोगों के लिए संतोषजनक क़ानूनी और आर्थिक समझौता संभव हुआ।

क्रिया और प्रतिक्रिया शाश्वत व निरंतर हैं। आपका विचार क्रिया है। आपके विचार की प्रकृति के अनुरूप आपका अवचेतन मन प्रतिक्रिया करता है।

सबसे महत्वपूर्ण बिंदु यह अहसास करना है कि किसी भी मुलाक़ात, सौदे या गतिविधि के पीछे के आध्यात्मिक विचार (दान) से ही परिणाम मिलते हैं। ऊपर दिए उदाहरण में वकील को इस गहन सत्य का तुरंत अहसास हो गया कि हर चीज़ आपकी मान्यता और विश्वास के अनुरूप ढल जाती है।

दान के नियम ने सेल्स मैनेजर के लिए चमत्कार कर दिया

एक शीर्ष सेल्स मैनेजर मेरे व्याख्यान सुनने आता है। उसने एक बार मुझे बताया कि वह अपने दो सौ सेल्समैनों के सामने सेल्स टॉक देने से पहले दान देता है। अगर उसे एक घंटे तक बोलना है, तो वह ईश्वर को उसका दसवाँ हिस्सा देता है। एक घंटे में साठ मिनट होते हैं और वह अपनी सेल्स टीम को संबोधित करने से पहले नियमित रूप से दस मिनट तक प्रार्थना और साधना करता है। वह इस तरह प्रार्थना करता है:

“ईश्वर की बुद्धिमत्ता, प्रेम और शक्ति मेरे मन में भरी हुई है। मेरे सभी सेल्समैन नए विचारों से मार्गदर्शित, निर्देशित, प्रेरित और ग्रहणशील हैं। मुझे अपने भाषण की प्रेरणा और प्रकाश ऊपर से प्राप्त हो रहा है। मेरे दिमाग़ में मौलिक रचनात्मक विचार आ रहे हैं, जिनसे सेल्समैनों, ग्राहकों और हर संबंधित व्यक्ति का भला होगा। असीम प्रज्ञा मेरे

माध्यम से सोचती, बोलती और कार्य करती है। मेरा भाषण सुनने वाले सभी लोगों को तेजोमय पिता से प्राप्त होने वाले हर अच्छे और आदर्श उपहार का वरदान मिल रहा है।"

इस सेल्स मैनेजर ने मुझे बताया कि जब से उसने ईश्वर को अपना कुछ समय दान में देना शुरू किया, तब से उसने अपने जीवन के कई सबसे अच्छे उद्‌बोधन दिए हैं। उसके उत्कृष्ट कार्य के फलस्वरूप कुछ समय पहले ही उसे उसके मल्टी-मिलियन डॉलर कॉरपोरेशन का एक्ज़ीक्यूटिव वाइस-प्रेसिडेंट बना दिया गया है।

एक इंजीनियर ने दान देकर हवा का रुख़ बदल दिया

एक केमिकल इंजीनियर एक कॉरपोरेशन का वाइस प्रेसिडेंट है। उसने हाल में मुझे बताया कि उनकी कंपनी जिस दूसरी कंपनी को रिसर्च प्रॉडक्ट्स सप्लाई करती थी, उस पर 10,000 डॉलर का उधार था, जिसे कोई भी वसूल नहीं कर पा रहा था।

उसने मुझे बताया कि उसने अपने ग्राहक से मिलकर उसमें विश्वास जताया। इंजीनियर ने कहा, "मैंने उसे बताया कि हमें उस पर भरोसा है, विश्वास है और हम जानते हैं कि वह हमें पूरा भुगतान कर देगा। मैंने उसे डिनर के लिए आमंत्रित किया और उससे कहा कि हम उसकी सत्यनिष्ठा और ईमानदारी का सम्मान करते हैं। हमने कहा कि उसने बीस साल से ज़्यादा समय से हमारे साथ अपने सभी सौदों में तुरंत भुगतान किया था, इसलिए हमें उस पर भरोसा है। मैंने उसे यह भी बताया कि उस पर हमारा विश्वास कभी कम नहीं हुआ और मैं व्यक्तिगत रूप से उसकी समृद्धि, प्रगति तथा विस्तार के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।"

एक सप्ताह गुज़रने पर उसे उस ग्राहक का पत्र मिला। पत्र में उसने बताया कि वह दरअसल दिवालिएपन का आवेदन देने के बारे में सोच रहा था, लेकिन "आपकी बात से मुझमें आत्मविश्वास आ गया। अब मैं दोबारा ख़ुद पर भरोसा करने लगा हूँ और सफल होने की अपनी योग्यता में भी। हवा का रुख़ बदल गया और मेरे कुछ सुस्त ग्राहकों ने अब मुझे भुगतान कर दिया है। इसलिए अब मैं आपको पूरा भुगतान कर रहा हूँ!"

वाइस प्रेसिडेंट ने उस आदमी की प्रशंसा की थी, उसके लिए प्रार्थना की थी और उसे ऊपर उठाया था। उस आदमी के हृदय ने वाइस प्रेसिडेंट के विश्वास पर प्रतिक्रिया की। आर्थिक स्थिति उसी अनुरूप अपने आप बेहतर हो गई।

किस तरह एक कलाकार ने सुंदरता के लिए दान दिया

एक नामी चित्रकार ने मुझे एक बार बताया था कि सुंदरता के लिए दान देने से उसे कितने बेहतरीन परिणाम मिले। वह इस तरह नियमित रूप से दान देता है:

"ईश्वर अनिर्वचनीय सौंदर्य है, पूर्ण सामंजस्य है और असीम प्रेम है। असीम का अनंत सौंदर्य मेरे मस्तिष्क में पूरे गौरव और महिमा के साथ प्रवाहित होता है। मेरी उँगलियों को दैवी मार्गदर्शन मिल रहा है कि वे कैनवास पर सौंदर्य, संयोजन, संतुलन

और सुडौल दृश्य उकेरें। मैं अपने कैनवास पर जो भी तस्वीर बनाता हूँ, वह सौंदर्य से भरी होगी और उसे देखकर हमेशा आनंद मिलेगा। हर दृश्य और हर चित्र से मनुष्य में ईश्वर की प्रतिभा प्रेरित हो जाएगी।"

उसने अपने अवचेतन मन को अपना दान (सौंदर्य का विचार) दिया और अवचेतन ने ख़ुद पर छोड़ी गई छाप को कई गुना कर दिया। उसने इसे सौंदर्य से ओत-प्रोत किया और उसके अवचेतन ने प्रतिक्रिया करके उसे अद्‌भुत चित्र बनाने का सामर्थ्य दिया। क्या आपको लगता है कि उसे अपने चित्र बेहतरीन दामों पर बेचने में कोई मुश्किल आई होगी?

किस तरह उस महिला ने प्रेम के लिए दान दिया

एक रिटायर्ड स्कूल टीचर कैलिफ़ोर्निया में रह रही थी। उसकी बहुत से रिटायर्ड लोगों से पहचान थी, जो लगातार बता रहते थे कि वे कितने अकेले, हताश और दुखी हैं, क्योंकि अपनी कम पेंशन में वे घूम-फिर नहीं सकते थे और अपनी मनचाही चीज़ें नहीं कर सकते थे। उसने विचारों की सीमित करने वाली इस आदत से बचने का निर्णय लिया। अपने प्रार्थना सत्रों में कई रात उसने इस तरह दान दिया:

"ईश्वर का प्रेम मेरी आत्मा को भरता है और मैं अपने चारों ओर के तथा हर जगह के सभी लोगों के प्रति प्रेम व सद्‌भाव संप्रेषित करती हूँ। ईश्वर का प्रेम मेरे माध्यम से सद्‌भाव, प्रेम, साहचर्य, दौलत और सच्ची अभिव्यक्ति के रूप में प्रवाहित होता है। ईश्वर मेरा मार्गदर्शक है और मुझे कभी धन, प्रेम, सौंदर्य या साहचर्य की कमी नहीं पड़ेगी। ईश्वर मेरी प्रार्थना को इसी समय पूरा करता है, जिसके लिए मैं धन्यवाद देती हूँ।"

कुछ सप्ताह बाद इस रिटायर्ड स्कूल टीचर को एक अमीर महिला ने साथी और दुभाषिए के रूप में आमंत्रित किया, जो सैर-सपाटे और कामकाज के सिलसिले में फ़्रांस, जर्मनी और स्विट्ज़रलैंड जा रही थी। रिटायर्ड स्कूल टीचर का जर्मन और फ़्रांसीसी भाषा का ज्ञान, जो पहले बच्चों को शिक्षा देने तक ही सीमित था, बहुत कारगर साबित हुआ और उसे अपनी सेवाओं के बदले अच्छा भुगतान मिला। उसने मुझे पत्र लिखकर बताया कि इस विदेश-यात्रा में उसे जीवन में सबसे ज़्यादा आनंद आया। अब उसकी नौकरी स्थायी हो चुकी है, क्योंकि वह अमीर महिला उसे अपने लिए अनिवार्य मानती है। इस महिला ने निःस्वार्थ रूप से दान दिया और उसे उसकी उम्मीद से अधिक प्रतिफल मिला। उसका रहस्य अब आपका रहस्य है।

देने और पाने का नियम

आप जितना ज़्यादा प्रेम और सद्‌भावना देते हैं, बदले में आपको उतना ही ज़्यादा मिलेगा। दान का नियम अवश्यंभावी रूप से यह तय करता है कि हम जो भी देते हैं- चाहे वह सद्‌भावना हो या दुर्भावना- वह हमारी ओर लौटकर आएगा और प्राय: कई गुना होकर आएगा। यह अटल नियम है कि समान चीज़ें समान चीज़ों को आकर्षित करती हैं और आप अपने अवचेतन में जो भी बोते हैं, वही आप जीवन में परिस्थितियों,

अनुभवों तथा घटनाओं की फ़सल के रूप में काटेंगे।

खुलकर और ख़ुशी-ख़ुशी दें

ज़रूरी नहीं है कि दान में दस प्रतिशत धन ही दिया जाए। बाइबल में दसवें हिस्से का जो ज़िक्र है, उसका वास्तविक मतलब है कोई भी निश्चित प्रतिशत, जिसे आप अपने मन में तय करते हैं कि आप उसे ख़ुशी-ख़ुशी और खुलकर देना चाहते हैं।

मिसाल के तौर पर, मान लें कि आप हर रविवार को अपनी पसंदीदा आध्यात्मिक गतिविधि में पाँच डॉलर दान देते हैं। यह रक़म खुलकर, ख़ुशी के साथ, प्रेम के साथ और पूरी उन्मुक्तता से दी जानी चाहिए। इसे देते समय आपको यह विश्वास होना चाहिए कि ईश्वर ही संपन्नता का शाश्वत स्रोत है और उसके माध्यम से आपकी सारी आवश्यकताएँ हर समय, हर जगह तुरंत पूरी होती हैं। किसी को पाँच डॉलर देते वक़्त अगर आपको अभाव या कमी का अहसास होता है, तो वह सच्चा दान नहीं है। कर्तव्य या डर के भाव से देना या मन मारकर देना दान नहीं है। इसके विपरीत, इस प्रकार का मानसिक नज़रिया अभाव को आकर्षित करेगा।

आपका दान किस प्रकार अत्यधिक बढ़ता है

जब आप नियम से दान करें, तो एक राशि चुन लें, जिसके बारे में आपको दिल में महसूस होता है कि आप उसे देना चाहते हैं। फिर मन ही मन या ज़ोर से संकल्प करें: “मैं यह धन पूरी इच्छा से दान करता हूँ और ईश्वर इसे कई गुना बढ़ा देता है।”

जब आप यह करते हैं, तो आप अपने अवचेतन में प्रचुर दौलत का विचार बो रहे होते हैं, जो आपकी दौलत को असंख्य तरीक़ों से बढ़ा देगा। बाइबल के उद्धरण का यही आशय है:

दो, और तुम्हें दिया जाएगा: लोग तुम्हारी झोली में इतना डालेंगे कि यह छलक पड़ेगा। और जिस पैमाने से तुम दोगे, उसी पैमाने से तुम्हें दिया जाएगा। (ल्यूक 6:38)

अपनी आमदनी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ाएँ

नियमित रूप से सार्थक उद्देश्यों की ख़ातिर बिना शर्त दान दें। जब आप वह राशि देते हैं, जिसके बारे में आप महसूस करते हैं कि आप उसे ख़ुशी-ख़ुशी दान देना चाहते हैं, तो आप दरअसल एक सुदृढ़ आर्थिक दृष्टिकोण से दान दे रहे होते हैं। इस सही और उन्नत नज़रिए से शुरू करने पर आप पाएँगे कि आपके मन में ख़ुशी-ख़ुशी ज़्यादा से ज़्यादा देने की इच्छा होगी, क्योंकि देने और पाने के नियम के आधार पर आपकी आमदनी दिन दूनी रात चौगुनी या इससे भी ज़्यादा तेज़ी से बढ़ती है।

आपने अपने उपहार को दुआ और ख़ुशी के साथ मुक्त किया; आपके अवचेतन मन ने उसे हज़ार गुना बढ़ा दिया। यह नियमित रूप से दान देने वालों के लिए वाकई दौलत बढ़ने की कुंजी है। वे असीमित मस्तिष्क के नियम का इस्तेमाल कर रहे हैं, जो उनके

लिए काम करता है- भले ही उन्हें यह बात मालुम हो या न हो।

किस तरह उसने संपन्नता के लिए दान दिया

एक व्यवसायी ने हाल ही में मुझसे कहा "संसार में बहुत पैसा है- हर चीज़ प्रचुरता में है; और मैं जानता हूँ कि मेरे अवचेतन मन में अंतहीन संसाधन हैं, जिनका मैंने कभी दोहन नहीं किया है। मैंने संपन्नता के लिए व्यक्तिगत रूप से इस तरह दान दिया: मैंने कई बार यह वाक्य कहा, 'ईश्वर मेरी संपन्नता का स्थायी स्रोत है, वह मेरी सारी ज़रूरतें तुरंत पूरी करता है और उसकी दौलत मेरी ओर बिना रुके, अथक तथा अंतहीन रूप से प्रवाहित होती है।"

जब उसने इन सत्यों को दोहराया, तो उसने अपने अवचेतन मन तक यह विचार पहुँचाया कि दौलत सैलाब के रूप में उसकी ओर प्रवाहित हो रही है। यही आर्थिक सफलता का आपका मार्ग भी है।

उसने दान तो दिया. लेकिन अमीर नहीं बन पाया

कुछ समय पहले एक आदमी ने मुझे बताया कि उसने अपने चर्च को नियमित दान दिया, लेकिन इसके बावजूद वह अमीर नहीं बन पाया। बहरहाल, मुझे पता चला कि उसने अपना साप्ताहिक दान पूरे मन से नहीं दिया था और वास्तव में उसे महसूस होता था कि चर्च को दान देने की वजह से उसकी संपत्ति घट रही है। उसके मन में अवरोध थे। हमारी बातचीत के बाद उसने अपना नज़रिया बदल दिया और इसके बाद ख़ुशी-ख़ुशी दौलत दान दी। जल्द ही उसने पाया कि वृद्धि का नियम उसके लिए भी काम करने लगा है।

मैंने उसे यह भी समझाया कि बाइबल में दान का अर्थ विभिन्न परोपकारी संस्थाओं को पैसा देना नहीं है, हालाँकि इस प्रकार की उदारता प्रशंसनीय है। दान में पैसा ईश्वर के सत्य के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से दिया जाना चाहिए। यानी उसके प्रचार-प्रसार के लिए, जहाँ से आपको आध्यात्मिक सहायता और प्रेरणा प्राप्त हो रही है।

उसने कृतज्ञता से कहा, "मुझे यही समझने की ज़रूरत थी। अब मैं दान का वास्तविक अर्थ समझ चुका हूँ।"

वह दान को उलट रहा था

मेरे एक परिचित ने एक बार मुझसे शिकायत करते हुए कहा, "मैं न्यूयॉर्क के एक धार्मिक समूह को हर रविवार बहुत सारा पैसा दान देता हूँ, लेकिन मुझे महीना पूरा करने में मुश्किल आती है।"

मुझे पता चला कि उसका नज़रिया यह रहता था: "मैं बदले में कोई चीज़ नहीं चाहता।" बाइबल कहती है कि जैसा मनुष्य आदेश देगा, वैसा ही होगा। उसने अपने अवचेतन मन को अपना आदेश दे दिया था और अवचेतन ने उसका अक्षरश: पालन

किया।

मैंने उसे समझाया कि वह अपने अच्छे कार्य को कुछ उसी तरह उदासीन कर रहा था, जैसे ज़मीन में बीज बोकर उसे कुछ देर बाद खोदकर देखना, क्योंकि इससे इसका बढ़ना रुक जाता था। उसे समझ में आ गया कि यदि किसान ज़मीन में बीज बोता है, तो उसे अपने आप फ़सल मिलेगी- यानी ज़मीन और मस्तिष्क के नियम समान हैं। वह यह उम्मीद करने लगा कि दौलत के नियम उसके लिए काम कर रहे हैं। इससे उसकी आर्थिक स्थिति में जबर्दस्त सुधार हुआ।

दान देने में बुद्धिमत्ता का अभ्यास करें

आप रिश्तेदारों या ग़रीबों को कैसे दान देते हैं, इस बारे में बहुत सावधान रहें। उन्हें ख़ुद की मदद करने में सक्षम बनाना बिलकुल सही बात है, लेकिन इस बारे में सुनिश्चित कर लें कि आप उनकी पहलशक्ति न छीन लें। अपने पैरों पर खड़े होने और अपनी सर्वश्रेष्ठ योग्यता के अनुरूप समस्याओं से उबरने की प्रेरणा न छीनें। जब लोगों को बड़ी आसानी से और बार-बार मदद मिलती है, तो वे परावलंबी हो जाते हैं और अंतत: खोखले व रोतले बन जाते हैं। आप उन्हें जो सबसे अच्छी चीज़ दे सकते हैं, वह है समृद्ध सोच का नियम।

यह सुनिश्चित करें कि आप नासमझी से दान देकर दूसरों को उनकी छिपी योग्यताओं और गुणों को विकसित तथा अभिव्यक्त करने से न रोकें। आपके नामसझी से दिए गए दान को लेने वाला प्राय: आपसे द्वेष करता है। वह बाध्य महसूस करता है और अपने बारे में आपकी करुणा या कमतरी के विचारों को भाँप लेता है। वह जानता है कि उसे भी आपके जितना दौलतमंद और सफल होना चाहिए। वह अपराधी महसूस करता है, क्योंकि उसे महसूस होता है कि वह अमरबेल की तरह आपका शोषण कर रहा है। इसके फलस्वरूप देने वाले के प्रति अपराधबोध और द्वेष का गहरा अहसास विकसित होता है।

उसे मस्तिष्क के नियमों और अवचेतन की कार्यविधि का ज्ञान दें। इसके बाद उसे कभी बासी रोटियों, पुराने कपड़ों या किसी भी प्रकार के दान की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि आपने उसके सामने यह उजागर कर दिया है कि अनंत ख़ज़ाने तक पहुँचने की क्षमता उसी के भीतर मौजूद है और समय के साथ उसे सारी दौलतें मिल सकती हैं।

आप दिन भर दान दे सकते हैं

दिन भर दान देने का अभ्यास करें। सभी लोगों के प्रति प्रेम, दयालुता, मित्रता, हँसी, विश्वास, उत्साह और सद्भाव व्यक्त करें। आप इनका दसवाँ हिस्सा नहीं दे सकते। ये गुण विभाजित या बहुगुणित नहीं किए जा सकते; ये तो सर्वव्यापी, अजर और असीमित हैं। आपके भीतर मौजूद ये दैवी गुण और विशेषताएँ कभी भी बूढ़े नहीं होते। यही नहीं, प्रेम, कोमलता, दयालुता, अच्छाई, सत्य, सौंदर्य, शांति और ख़ुशी- ये सभी ईश्वर के हैं और वे शाश्वत, सर्वव्यापी तथा अनंत हैं। जो चीज़ वास्तविक है, उसे आप प्रतिशत के

आधार पर नहीं दे सकते- दौलत भी नहीं। लेकिन जब आप सही तरीक़े से दान देते हैं, तो दौलत आपकी ओर उसी परिमाण में प्रवाहित हो सकती है।

स्वर्ग की दौलत दान में दें! प्रोत्साहन, आस्था, आशा, क़द्र, और कृतज्ञता दें। जब आप इस तरह से दान देते रहते हैं, तो ईश्वर आप पर अपने वरदानों की बारिश कर देगा, जिनमें आर्थिक भौतिक वरदान भी शामिल हैं।

तुम अपने सारे दान को खलिहान में ले आओ, ताकि मेरे घर में भोजन रहे, मेज़बानों के स्वामी ने कहा, ताकि जब मैं तुम पर वरदान उड़ेलने के लिए स्वर्ग की खिड़कियाँ खोलूँ, तो उसे पाने के लिए तुम्हारे पास पर्याप्त जगह हो। (मलेची 3:10)

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. दान का अर्थ यह है कि आप सचमुच ईश्वरीय और पवित्र-पावन उद्देश्यों के लिए अपनी आमदनी का एक निश्चित हिस्सा समर्पित करें। दान का मतलब आपके अनुमान, विश्वास और धारणाएँ भी हैं, जो आप अपने भीतर के ख़ज़ाने यानी अपने अवचेतन मन को देते हैं। यही ख़ज़ाना आपको आर्थिक संपन्नता प्रदान करता है।
2. सद्भावनापूर्ण मानवीय संबंधों के लिए यह मानकर दान दें कि सामने वाले के दिलोदिमाग़ में ईश्वर कार्य कर रहा है और आपके बीच एक सामंजस्यपूर्ण तथा दैवी मेल है।
3. किसी भाषण या वार्ता से पहले प्रार्थना और ध्यान में अपने समय का दसवाँ हिस्सा दें। ईश्वर आपको प्रेरित करेगा और आपके जीवन में चमत्कार हो जाएँगे।
4. सामने वाले में विश्वास जताकर दान दें। उसे बता दें कि आपको उस पर पूरा विश्वास है; वह इसी अनुरूप प्रतिक्रिया करेगा।
5. आप यह जानते हुए सौंदर्य के लिए दान दे सकते हैं कि ईश्वर का अनिर्वचनीय सौंदर्य आपके ज़रिए प्रकट हो रहा है और दूसरे आपके कार्यों से प्रेरित हो रहे हैं तथा ऊपर उठ रहे हैं।
6. आप यह दावा करते हुए प्रेम के लिए दान दे सकते हैं कि ईश्वर का प्रेम आपकी आत्मा को भरता है और सभी के प्रति प्रेम व सद्भावना का संचार करता है। ऐसा करने पर आपके जीवन में कई चमत्कार हो जाएँगे।
7. आप दूसरों को जितना अधिक प्रेम व सद्भाव देते हैं, आपको उतना ही ज़्यादा वापस मिलेगा, बहुगुणित होगा और असंख्य तरीक़ों से बढ़ेगा। यह आर्थिक संदर्भ में भी सही है।
8. खुलकर, ख़ुशी-ख़ुशी, प्रेम से और उन्मुक्तता से दें। जब आप ऐसा करेंगे, तो आपको प्रचुर दौलत हमेशा मिलेगी।
9. यह कहते हुए उदारता से दान दें: “मैं यह धन खुलकर दान देता हूँ और ईश्वर इसे कई गुना कर देता है।”

10. अपने दिल में तय करें कि आप ख़ुशी-ख़ुशी कितना देना चाहते हैं। उतनी धनराशि नियमित रूप से दान दें। इसके बाद आप पाएँगे कि आपकी आमदनी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है।

11. यह अहसास करते हुए आर्थिक आपूर्ति के लिए दान दें: "ईश्वर मेरी संपन्नता का स्थायी स्रोत है और वह मेरी सारी आवश्यकताएँ तत्काल पूरी करता है। उसकी दौलत बिना रुके, बिना थके और बिना ख़त्म हुए मेरी ओर प्रवाहित होती है।"

12. जब आप देते हैं, तो किसी मानसिक बाधा या कमी का अहसास नहीं होना चाहिए। ख़ुशी-ख़ुशी और समृद्धि की दुआ के साथ सबको दान दें।

13. जिस प्रकार किसान फ़सल काटने की आशा करता है, उसी प्रकार आपको भी उम्मीद करनी चाहिए कि दान का नैसर्गिक नियम आपके लिए काम करेगा।

14. आप दूसरों को जो सबसे अच्छी चीज़ दे सकते हैं, वह है समृद्ध सोच के नियम का ज्ञान। इसके बाद उन्हें जीवन में कभी किसी अच्छी चीज़ की कमी नहीं पडेगी।

अध्याय सात

अमीर लोग ज़्यादा अमीर बनते हैं

सचमुच अमीर लोग वे हैं, जो विचार की सृजनात्मक शक्ति को पहचानते हैं और अपने अवचेतन मन पर संपन्नता तथा धन-दौलत के विचारों की छाप छोड़ते हैं। फलस्वरूप वे जिन चीज़ों के बारे में सोचते हैं, वे उनके जीवन में साकार हो जाती हैं।

लोग एक ख़ास तरीक़े से सोचकर अमीर बनते हैं। वे दिखाई देने वाली चीज़ों के बारे में नहीं सोचते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि उनके सतत सृजनात्मक विचार उनके संसार में अपने अनुरूप वस्तुओं को प्रकट कर देंगे।

ग़रीबी या अभाव की परिस्थिति में रहने वाले व्यक्ति को अमीरी के बारे में सोचने के लिए लगनशील और केंद्रित विचार की ज़रूरत होती है; लेकिन जो भी इस अनुशासित सोच का अभ्यास करता है, वह अंतत: अनिवार्य तौर पर अमीर बनता है तथा अपनी मनचाही चीज़ पा लेता है।

बाइबल में कहा गया है,... जिसके पास है उसे दिया जाएगा; लेकिन जिसके पास नहीं है, उसके पास की चीज़ भी उससे ले ली जाएगी। (ल्युक 19:26) इसे कहने का एक प्रचलित तरीक़ा यह है: “अमीर लोग ज़्यादा अमीर बनते हैं, जबकि ग़रीब लोग ज़्यादा ग़रीब बनते हैं।”

इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति अपने दिमाग़ (जो उसके सारे अनुभवों का स्रोत है) की असीमित अमीरी पर ध्यान केंद्रित करता है, वह अधिक सांसारिक वस्तुओं का मालिक बनेगा। ज़मीन में डाला गया एक बीज सैकड़ों बीजों का उत्पादन करता है। इसी तरह अमीरी के दैवीय बीज (विचार) कई गुना होकर आपके जीवन में प्रकट होंगे।

नज़रिया बदलने से आमदनी बढ़ गई

ज़मीन-जायदाद का काम करने वाले एक व्यवसायी ने हाल ही में मुझे बताया कि पहले वह यह सोचता था कि धन या आपूर्ति सीमित है और पूरे अमेरिका की दौलत कुछ बहुत अमीर परिवारों ने अपने क़ब्ज़े में कर ली है और वही इसे नियंत्रित करते हैं। वह इसे लेकर बहुत कुंठित और हताश रहता था।

अचानक एक दिन उसे यह अहसास हुआ कि उसका वैचारिक दृष्टिकोण ग़लत है। उसे अहसास हुआ कि अपनी विचलित और कुंठित विचार प्रक्रियाओं द्वारा वह अमीरी के सृजनात्मक बहाव को रोक रहा है।

यहाँ पर उसके पत्र का एक हिस्सा दिया जा रहा है: “प्रिय डॉ. मर्फ़ी मैंने आपके

निर्देशों पर अमल किया। मैंने प्रतिस्पर्धा के विचार को अपने दिमाग़ से मिटा दिया। मैंने निर्णय लिया कि मैं यहाँ पर सृजन करने आया हूँ और ज़मीन में अरबों डॉलर का अकूत सोना दबा हुआ है, जिसे अब तक नहीं खोजा गया है। मैं जानता हूँ कि वह दिन आएगा, जब वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में कृत्रिम सोना और अन्य सभी धातुएँ बनाने में कामयाब हो जाएँगे। मैंने दूसरों के अज्ञान या जागरूकता के अभाव का फ़ायदा उठाकर छलपूर्ण सौदे करना, शॉर्टकट अपनाना और दूसरों को धोखा देना छोड़ दिया। मैंने दूसरों की दौलत और आमदनी से ईर्ष्या करना छोड़ दिया। मैंने तय किया कि मैं सब कुछ पा सकता हूँ और इसके लिए मुझे दूसरों का हिस्सा छीनने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब मैं प्रतिस्पर्धी के बजाय सृजनात्मक और सहयोगी बन गया हूँ।

"तीन महीनों से मैं यह प्रार्थना कर रहा हूँ: 'जितनी तेज़ी से मैं ईश्वर की असीम दौलत पा सकता हूँ और उसका उपयोग कर सकता हूँ, वह उतनी ही तेज़ी से मेरी ओर प्रवाहित हो रही है। हर व्यक्ति दिनोदिन ज़्यादा अमीर बनता है।' इस नए नज़रिए से मेरे जीवन में चमत्कार हो गए हैं और तीन महीनों में ही मेरी आमदनी तिगुनी हो गई है!"

उसका करोड़ों डॉलर का फॉर्मूला

एक ड्रग स्टोर्स की बड़ी चेन शुरू करने वाला एक बहुत अमीर व्यक्ति बहुत आध्यात्मिक भी है। उसने एक इमारत के एक कमरे में छोटी सी फ़ार्मेसी शुरू की थी। यह छोटी शुरुआत अंतत: करोड़ों डॉलर की एक कंपनी में बदल गई, जिसमें हज़ारों कर्मचारी काम करते हैं। एक दिन लंच के दौरान उसने अपने पर्स से एक छोटा कार्ड निकालकर मुझे दिया और कहा "यह मेरा करोड़ों डॉलर का फ़ॉर्मूला है। मैं पच्चीस साल से इसे सुबह- शाम आज़मा रहा हूँ और मैंने इसे कई अन्य लोगों को भी दिया है, जिनमें से कुछ करोड़पति बनने में कामयाब हो चुके हैं और बाक़ी ने अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ पैसा हासिल किया है।"

यह रहा उसका फ़ॉर्मूला:

"मैं सारी अमीरी के सर्वव्यापी स्रोत को पहचानता हूँ, जो कभी असफल नहीं होता। मुझे अपने हर विचार में दैवी मार्गदर्शन प्राप्त होता है और मैं सभी नए विचारों के अनुरूप ख़ुद को ढाल लेता हूँ। असीम प्रज्ञा मुझे अपने साथी इंसानों की सेवा करने के बेहतर तरीक़े लगातार बताती है। मुझे मार्गदर्शन मिलता है कि मैं मानव जाति के लिए मददगार प्रॉडक्ट्स बनाऊँ। मैं आध्यात्मिक, वफ़ादार, आस्थावान और गुणी कर्मचारियों को आकर्षित करता हूँ, जो हमारी कंपनी की शांति, समृद्धि तथा प्रगति में योगदान देते हैं। मैं एक चुंबक हूँ और सर्वश्रेष्ठ संभव गुणवत्तापूर्ण प्रॉडक्ट्स तथा सेवाएँ देकर बेशुमार दौलत को आकर्षित करता हूँ। मैं ईश्वर और दौलत के मूल स्रोत के सतत संपर्क में रहता हूँ। असीमित प्रज्ञा मेरी सारी योजनाओं और उद्देश्यों को नियंत्रित करती है। मेरी सफलता का श्रेय इस सत्य को जाता है कि ईश्वर मेरे सभी कार्यों में मुझे राह दिखाता है, मार्गदर्शन देता है और संचालित करता है। मैं अंदर और बाहर हर समय शांति में रहता हूँ। मैं बेहद सफल हूँ। मैं ईश्वर के साथ एकरूप हूँ और ईश्वर हमेशा सफल होता है; मुझे भी अवश्य सफल होना चाहिए। मैं इस वक़्त सफल हो रहा हूँ। मैं अपने व्यवसाय की

सभी अनिवार्य बातों में माहिर हूँ। मैं अपने आस-पास के सभी लोगों और सभी कर्मचारियों के प्रति प्रेम और सद्भाव रखता हूँ। मैं ईश्वर की प्रेम, शक्ति और ऊर्जा से अपने दिलोदिमाग़ को भर लेता हूँ। मुझसे जुड़े सभी लोग मेरी प्रगति, कल्याण और समृद्धि की आध्यात्मिक क़ड़ियाँ हैं। सारा गुणगान और महिमा ईश्वर की है।"

इस बेहद सफल व्यवसायी ने अपनी सोची सभी चीज़ों को साकार किया और असंख्य लोगों को लाभ पहुँचाया... जाओ, और तुम भी ऐसा ही करो (ल्युक 10:37), और बहुतों की भलाई करने वाला करोड़पति बन गया।

दौलत की राह के अवरोध और उपचार

एक रियल एस्टेट सेल्समैन ने कहा, "मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है। मैं दिन भर कड़ी मेहनत करता हूँ। मैं जो प्लॉट और मकान बेचना चाहता हूँ, ग्राहक उन्हें देखते तो हैं, लेकिन ख़रीदते नहीं हैं। मेरे ही ऑफ़िस के बाक़ी सेल्समैन हर दिन बिक्री कर रहे हैं।"

दरअसल उसका अवरोध उसके दिमाग़ के भीतर था। उसे जिस ख़ास हानिकारक भावना से उबरना था, वह थी ईर्ष्या। इसी वजह से वह आर्थिक अभाव में था और बिक्री नहीं कर पा रहा था। उसने स्वीकार किया कि दूसरे सेल्समैनों को मोटे-मोटे कमीशन पाते देख उसे बहुत ईर्ष्या होती थी। उसके मन में गहरा द्वेष भी था।

उसे यह समझाया गया कि उसका ईर्ष्यालु विचार वह सबसे बुरा नज़रिया है, जिसे वह रख सकता है, क्योंकि इससे उसकी स्थिति बहुत नकारात्मक हो जाती है। जब तक उसका नज़रिया ऐसा रहेगा, तब तक अमीरी उसके पास आने के बजाय उससे दूर प्रवाहित होगी।

उसे अंतत: पता चला कि उसकी इस परिस्थिति का यही इलाज है, कि वह अपने उन सभी साथियों के लिए दुआ करे, जिनके सौभाग्य से उसे ईर्ष्या होती थी।

नीचे दी गई प्रार्थना को विचारपूर्वक, अर्थपूर्वक और समझकर बार-बार दोहराने से उसका पूर्ण मानसिक उपचार हुआ:

"मैं जान गया हूँ कि आपूर्ति और माँग का एक आदर्श नियम है। मैं हर मामले में स्वर्णिम नियम का अभ्यास करता हूँ। मैं पूरी तरह शांत हूँ। मैं जो भी बेचने की इच्छा करता हूँ, वह ईश्वर के मस्तिष्क में एक विचार है। संपूर्ण ज्ञान का सिद्धांत मेरे भीतर है। मुझे जो भी चीज़ जानने की ज़रूरत है, वह मैं तुरंत ही जान जाता हूँ। मैं समझता हूँ कि मैं जो भी ख़रीदना-बेचना चाहता हूँ, वह मेरे भीतर के दैवीय मस्तिष्क में विचारों के आदान-प्रदान का ही प्रतिनिधित्व करता है। मैं जानता हूँ कि यहाँ संतुष्टि, सद्भाव और शांति है। दाम सही है; लोग सही हैं; सब कुछ सही है। मैं सत्य को जानता हूँ; मैं सत्य को समझता हूँ; और मैं ईश्वर की सक्रिय चेतना हूँ। मुझे जिन विचारों की ज़रूरत है, वे सभी मेरे भीतर आदर्श श्रृंखला और आदर्श संयोजन में लगातार उजागर होते हैं। मुझे दैवीय विचार मिलते हैं और मैं आनंदित होकर उन्हें अपने साथियों को देता हूँ; मैं बदले में विचार पाता हूँ। मैं अब गहन शांति में हूँ। दैवीय मस्तिष्क में कोई विलंब नहीं है; मैं अपनी भलाई को स्वीकार करता हूँ।"

उसमें आध्यात्मिक, मानसिक और आर्थिक दृष्टि से इतना ज़्यादा बदलाव हुआ, जितना मैंने बहुत कम लोगों को बदलते देखा है! वह कंपनी के अग्रणी सेल्समैनों में से एक बन गया। वह अधिक दयालु, अधिक उदात्त और अधिक व्यवहारकुशल बन गया। उसकी दयालुता व प्रेम वास्तविक था। उसकी बिक्री ज़्यादा तेज़ी से होने लगी। उसने पाया कि दूसरों को दुआ देकर उसने ख़ुद को भी दुआ दी थी। परिणाम यह हुआ कि हीनता और अभाव का सारा अहसास ही ख़त्म हो गया।

अमीरी उसकी कंपनी की ओर कैसे प्रवाहित होती है

मेरे एक इंजीनियर मित्र ने मुझे बताया कि उसके पास अपनी कंपनी के हर कर्मचारी की तरक़्क़ी के लिए एक सिद्धांत है। मीटिंग्स में वह उन्हें लगातार बताता है कि वे कंपनी के विकास में योगदान दें और जो भी मेहनत व सामंजस्य से काम करेगा, वह तेज़ी से तरक़्क़ी कर सकता है। वह कहता है कि उसका व्यवसाय एक सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर हर उत्साही, उद्यमी और इच्छाशक्ति वाला कर्मचारी दौलत तक पहुँच सकता है और अगर ऐसा नहीं होता है, तो यह उसकी ख़ुद की ग़लती है।

समय-समय पर सभी कर्मचारियों को कंपनी की प्रगति की जानकारी दी जाती है और हर तिमाही में आनुपातिक आधार पर उन्हें मुनाफ़े का हिस्सा दिया जाता है। उसने बरसों से कर्मचारियों को नहीं बदला है। नतीजा यह है कि उसने अपनी कंपनी को बहुत निष्ठावान और बेहद सहयोगी औद्योगिक परिवार बना लिया है। कर्मचारियों में प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग का भाव नज़र आता है। नए ख़ाते तथा शाखाएँ खुल रही हैं और इस इंजीनियरिंग कंपनी में सभी ओर से दौलत प्रवाहित हो रही है।

दुआ दें और अमीर बनें

आपकी मानसिक अवस्था ही आपके अभाव की परिस्थितियों की वजह है। इस बात पर यक़ीन करें और इसे गाँठ बाँध लें कि असीमित प्रज्ञा के सारे संसाधन और दौलत आपके लिए मौजूद हैं तथा आपके ज़रिए अभिव्यक्ति चाहते हैं।

कई लोगों के मन में सबसे प्रबल विचार यह रहता है कि दरअसल उनके पास कुछ भी नहीं है और उन्हें दौलत के पीछे भागना चाहिए, वरना वे इसे गँवा देंगे।

उन लोगों को दुआ दें, जिनकी समृद्धि, सफलता और संपन्नता से आपको चिढ़ या ईर्ष्या होती है। विशेष तौर पर यह निश्चित प्रार्थना करें कि वे हर संभव दृष्टि से ज़्यादा सफल, ज़्यादा अमीर और ज़्यादा सुखी हों। ऐसा करके आप अपनी मानसिक अवस्था का उपचार कर लेंगे। जब आप इस तरह प्रार्थना करते हैं और सच्चे मन से उन लोगों पर अपनी दुआओं और नियामतों की बौछार करते हैं, जो जीवन की सीढ़ी पर ऊपर पहुँच चुके हैं और आपसे बहुत ज़्यादा अमीर हैं, तो आप उसकी चेतना में प्रवेश कर जाएँगे, जो सभी चीज़ों का स्वामी है और जो अपनी आंतरिक तथा बाहरी संपदा से दूसरों को प्रचुर उपहार देता है।

दूसरे शब्दों में, दूसरों को दुआ देने और समृद्ध करने से आप ख़ुद भी समृद्ध हो जाते

हैं। इसीलिए अमीर लोग ज़्यादा अमीर बनते जाते हैं और ग़रीब लोग ज़्यादा ग़रीब बनते जाते हैं। बाद वाले आम तौर पर ईर्ष्या व नफ़रत से भरे होते हैं और ये नकारात्मक भाव आमदनी को ज़्यादा नुक़सान पहुँचाते हैं। बदक़िस्मती नहीं, बल्कि आपकी यही मानसिक अवस्था आपको बर्बाद करती है।

सर्वव्यापी बैंक

एक सेल्समैन को अपने नए काम के लिए एक कार की ज़रूरत थी, लेकिन उसे ख़रीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे। बहरहाल, वह अपने मानसिक बैंक का चेक काटने का तरीक़ा जानता था।

उसने मुझे बताया कि काम मिलने के बाद वह अपने कमरे में गया और उसने अपनी मनचाही कार का मानसिक चित्र देखा। उसने चित्र में देखा कि वह कार उसे मिल चुकी है। उसने कहा, "मैंने दावा किया कि वह कार मेरे पास आ चुकी है; मैं स्टियरिंग व्हील को महसूस कर सकता था और मैंने सीट पर अपने हाथ फेरे।"

अपने अपार्टमेंट हाउस में रहने वाले एक अन्य व्यक्ति से उसकी जान-पहचान हो गई, जो छह महीनों के लिए यूरोप जा रहा था। उस व्यक्ति ने सेल्समैन से कहा, "जब तक मैं लौटकर नहीं आ जाता, आप मेरी कार का इस्तेमाल करें। तब तक आप अपनी ख़ुद की कार ख़रीदने की स्थिति में आ जाएँगे।"

इस आदमी की कार का मॉडल वही था, जिसका चित्र उसने अपने मन में देखा था! मित्र के यूरोप से लौटने से बहुत पहले ही उसने अपनी कार ख़रीदने लायक़ पैसे जोड़ लिए। वह यह बात जानता था कि उसके भीतर एक बैंक है, जिससे वह पैसे निकाल सकता है। वह यह भी जानता था कि इसकी आपूर्ति अंतहीन और असीमित है... आपका पिता अपनी ख़ुशी से आपको साम्राज्य देता है। (ल्यूक 12:32)

ईर्ष्या और द्वेष से उबरने के लिए प्रार्थना

"मैं जानता हूँ कि सभी मनुष्य मेरे बंधु-बांधव हैं; हम सभी ईश्वर की संतान हैं। मैं सबके लिए स्वास्थ्य, ख़ुशहाली संपन्नता और जीवन की सभी नियामतों की कामना करता हूँ। मैं सच्चे दिल और पूरी गंभीरता से यह कामना करता हूँ। मैं जानता हूँ कि मैं दूसरों के लिए जो कामना करता हूँ, वह मैं ख़ुद के लिए भी करता हूँ और जब मैं दूसरों को दुआ देता हूँ, तो मैं ख़ुद को भी दुआ दे रहा होता हूँ। ईश्वर का प्रेम मेरे माध्यम से सारी मानव जाति की ओर प्रवाहित होता है। मैं उन सभी को दुआ देता हूँ, जो मुझसे ज़्यादा अमीर हैं। मैं उन लोगों को भी दुआ देता हूँ, जो मेरी आलोचना करते हैं और मेरे बारे में बुरी बातें करते हैं। मैं अपने सभी सहकर्मियों को सफल और दौलतमंद बनते देखकर ख़ुश होता हूँ। मैं अपने दिमाग़ की खिड़कियों खोलता हूँ और स्वर्ग की दौलत को अंदर आने देता हूँ। मैं सबके प्रति प्रेम से ओत-प्रोत हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर की दौलत सभी के दिलोदिमाग़ में सैलाब की तरह आए। मैं उसकी अमीरी के लिए इसी वक़्त धन्यवाद देता हूँ। यह अद्भुत है!"

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. अमीर लोग ज़्यादा अमीर इसलिए बनते जाते हैं और संसार की ज़्यादा से ज़्यादा चीज़ों को इसलिए आकर्षित करते हैं, क्योंकि वे अपने मन में ईश्वर की असीमित दौलत का अहसास उत्पन्न कर लेते हैं। अमीरी की निरंतर और ख़ुशग़वार आशा हर प्रकार की संपन्नता को आपकी ओर आकर्षित करती है।

2. प्रतिस्पर्धा का विचार आपकी आप्रतइr को सीमित करता है। सृजनात्मक और सहयोगी बनें। यह अहसास करें कि आप किसी दूसरे का हिस्सा छीने बिना अपनी मनचाही सारी दौलत पा सकते हैं। जिस प्रकार हवा की कोई कमी नहीं है, उसी प्रकार सृष्टि की असीमित दौलत की भी कोई कमी नहीं है।

3. आप वहीं पहुँचते हैं, जहाँ आपका सपना होता है। अपनी मनचाही चीज़ का मानसिक चित्र देखते रहें और इसके पीछे प्रबल भावना रखें; यह अवश्य साकार होगा।

4. अमीरी का अवरोध आपके दिमाग़ में होता है। दूसरों से ईर्ष्या अमीरी के आपके प्रवाह को रोक देगी और दुख तथा अभाव को आकर्षित करेगी।

5. दूसरों को संपन्नता की दुआ देंगे, तो आपको भी संपन्नता मिलेगी। जो जहाज़ आपके भाई के पास आता है, वह आपके पास भी आता है।

6. अपने व्यवसाय को एक सीढ़ी बनाएँ, ताकि आपका हर कर्मचारी दौलत की मंज़िल तक पहुँचने में समर्थ हो। आप दूसरों को अमीर बनाकर और उनके वास्तविक मूल्य के अनुरूप भुगतान देकर अमीर बनते हैं।

7. आपका अवचेतन मन एक बैंक है। हो सकता है कि आपके पास अपनी ज़रूरत या इच्छा को साकार करने के लिए कोई पैसा न हो, लेकिन आप अपनी मनचाही चीज़ का सटीक मानसिक चित्र बना सकते हैं और इसकी वास्तविकता महसूस कर सकते हैं। आपको यह जानने की कोई ज़रूरत नहीं है कि आपकी इच्छा किस तरीक़े से साकार होकर आपके जीवन में आएगी।

8. अपने सहकर्मियों को सफल और दौलतमंद बनते देखकर आनंदित हों। हर दिन प्रार्थना करें कि ईश्वर की दौलत हर जगह सभी लोगों के दिलोदिमाग़ में सैलाब बनकर प्रवाहित हो रही है। जब कोई अमीर बने, जब किसी के घर का वैभव बढ़े तो इस बात से न घबराएँ। (साल्म 49:16)

अध्याय आठ

मूर्त दौलत कैसे उत्पन्न करें

प्रकृति की संपन्नता पर सोचते और निहारते समय हमें अहसास होता है कि सभी चीज़ो की प्रचुरता है। प्रकृति उदारता, बहुतायत और प्रचुरता में देती है। हम जीवन में कहीं भी पहुँच जाएँ, हमें इस बात की जागरूकता अवश्य होनी चाहिए कि प्रकृति की नियामतें कितनी ज़्यादा हैं। जीवन के नियम हमें असीमित दौलत प्रदान करने के लिए बनाए गए हैं, ताकि हम अपनी दैनिक आवश्यकताओं से कहीं ज़्यादा पा सकें। भजनकार कहता है, पृथ्वी ईश्वर की है और इसकी परिपूर्णता भी... (साल्म 24: 1)। जहाँ भी कमी होती है, सिर्फ़ मनुष्य के लोभ, स्वार्थ, डर और कपट की वजह से होती है। बहरहाल, जब प्रकृति की दौलत को बढ़ाने और वितरित करने के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण तथा न्यायपूर्ण विधियों का इस्तेमाल किया जाता है, तो जीवन की सभी मूर्त संपत्तियाँ पर्याप्त से भी अधिक नज़र आती हैं।

संपत्तियों को मूर्त बनाया जा सकता है

कई साल पहले सिडनी, ऑस्ट्रेलिया के एक दंतचिकित्सक के साथ मेरी बड़ी रोचक चर्चा हुई, जहाँ मैं “हमारे अवचेतन मन के चमत्कार” विषय पर व्याख्यान श्रृँखला के लिए गया था। इस दंतचिकित्सक ने मुझे बताया कि चिकित्सा शुरू करते समय उसमें “पाई-पाई वाली मानसिकता” थी। उसने पाया कि उसकी ग़रीबी की ग्रंथि की वजह से सिर्फ़ चवन्नीछाप और कंजूस ग्राहक़ ही उसकी ओर आकर्षित हो रहे थे।

फिर वह अपने जीवन में मूर्त संपत्तियों को इस तरह लाया। मानसिक कल्पना की शक्ति पर मेरा भाषण सुनने के बाद एक रात जब वह पैदल घर लौट रहा था, तो उसने कल्पना की कि उसके आस-पास की हवा में नोट भरे हुए थे। उसे महसूस हुआ कि हवा में नोट ठसाठस भरे थे। उसने कहा कि उसका मानसिक चित्र उसके दरवाज़े के बाहर लगे पेड़ों जितना ही वास्तविक और स्पष्ट था। वह अपनी जेब में छोटे-बड़े सभी प्रकार के काल्पनिक नोट भरने लगा- उसने कहा कि वे उसे मूर्त और वास्तविक लग रहे थे। अचानक उसे अहसास हुआ कि दौलत असीमित होती है, जिसे हर वह व्यक्ति आकर्षित और प्राप्त कर सकता है, जिसमें ईश्वर की समृद्धि पर विचार करने का इरादा, आस्था, ग्रहणशीलता और पहलशक्ति हो।

इस अनुभव के बाद वह बहुत प्रभावी और दौलतमंद ग्राहकों को आकर्षित करने लगा। उसके पास इतने ज़्यादा रोगी आने लगे कि उन सभी को व्यक्तिगत रूप से देख पाना संभव ही नहीं था। कंजूसी के उसके चवन्नीछाप पुराने नज़रिए ने उसे दौलतमंद लोगों से दूर रखा था। उसने सभी प्रकार की मूर्त संपत्तियों को उत्पन्न करने के लिए

विचार-चित्र की शक्ति खोज ली थी।

एक ख़ास तरीक़े से सोचना

यदि आप कोई वाद्ययंत्र या पियानो चाहते हैं, तो मेरा अर्थ यह नहीं है कि आप बस उस वाद्ययंत्र या पियानो का मानसिक चित्र देखेंगे और वह आपके कमरे में अचानक सामने प्रकट हो जाएगा। अगर आपके पास पैसा है, तो आप बेशक बाहर जाएँगे और उसे ख़रीद लाएँगे।

मान लें कि आपको अभ्यास के लिए पियानो की ज़रूरत है, लेकिन आपके पास उसे ख़रीदने के पैसे नहीं हैं। एक सुंदर पियानो के बारे में सोचें। कल्पना में उसे अपने कमरे में देखें, उसकी कुंजियों पर हाथ फेरें, उन्हें छुएँ। पियानो की मज़बूती, स्वाभाविक रूप और मूर्तता को महसूस करें। सतह पर हाथ फेरें और पूरी निश्चितता से सोचें कि पियानो वहीं पर है। वह आपके मस्तिष्क में मौजूद है, क्योंकि सबसे पहले पियानो उसे बनाने वाले के मस्तिष्क में एक विचार के रूप में मौजूद था।

मन में पियानो का चित्र देखने के बाद अब उस पर अपनी दावेदारी करें और यह जान लें कि आपका अवचेतन मन यह सुनिश्चित कर देगा कि आप दैवीय योजना में इसे प्राप्त कर लें। आपके अवचेतन मन के भीतर की असीम प्रज्ञा दूसरों के मन पर कार्य करेगी और आपका मानसिक चित्र अंतत: ऐसे तरीक़ों से साकार हो जाएगा, जिनके बारे में आप अनुमान भी नहीं लगा सकते।

विचार ने ही संसार की सारी मशीनों और यंत्रों का सृजन किया है और यह करोड़ों बेहतर कारें, टाइपराइटर्स कंप्यूटर्स, रेडियो, टेलीविज़न सेट्स, वाद्ययंत्र और सभी तरह के असंख्य घरेलू उपकरण लगातार बना रहा है। मशीन और अंतरिक्ष युग में ये सभी खोजें और आविष्कार एक ख़ास, उद्देश्यपूर्ण तरीक़े से सोचने वाले इंसानों ने किए हैं।

विश्वास का चमत्कार

1944 में एक छोटी सी स्पेनिश लड़की मेरे घर से कुछ दूरी पर रहती थी। मैं उसके परिवार को अच्छी तरह जानता था और कभी-कभार उसके माता-पिता से मिलने जाता रहता था। उसकी उम्र लगभग आठ वर्ष थी और वह हर दिन स्थानीय सरकारी स्कूल में पढ़ने जाती थी।

महीनों से वह अपने माता-पिता से सेंट्रल पार्क में सवारी करने के लिए साइकल माँग रही थी। उसकी माँ हमेशा यही जवाब देती थीं: “मुझे तंग मत करो। तुम जानती हो कि युद्ध चल रहा है और कोई साइकल उपलब्ध नहीं है।” बहरहाल, वह बार-बार साइकल माँगती रही, जिससे उसके माता-पिता काफ़ी खीझ गए। वह छोटी लड़की लड़कों की तरह रहती थी और आस-पड़ोस के लड़कों से लड़ती-झगड़ती थी, जिससे उसे चोटें लगती रहती थीं।

एक रात मैंने छोटी लड़की से कहा “मैरी, तुम्हें साइकल मिल सकती है और मैं

जानता हूँ कि कहाँ।” तुरंत उसकी आँखों में चमक आ गई। वह उत्सुकता से सुनने लगी और उसने पूछा “कहाँ?” हम दोनों के बीच ये बातें हुईं:

लेखक: “तुरंत अपने बिस्तर पर जाओ और आँखें बंद कर लो। फिर एकदम साफ़-साफ़ कल्पना करो कि तुम्हारे दोस्त और सहेलियाँ सेंट्रल पार्क में तुम्हारी साइकल पर सवारी कर रहे हैं और उनकी मुस्कानें देखो! ईश्वर चाहता है कि तुम बिना साइकल वाले साथियों को अपनी साइकल चलाने दो, ताकि तुम्हारी वजह से उन्हें ख़ुशी मिल सके।”

मैरी: “ओह, ठीक है, अगर ईश्वर मुझसे यह करवाना चाहता है, तो मैं तैयार हूँ। लेकिन माँ ने कहा है कि सांता क्लॉज़ इस क्रिसमस पर मुझे साइकल लाकर नहीं दे सकता या नहीं देना चाहता। अब तो क्रिसमस सिर्फ़ दो सप्ताह दूर है!”

लेखक: “वही करो, जो मैंने तुम्हें बताया है। जब तुम बिस्तर पर पहुँच जाओ, तो अपनी आँखें बंद कर लो और कल्पना में ख़ुद को सेंट्रल पार्क में साइकल चलाते हुए महसूस करो। जैसा मैंने तुम्हें बताया है, उसी तरह एक-एक करके अपने मित्रों को उसी साइकल की सवारी करते देखो। उन्हें मुस्कूराते, हँसते और मज़े लेते हुए देखो। तुम्हें तुम्हारी साइकल मिल जाएगी! ईश्वर सांता क्लॉज़ को बता देगा कि वह तुम्हें साइकल कैसे दे। अब गहरी नींद में सो जाओ।”

अगली रात को मैरी शाम को लगभग छह बजे एक वैरायटी स्टोर में एक दूसरी लड़की के साथ थी। अचानक मैरी रोने लगी। पास ही खड़ी एक महिला ने उसे रोते देखकर नरमी से पूछा, “छोटी बच्ची, क्या बात है? क्या किसी ने तुम्हें मारा?”

मैरी ने जवाब दिया, “नहीं, लेकिन कल रात को एक आदमी मेरे घर आया था। उसने मुझसे कहा था कि ईश्वर सांता क्लॉज़ को बता देगा कि साइकल कहाँ मिलेगी और वह मुझे तत्काल मिल जाएगी। अँधेरा हो रहा है और साइकल मुझे अब तक नहीं मिली है।”

यह बात उस महिला के दिल को छू गई और वह बोली, “उस आदमी को तुमसे ऐसा कहने का कोई हक़ नहीं था!” वह उस छोटी लड़की को नज़दीक के अपने अपार्टमेंट में ले गई और उसे अपनी बेटी की साइकल दे दी, जो दो साल पहले गुज़र गई थी। उस महिला ने बताया कि वह उस साइकल को किसी ऐसी बच्ची को देना चाहती थी, जो ईश्वर से प्रेम करती हो।

यही विश्वास की शक्ति है... आपकी आस्था के अनुरूप ही आपके साथ होगा। (मैथ्यू 9:29)

उसे मूर्त परिणाम क्यों नहीं मिले

हाल ही में एक आदमी से मेरी बात हुई, जो दिवालिया हो गया था। वह अपना घर गँवा चुका था और आर्थ्राइटिस की बीमारी से भी परेशान था। अपनी मुश्किल स्थिति से उबरने के लिए उसने जितना ज़्यादा संघर्ष किया, यह उतनी ही ज़्यादा ख़राब होती गई। वह एक दुष्चक्र में फँसा महसूस कर रहा था। उसने मुझसे कहा, “मुझे परिणाम

क्यों नहीं मिलते? मैं प्रार्थना करता हूँ और भजन पढ़ता हूँ। मैंने बहुत से नेक काम किए हैं। ईश्वर मुझे सजा क्यों दे रहा है?"

वाक़ई वह प्रार्थना करता था और चर्च की आराधना में नियम से हिस्सा लेता था। बहरहाल, उसे अपने प्रार्थना के कोई मूर्त परिणाम इसलिए नहीं मिले, क्योंकि वह दस साल से ज़्यादा समय से एक व्यावसायिक सहयोगी से नफ़रत करता था। वह द्वेष और दुर्भावना से भरा हुआ था। उसने ज़िद पकड़ ली थी कि वह उस सहयोगी को कभी माफ़ नहीं करेगा। वह इस सहयोगी को लानतें और बद्दुआएँ भेजता रहता था। उसकी मानसिक अवस्था ही वास्तविक अवरोध थी।

मैंने उसे समझाया कि चूँकि सहयोगी के बारे में उसके विचार धृणा, द्वेष और प्रतिशोध के थे, इसलिए उसके अवचेतन मन में विनाशकारी भाव उत्पन्न और एकत्रित हो रहे थे। चूँकि नफ़रत, ईर्ष्या और प्रतिशोध के इन भावों को कोई न कोई निकास चाहिए इसलिए, वे उसके जीवन में अभाव और सीमा के रूप में प्रकट हो गए। दिवालियापन और शारीरिक रोग इसी का परिणाम था।

जब वह ईश्वर की आतरिक शांति के तादात्म्य में आया और उसने दावा किया कि उसके भीतर ईश्वर की बुद्धिमत्ता अपने तरीक़े और समय से दैवी तालमेल बैठाएगी, तो उसे आसान समाधान मिल गया। वह ईश्वर पर पूरी तरह आश्रित हो गया, जो असीमित स्रोत और हर चीज़ का उद्गम है। जिस व्यक्ति से वह नफ़रत करता था, अब उसे हर दिन दुआएँ देने लगा। उसने दावा किया कि ईश्वर सद्भाव, स्वास्थ्य, शांति और संपन्नता के रूप में उसके ज़रिए प्रवाहित हो रहा है। कुछ ही महीनों में हवा का रुख़ बदल गया और उस पर सवार होकर वह दौलत, सफलता तथा उपलब्धि के शिखर की ओर बढ़ने लगा।

एक युद्ध शरणार्थी को किस प्रकार बेहतरीन परिणाम मिले

आध्यात्मिक प्रवृत्ति की एक सुंदर और आकर्षक महिला लॉस एंजेलिस में हर रविवार की सुबह मेरा प्रवचन सुनने आती है। उसने मुझे अपने शुरुआती जीवन के बारे में एक दिलचस्प कहानी सुनाई। उसका बचपन निहायत ही घटिया और गंदी परिस्थितियों में गुज़रा था। वह रूस की एक झोपड़पट्टी में पली-बढ़ी थी। अक्सर वह भूखी और फटेहाल अवस्था में रहती थी, इसलिए उसके मन में अमेरिका जाने की अदम्य इच्छा जागी, ताकि वह संगीत का अध्ययन कर सके, हालात की बेड़ियों को तोड़ सके और साहस के साथ अपनी दासता से उबर सके।

युद्ध छिड़ने पर उसने रूसी सेना में नर्स के रूप में स्वयंसेवा की। जर्मन सेना ने उसे बंदी बना लिया। क़ैदी के रूप में उसने जेल के अहाते में मौजूद सभी लोगों की सेवा की। वहाँ रहते वक़्त वह लगातार एक अंकल का मानसिक चित्र देखती रही, जो लॉस एंजेलिस में रहते थे। मन ही मन वह बार-बार उन्हें यह कहते हुए सुनती थी, "अमेरिका में तुम्हारा स्वागत है!" हर रात जब वह सोती थी, तो वह अपने अंकल की काल्पनिक आवाज़ सुनते हुए सोती थी, "अमेरिका में तुम्हारा स्वागत है!"

जब अमेरिकी मुक्ति सेना उसके कैंप में पहुँचीं, तो उसने दुभाषिए का काम किया।

वह एक अमेरिकी इनफ़ैंट्री ऑफ़िसर से प्रेम करने लगी और अंतत: अमेरिका पहुँच गई। आज वह एक अद्‌भुत संगीतकार और बेहतरीन शिक्षक है तथा उसके विद्यार्थी उससे प्रेम करते हैं। उसे ज़बर्दस्त आमदनी होती है, वह एक बहुत अच्छे इलाक़े में रहती है और उसके पास ढेर सारा पैसा है, जिससे वह अपनी तमाम इच्छाएँ पूरी कर सकती है। वह अक्सर कई देशों की यात्राएँ भी करती रहती है।

इस महिला ने यह दिखा दिया कि आप ग़रीबी से अमीरी तक कैसे उठ सकते हैं। वह वाक़ई व्यक्तिगत उपलब्धि के शिखर पर पहुँच गई है। उसने कभी भी दूसरों के प्रति द्वेष, कटुता या नफ़रत को अपनी आत्मा के क़रीब फटकने की अनुमति नहीं दी। वह जानती है कि उसके भीतर एक ऐसी शक्ति है, जो विश्व के भीषण दबावों से उबर सकती है उन पर विजय पा सकती है और उसे उठाकर शिखर पर पहुँचा सकती है। बाइबल का उसका प्रिय कथन है,... मैने तुम्हें बाज़ के पंखों पर बैठाया और तुम्हें अपने पास लाया। (एक्सोडस 19:4)

तीन शब्दों ने दौलत उत्पन्न की

एक फ़िल्म अभिनेत्री ने मुझे बताया कि पहले ग़लत विचार और निराशावादी मनोदशा उस पर हावी रहती थी, लेकिन इनकी सफ़ाई करने से उसे बहुत ज़बर्दस्त परिणाम मिले। वह तीन शब्द दोहराती थी: “ख़ुशी, दौलत, सफलता।” घर के दैनिक कामकाज करते वक़्त वह इन तीन शब्दों को मन ही मन दोहराती रहती थी। दस-पंद्रह मिनट तक इन्हें दोहराने के बाद वह प्रेरित हो जाती थी और उसका दिमाग़ ऊँचा उठ जाता था। जब भी वह पैसों और अनुबंधों के अभाव को लेकर निराशा की पुरानी अवस्था में फिसलती थी, वह तीन शब्दों के इस गाने को तुरंत दोहराने लगती थी।

उसने पाया कि इन शब्दों में ज़बर्दस्त शक्ति है, क्योंकि वे उसके अवचेतन की अदृश्य शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसने इन अमूर्त विचारों के टापू पर अपने दिमाग़ का लंगर डाल लिया और उनकी प्रकृति के अनुरूप परिणाम उसके जीवन में प्रकट हो गए।

उसे एक के बाद एक अनुबंध मिलते चले गए और पिछले आठ वर्षों में वह कभी भी ख़ाली नहीं बैठी। वह एक के बाद एक सफलताएँ पाती जा रही है।

उसने एक सामान्य सी सच्चाई जान ली। वह जान गई कि उसकी निराश मनोदशा और चिंता ही उसके जीवन की बाहरी स्थितियों व परिस्थितियों का कारण थे। जब उसने डर, चिंता और निराशा की अपनी मानसिक अवस्था को बदला, तो बाहरी परिस्थितियाँ अपने आप सही हो गईं।

विजय के उसके ख़ामोश गीत को आप भी इसी समय गाना शुरू कर दें: “ख़ुशी। दौलत। सफलता।” आपके जीवन में चमत्कार होंगे!

ईश्वर आपको अमीर बनाना चाहता है

जीवन का नियम ग़रीबी नहीं बल्कि संपन्नता है। ईश्वर असीम, अथाह और अनंत है। वह

आपूर्ति का अपार स्रोत है। आपके पास सहायता का अदृश्य साधन हमेशा मौजूद होता है। चूँकि ईश्वर के संसाधन अनंत हैं, इसलिए आपके संसाधन भी अनंत हैं, क्योंकि आप और आपका पिता एक ही हैं।

ईश्वर ने आपको हाथ दिए, ताकि आप उसके गीत को बजा सकें और उसकी महिमा व सम्मान में सुंदर इमारतें, स्मारक और मंदिर बना सकें। ईश्वर चाहता है कि आप अपने गुणों को एक अद्‌भुत तरीक़े से व्यक्त करें। ईश्वर ने आपको आवाज़ दी, ताकि आप सभी को उसके प्रेम का गीत गाकर सुना सकें। ईश्वर ने आपको आँखें दीं ताकि आप पेड़ों में वाणी, पत्थरों में उपदेश, कल-कल करती नदियों में गीत और हर चीज़ में ईश्वर को देख सकें।

नृत्य करने की आपकी इच्छा इस वजह से है, क्योंकि ईश्वर आपके सामने प्रकट करना चाहता है कि यह नर्तक शक्तियों की सृष्टि है। पूरा संसार ही ईश्वर का नृत्य है।

सूर्यास्त का चित्र बनाने की आपकी इच्छा इस कारण होती है, क्योंकि ईश्वर का अवर्णनीय सौंदर्य आपके यानी कलाकार के माध्यम से अभिव्यक्ति चाहता है। ईश्वर ने आपको कान दिए हैं ताकि आप सृष्टि का संगीत सुन लें और उसकी धीमी आवाज़ भी, जो कहती है “यही रास्ता है; इस पर चलो।”

यात्रा करने और संसार को खोजने की आपकी इच्छा भी इसी कारण है, क्योंकि ईश्वर आपको संसार के चमत्कार देखने तथा सभी चीज़ो की सुंदरता, व्यवस्था, अनुपात, लय और संयोजन की सराहना करने के लिए प्रेरित करता है।

ईश्वर चाहता है कि आप ख़ुश आनंदमग्न और मुक्त रहें। ईश्वर चाहता है कि आप आलीशान मकान में रहें और सुंदर वस्त्र पहनें। ईश्वर चाहता है कि आप भव्य और विजयी अंदाज़ में जीवन जिएँ।

(पॉल ने कहा था) ... यह ईश्वर है, जो इच्छा और कार्य करने में आपके माध्यम से काम करता है...। (फ़िलिप्पियन्स 2:13)

दौलतमंद बनने की आपकी इच्छा इस कारण है, क्योंकि ईश्वर आपके सामने अपनी दौलत प्रकट कर रहा है और आपसे कह रहा है,... बेटे, तुम हमेशा मेरे साथ हो और जो मेरा है, वह सब तुम्हारा है। (ल्यूक 15:31)

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. प्रकृति उदार, असीम और संपन्न है। जीवन के नियम आपको असीमित दौलत देने के लिए बनाए गए हैं।
2. यदि आपकी मानसिकता “चवन्नीछाप” है, तो आप ग़रीबी की ग्रंथि वाले लोगों को आकर्षित करेंगे और कभी अमीर नहीं बन पाएँगे।
3. आप जो चाहते हैं, उसके बारे में स्पष्टता से सोचें; उसे अपने कमरे में देखें; कल्पना में अपने हाथों से उसकी स्वाभाविकता, ठोसपन और मूर्तता को महसूस करें। ऐसा करने के बाद आप उसे पा लेंगे।

4. जब आप मानसिक रूप से किसी चीज़ को सच मान लेते हैं, तो आपका अवचेतन मन उसे ऐसे तरीक़ों से साकार कर देता है, जिनके बारे में आपको पता भी नहीं होता। वैसे ही, जैसे एक नितांत अजनबी महिला ने उस छोटी लड़की को साइकल का उपहार दे दिया, जो उसके लिए प्रार्थना कर रही थी।

5. नफ़रत, द्वेष और प्रतिशोध के विचार दौलत की आपकी प्रार्थना को बाधित कर देंगे और दौलत को आपकी ओर लाने के बजाय आपसे दूर ले जाएँगे। आप ख़ुद के लिए जो कामना करते हैं, वही कामना हर एक के लिए करें- यही आपकी संपन्नता की कुंजी है।

6. करोड़ों डॉलर का एक फ़ॉर्मूला है। इन सत्यों को प्रबल भावना, पूरी चेतना और लगन से दोहराएँ और आपको वह सारी दौलत मिल जाएगी, जिसकी आपको जीवन में ज़रूरत होगी। आप अपने सपनों से भी ज़्यादा दौलतमंद बन जाएँगे।

7. तीन शब्द चमत्कार करते हैं। उन्हें गाएँ और अपने दिल पर उकेर लें: “ख़ुशहाली, दौलत और सफलता” ये ईश्वर के बारे में सच हैं और आपके बारे में भी।

8. ईश्वर चाहता है कि आप ख़ुश, अमीर, आनंदमग्न और मुक्त रहें। ईश्वर चाहता है कि आप ज़्यादा प्रचुर जीवन जिएँ। उसमें ख़ुशी की पूर्णता है। उसमें रत्ती भर भी अंधकार नहीं है।

अध्याय नौ

सारा व्यवसाय ईश्वर का है

इस संसार में गतिविधि के सभी रूप ईश्वर के विविध कार्यों का हिस्सा है। केवल एक ही सर्वोच्च शक्ति है, जो सभी चीज़ों और व्यक्तियों में सजीव व सक्रिय है। आप गतिविधियों को आध्यात्मिक और सांसारिक श्रेणियों में विभाजित तो कर सकते हैं, लेकिन जब आप अपने काम से प्रेम करते हैं और इसे ईश्वर की महिमा व गौरव की ख़ातिर करते हैं, तो दरअसल सारा काम आध्यात्मिक होता है।

जो कारीगर शाश्वत सिद्धांतों के अनुरूप मकान बनाता है, जो अपने काम से प्रेम करता है तथा अच्छी सेवा देने में आनंद का अनुभव करता है, वह आध्यात्मिक कार्य कर रहा होता है, जिस तरह कोई पादरी टेन कमांडमेंट्स के अर्थ की व्याख्या करते समय कर रहा होता है।

मान लें, आप एक बेहतर रेज़र ब्लेड, शेविंग क्रीम, कार या कोई अन्य वस्तु बनाते हैं। आपकी इच्छा यह रहती है कि आप ख़ुशी-ख़ुशी दूसरों की सेवा करें और उपयोगी व सृजनात्मक तरीक़े से मानवता के प्रति योगदान दें। इस तरह काम करते समय यदि आप अपने सभी सौदों में स्वर्णिम नियम का पालन करते हैं, तो आप ईश्वर का कार्य कर रहे हैं और ईश्वर सदैव आपके साथ है; तो फिर आपके ख़िलाफ़ कौन खड़ा हो सकता है ? फिर धरती या आकाश की कोई शक्ति आपको व्यवसाय में सफलता और समृद्धि पाने से नहीं रोक सकती।

व्यवसाय के लिए समृद्धि की प्रार्थना

“मैं यह जानता और विश्वास करता हूँ कि मेरा व्यवसाय ईश्वर का है। ईश्वर सभी मामलों में मेरा साझेदार है। इसका अर्थ है कि उसका प्रकाश, प्रेम, सत्य और प्रेरणा सभी तरीक़ों से मेरे दिलोदिमाग़ में भरी हुई है। मैं अपने भीतर की दैवीय शक्ति में पूर्ण विश्वास रखकर अपनी सभी समस्याओं को सुलझाता हूँ। मैं जानता हूँ कि इसी उपस्थिति की वजह से हर चीज़ क़ायम है। मैं अब सुरक्षा और शांति में आराम से हूँ। आज मेरे पास परिपूर्ण समझ है; मेरी सभी समस्याओं का दैवीय समाधान है। मैं निश्चित रूप से प्रत्येक व्यक्ति को समझता हूँ; और प्रत्येक व्यक्ति मुझे समझता है। मैं जानता हूँ कि मेरे सभी व्यावसायिक संबंध दैवीय नियम के सामंजस्य में हैं। मैं जानता हूँ कि ईश्वर मेरे सभी ग्राहकों के दिल में रहता है। मैं दूसरों के साथ इस उद्देश्य से सद्भावनापूर्ण कार्य करता हूँ, ताकि ख़ुशहाली, समृद्धि और शांति का वर्चस्व रहे।”

ईश्वर ही सच्चा नियोक्ता है

एक बड़ी यूरोपीय कंपनी में काम करने वाली एक युवती ने बताया था, “मैं इस नौकरी से उस नौकरी और एक नियोक्ता से दूसरे नियोक्ता तक भटकती रहती थी और ज़्यादा पैसे बनाने तथा ख़ुद को बेहतर बनाने की कोशिश करती थी। जब से मैंने यह पुष्टि और अहसास करना शुरू किया कि ईश्वर ही मेरा सच्चा नियोक्ता है और मैं उसी के लिए काम कर रही हूँ तथा ईश्वर ने मुझे आनंद के लिए सारी नियामतें दी हैं, तो उसके बाद मुझे एक बेहतरीन पद मिल गया है। वहाँ तनख़्वाह भी बेहतरीन है और मैं छह साल से वहीं काम कर रही हूँ। एक्ज़ीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट से मेरी सगाई भी हो चुकी है। यह अहसास करना पूरे संसार की सबसे अद्‌भुत चीज़ है कि ईश्वर ही एकमात्र नियोक्ता है और आप किसी इंसान के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर के लिए काम कर रहे हैं। मैं अब अपने कामकाज में हँसती हूँ, गाती हूँ और आनंदित होती हूँ। मुझे सुरक्षा और शांति का अहसास होता है। यह अद्‌भुत है!”

सच्चे बॉस को कैसे खोजें

कुछ साल पहले एक फ़ार्मसिस्ट डलास, टेक्सस में मुझसे मिलने आया। वह शिकायत करने लगा कि उसका बॉस इतना चिड़चिड़ा, झक्की, झगड़ालू और बदमिज़ाज है कि उसके साथ पटरी बैठाना संभव ही नहीं है। उसने कहा, “मैं वहाँ सिर्फ़ एक ही कारण से रुका हुआ हूँ; तनख़्वाह अच्छी है। लेकिन मैं उससे इतना ज़्यादा द्वेष और नफ़रत करता हूँ कि मैं भीतर ही भीतर धधक रहा हूँ! यही नहीं, मेरे बाक़ी साथियों को कंपनी में प्रमोशन मिल चुका है, सिर्फ़ मुझे ही नहीं मिला।”

इस युवक ने प्रबल क्रोध, द्वेष और घृणा के रूप में अपने दिमाग़ में तानाशाहों, खलनायकों और अपराधियों को बैठा लिया था। उसके मन का यह विध्वसंक नज़रिया उसे नियंत्रित और शासित करता था। यह उसके विचारों, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं पर हावी था।

मैंने उसे बताया कि बाहरी परिस्थितियाँ हमेशा भीतरी परिस्थितियों का प्रतिबिंब होती हैं। वास्तविकता यह है कि वह ख़ुद को नुक़सान पहुँचा रहा है तथा अपनी आर्थिक और पेशेवर प्रगति में रोड़े डाल रहा है। मैंने उसे समझाया कि अपने द्वेष और शत्रुता से उसे किसी तरह का लाभ नहीं हो रहा है। वह जल्दी ही समझ गया कि उसके सोचने के नज़रिए से ही यह तय होता है कि वह अंदर से कैसा महसूस करता है। इसलिए उसने अपने नज़रिए को उलट दिया और अपने मन में सफलता, सद्‌भाव तथा समृद्धि के विचारों को स्थापित कर लिया। वह इन विचारों के साथ जीने लगा तथा उन्हें नियमित और सुनियोजित तरीक़े से पोषण देने लगा। उसने उद्‌देश्यपूर्ण और सच्चे तरीक़े से अपने नियोक्ता के प्रति सद्‌भाव, शांति तथा ख़ुशी की कामना की।

कुछ सप्ताह बाद उसने पाया कि उसका नया नज़रिया उसका सच्चा बॉस बन गया था। अब उसके जीवन की बागडोर उसके मन के सिंहासन पर विराजमान विचारों के हाथों में थी। जल्द ही उसके प्रति उसके नियोक्ता का नज़रिया बदल गया। उसने उसे तरक़्क़ी दे दी और उसकी तनख़्वाह में भारी वृद्धि करके उसे अपने एक स्टोर में मैनेजर बना दिया। जाहिर है नज़रिया बदलने से हर चीज़ बदल गई!

सेल्स लाइन में सफलता का रहस्य

कुछ समय पहले ही एक युवा सेल्समैन से मेरी बातचीत हुई, जिसकी औसत वार्षिक आमदनी 25,000 डॉलर से अधिक है। उसने संकेत किया कि बेचते समय सेवा ही उसका बुनियादी विचार होता है। वह हमेशा अपने ग्राहक के लिए पैसा बनाने- या उसका पैसा बचाने- की कोशिश करता है। वह कभी भी, किसी तरह किसी ग्राहक का नाजायज़ फ़ायदा नहीं उठाता है। उसने यह भी घोषणा की कि वह कभी भी अपने ग्राहकों पर वे प्रॉडक्ट्स नहीं "थोपता", जिनके बारे में उसे महसूस होता है कि ख़रीदार वास्तव में उनका उपयोग नहीं कर सकता या उन्हें बेच नहीं सकता।

उसने बताया कि अगर वह किसी ग्राहक की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता, तो वह हमेशा किसी दूसरे निर्माता के पास भेज देता है, जिसके पास ग्राहक की मनचाही चीज़ होती है। उसने कहा, "यह दरअसल कामकाज के क्षेत्र में स्वर्णिम नियम का पालन है।" उसके सभी ग्राहक इसके बहुत ज़्यादा क़ायल हैं! इस नज़रिए की वजह से उसने कई ऑर्डर गँवा दिए, लेकिन उनकी जगह पर उसे सैकड़ों अन्य ऑर्डर मिल गए। उसकी वार्षिक बिक्री के आँकड़े कंपनी के बाक़ी सेल्समैनों से अधिक हैं।

इस युवक की सच्चाई, ईमानदारी और सद्भावना उसके ग्राहकों के अवचेतन मन तक पहुँच जाती है, जिससे वे उस पर विश्वास करने लगते हैं। स्वर्णिम नियम का उसका अभ्यास ही सेल्समैनशिप में उसकी सफलता का रहस्य है। साथ ही यह एक्ज़ीक्यूटिव स्तर पर उसके प्रमोशन का रहस्य भी है।

वास्तविक रहस्य अपने ग्राहक के साथ बिलकुल वैसा ही व्यवहार करना है, जैसा आप अपने साथ होते देखना चाहेंगे, बशर्ते भूमिकाएँ उलट जाएँ। अपने सामान, घर या ज़मीन के ख़रीदार को वह सब बताएँ, जो आप उस सामान, घर या ज़मीन को ख़रीदते समय सुनना चाहते। अगर आप यह करते हैं, तो पूरा संसार और उसके सभी लोग आपकी भलाई करने के लिए बाध्य हो जाएँगे तथा आप सेल्समैन के रूप में अविश्वसनीय सफलता प्राप्त कर लेंगे।

आपकी आवाज़ ईश्वर की आवाज़ बन सकती है

मैं एक सत्रह वर्षीय किशोर को जानता था, जो न्यूयॉर्क में "नरक की रसोई" कही जाने वाली जगह पर पैदा हुआ था। उसने कई साल पहले न्यूयॉर्क में मेरे कुछ भाषण सुने। उसकी आवाज़ शानदार थी, लेकिन उसे पेशेवर प्रशिक्षण नहीं मिला था। मैंने उसे बताया कि वह अपने दिमाग़ में जिस चित्र पर ध्यान देगा, वह उसके ज़्यादा गहरे मन में विकसित और साकार हो जाएगा। मैंने उसे यह भी बताया कि जो मानसिक चित्र या विचार वह अपने चेतन मन में लगातार क़ायम रखेगा, उस पर उसका ज़्यादा गहरा मन हमेशा प्रतिक्रिया करेगा।

वह किशोर घर पर अपने कमरे में शांति से बैठ जाता था और सजीव कल्पना करता था कि वह एक माइक्रोफ़ोन के सामने गा रहा है। वह सचमुच उस यंत्र का "अहसास" करने के लिए हाथ बढ़ाता था। वह साहस के साथ घोषणा करता था, "मेरी आवाज़

ईश्वर की आवाज़ है और मैं भव्यता तथा अलौकिकता के साथ गाता हूँ।" वह कल्पना में सुनता था कि मैं उसके शानदार अनुबंधों पर उसे बधाई दे रहा हूँ और बता रहा हूँ कि उसकी आवाज़ कितनी गज़ब की है। नियमित और सुनियोजित रूप से इस मानसिक तस्वीर पर पूरा ध्यान केंद्रित करने से उसके अवचेतन मन पर एक गहरी छाप छूट गई।

कुछ समय बीतने पर न्यूयॉर्क के एक प्रख्यात स्वर प्रशिक्षक ने उसे सप्ताह में कई बार मुफ्त प्रशिक्षण देने का प्रस्ताव रखा, क्योंकि उसके हिसाब से उसकी सफलता की बहुत प्रबल संभावना थी। अंतत: उस किशोर ने एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए, जिससे उसे यूरोप, एशिया, दक्षिण अफ्रीका तथा अन्य स्थानों के संगीत समारोहों में गाने के लिए विदेश जाने का अवसर मिला। इसमें बेहतरीन आमदनी होने की बदौलत उसकी आर्थिक चिंताएँ भी दूर हो गईं।

बहरहाल, उसके छिपे गुण और उन्हें बाहर लाने की योग्यता ही दरअसल उसकी सच्ची दौलत थी। उसका काम ईश्वर का काम था, क्योंकि गाने का उसका नैसर्गिक गुण ईश्वर का ही दिया हुआ था। आपकी आवाज़ आपकी दिनचर्या में ईश्वर की आवाज़ बन सकती है, बशर्ते आप चाहें। लेकिन इसके लिए आपको इसकी असीमित शक्ति को सामने लाना होगा।

आपकी समृद्धि को बढ़ाने का एक अचूक तरीक़ा

मेरे एक पादरी मित्र ने मुझे बताया कि शुरुआती दिनों में उसे और उसके चर्च को आर्थिक कष्ट झेलने पड़े। अंतत: उसने प्रगति करने और समृद्ध होने का एक अचूक तरीक़ा खोज लिया। उसने ख़ुद से ये दो प्रश्न पूछे: "मैं अपने साथी इंसानों के लिए ज़्यादा उपयोगी कैसे बन सकता हूँ ? और "मैं मानवता के प्रति अधिक योगदान कैसे दे सकता हूँ ?"

उसने इस तकनीक या प्रक्रिया का इस्तेमाल किया, जिससे चमत्कार हो गया: उसने प्रार्थनामय और प्रेममय ढंग से घोषणा की, "ईश्वर अपने साथी इंसानों को दैवी सत्य बताने के बेहतर तरीक़े मेरे सामने प्रकट करता है।" पैसा आने लगा, उसके चर्च का कर्ज़ कुछ महीनों में ही चुकता हो गया और उसे पैसे के बारे में दोबारा कभी चिंता नहीं करनी पड़ी।

इसी तरह, आपको अपने व्यावसायिक विस्तार के लिए कभी पैसे की चिंता नहीं करनी पड़ेगी, यदि आप इस कथन को अपने मन के सिंहासन पर बैठा लें: "ईश्वर मेरे सामने बेहतर तरीक़े प्रकट करता है, जिनसे मैं अपने साथी इंसानों की सेवा कर सकता हूँ।" आपके मन में नए और सृजनात्मक विचार आएँगे तथा आपका व्यवसाय सभी प्रकार से समृद्ध होगा।

किस तरह एक व्यक्ति **20** करोड़ डॉलर के कॉरपोरेशन का मुखिया बना

फ़ीनिक्स, एरिज़ोना में एक व्याख्यान के बाद एक आदमी ने मुझे बताया कि जब वह एक कंपनी का सेल्स मैनेजर था, तो उसे कंपनी के भीतर के "राजनीतिक" दाँवपेंचों,

दबाव और तनाव की वजह से नर्वस ब्रेकडाउन तथा हार्ट अटैक भी हो गया।

बहरहाल, पूरी तरह से ठीक होने और अपने ऑफ़िस लौटने के बाद उसने यह नीति अपनाई: हर सुबह वह अपने चैंबर का दरवाज़ा बंद कर लेता था और दस-पंद्रह मिनट तक ईश्वर के साथ संप्रेषण व संवाद करता था। वह दावा करता था कि असीम प्रज्ञा उस दिन की सभी गतिविधियों में उसे मार्गदर्शन देगी। जहाँ विवाद था, वहाँ दैवीय प्रेम और सद्भावना का माहौल बन जाएगा। उसका विवेक, हर निर्णय और ख़रीदारी ईश्वर द्वारा मार्गदर्शित बुद्धिमानी से शासित होंगे। यह बुद्धिमानी आदर्श योजना प्रकट करेगी और सही रास्ता बताएगी कि उसे कहाँ जाना चाहिए। वह साहस के साथ दावा करता था कि ईश्वर उसकी सभी समस्याओं के सही जवाब जानता है और वह ईश्वर के साथ एकरूप है। जब वह इस परम बुद्धिमत्ता की मदद माँगता था, तो वह हमेशा जवाब देती थी। वह साहस के साथ घोषणा करता था: "दैवीय नियम मुझे, संचालक मंडल और पूरी कंपनी को शासित करते हैं। मैं सबके प्रति प्रेम, शांति, समृद्धि और सद्भावना संप्रेषित करता हूँ।"

इस नीति पर चलने के बाद उसे कभी काम से एक दिन की भी छुट्टी नहीं लेनी पड़ी। अब वह हर मायने में ज़्यादा स्वस्थ और प्रसन्न है। कंपनी के प्रॉडक्ट्स के प्रचार और विस्तार के नए सृजनात्मक विचार उसके मन में लगातार आते रहते हैं। फलस्वरूप उसका व्यवसाय उसके सपनों से भी ज़्यादा समृद्ध हो गया। वह कैरियर की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ने लगा और दो साल के भीतर ही उसे एक विशाल कॉरपोरेशन का प्रेसिडेंट चुन लिया गया तथा बहुत ऊँची तनख़्वाह भी मिलने लगी।

उसने ख़ुद के सामने यह साबित कर दिया कि ईश्वर का व्यवसाय हमेशा समृद्ध होता है। आप भी अपने जीवन में यही कर सकते हैं।

आपका आज 'गिरवी' नहीं है

यदि आप आज अपनी क़िस्त नहीं चुका सकते, यदि आप पाते हैं कि आप कुछ बिल चुकाने में असमर्थ हैं या अगर आपको आज असफलता का अंदेशा है, तो याद रखें कि इन परिस्थितियों को बदलने के लिए आपको तो बस अपने वर्तमान विचार को बदलना है; इसके बाद परिस्थितियाँ अपने आप बदल जाएँगी। आप हर पल जो अनुभव कर रहे हैं, वह आपकी मानसिक गतिविधि का ही बाहरी चित्र है। आज आपके साथ जो हो रहा है, वह आपकी वर्तमान सोच और भावनाओं का फल है।

आज सही तरीक़े से सोचें- भविष्य हमेशा वर्तमान का ही विचार है, जो बाद में प्रकट होता है। आज अपनी सोच बदल दें; आपका वर्तमान सद्भावनापूर्ण, शांतिपूर्ण और सफल हो जाएगा।

आपकी वर्तमान समस्या आपकी आज की सोच का परिणाम है। दैवीय मस्तिष्क में समय या स्थान जैसी कोई चीज़ नहीं होती। आपकी नेकी वास्तव में यह वर्तमान पल है। अतीत एक वर्तमान विचार है; भविष्य भी एक वर्तमान विचार है, क्योंकि आप केवल वर्तमान पल में ही सोच सकते हैं। आप इसी पल को जीते हैं। इस पल को बदलकर आप अपनी क़िस्मत बदल देते हैं! आपके हाथ में जिस एकमात्र पल का नियंत्रण होता है, वह

यही वर्तमान पल है। इसीलिए प्राचीन हिंदू ऋषियों ने कहा था, “ईश्वर (आपकी भलाई) शाश्वत वर्तमान है।”

व्यावसायिक सफलता के तीन क़दम

एक युवती एक बहुत बढ़िया हेयर सैलून चलाती थी। बहरहाल, उसकी माँ बीमार हो गई, जिस वजह से उसे घर पर काफ़ी समय देना पड़ा और अपने व्यवसाय की उपेक्षा करनी पड़ी। उसकी अनुपस्थिति में उसकी दो सहयोगियों ने गबन कर लिया, जिससे वह युवती कर्ज़ के दलदल में धँस गई।

उसने अपने व्यावसायिक नुक़सान की भरपाई करने के लिए नीचे दिए तीन क़दमों के इस्तेमाल का निर्णय लिया:

पहला क़दम: वह कल्पना करने लगी कि स्थानीय बैंक मैनेजर उसे बधाई दे रहा है कि उसने बैंक में इतना ज़्यादा पैसा जमा कर रखा है। वह एक बार में लगभग पाँच मिनट तक इस अंदाज़ में कल्पना करती थी।

दूसरा क़दम: अपनी कल्पना में उसने सुना कि उसकी माँ उससे कह रही हैं, “मैं बहुत ख़ुश हूँ कि तुम बहुत सफल हो रही हो और तुम्हारे ऐसे बढ़िया ग्राहक हैं!” वह तीन से पाँच मिनट तक अपनी माँ की यह सुखद और ख़ुशी भरी आवाज़ सुनती थी।

तीसरा क़दम: सोने जाने से ठीक पहले वह घोषणा करती थी: “मैं हर एक को प्रेमपूर्ण सेवा दे रही हूँ और ईश्वर मेरे ज़रिए मेरे सैलून के हर व्यक्ति को आशीष दे रहा है।”

तीन सप्ताह से भी कम समय में उसका व्यवसाय चमकने लगा और उसे अतिरिक्त कर्मचारी रखने पड़े। इस बीच उसका विवाह हो गया और उसके पति ने उसे तोहफ़े के रूप में 20,000 डॉलर दिए, जिससे उसने अपना व्यवसाय फैला लिया और नई दुकानें खोल लीं।

ख़रीदने और बेचने का सत्य

प्राय: मुझसे ज़मीन-जायदाद, इमारतें और स्टोर्स ख़रीदने-बेचने के बारे में परामर्श लिया जाता है। वास्तव में, यह हर उस सामान पर लागू होता है, जिसे आप ख़रीदना या बेचना चाहते हैं। जब आप बेचना चाहते हैं, तो इसका अर्थ है कि आप अपनी जायदाद या घर किसी दूसरे को हस्तांतरित करने को तैयार हैं, क्योंकि आप बदलना चाहते हैं; इसका यह भी अर्थ है कि कोई दूसरा पाने के लिए तैयार है।

ख़रीदते या बेचते समय यह अहसास करें कि आप उसी क्षण में सही वक़्त पर सही ख़रीदार या विक्रेता के संपर्क में हैं और आपका अवचेतन मन आप दोनों को आमने-सामने ले आएगा। इस तरह आप आकर्षण के नियम को सक्रिय कर देते हैं। कुछ समय में ही आप ख़ुद को ऐसे व्यक्ति के साथ व्यवसाय करता देखेंगे, जो उस सौदे से पूरी तरह संतुष्ट है। हर चीज़ दैवीय योजना के हिसाब से होगी।

आप जो क़ीमत माँग रहे हैं, वह हमेशा सही और न्यायपूर्ण होगी, अगर परिस्थितियाँ उलटने पर आप स्वयं वही क़ीमत चुकाने के इच्छुक हों।

आर्थिक सफलता के लिए दैनिक कथन

... क्या तुम नहीं जानते कि मैं अपने पिता के काम पर हूँ ? (ल्यूक 2:49) “मैं जानता हूँ कि मेरा व्यवसाय, पेशा या कामकाज ईश्वर का काम है। ईश्वर का काम हमेशा बुनियादी तौर पर सफल होता है। हर दिन मेरी बुद्धिमत्ता और समझ बढ़ रही है। मैं जानता हूँ, यक़ीन करता हूँ और यह तथ्य स्वीकार करता हूँ कि संपन्नता का ईश्वरीय नियम मेरे लिए, मेरे ज़रिए और मेरे चारों ओर हमेशा काम कर रहा है।

“मेरा व्यवसाय या पेशा सही कर्म और सही अभिव्यक्ति से भरा हुआ है। जिन विचारों, धन, सामानों और संपर्कों की मुझे ज़रूरत है, वे सभी इसी समय और हर समय मेरे पास हैं। ये सभी चीज़ें सर्वव्यापी आकर्षण के नियम द्वारा मेरी ओर प्रबलता से आकर्षित होती हैं। ईश्वर मेरे व्यवसाय का प्राण है। मुझे सभी प्रकार से दैवी मार्गदर्शन और प्रेरणा मिल रही है। बढ़ने, विस्तार करने और प्रगति करने के अद्‌भुत अवसर हर दिन मेरे सामने पेश किए जाते हैं। मैं सद्‌भावना बड़ा रहा हूँ। मैं बहुत सफल हूँ, क्योंकि मैं दूसरों के साथ उसी तरह व्यवसाय करता हूँ, जिस तरह मैं चाहूँगा कि वे मेरे साथ करें।”

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. सारा व्यवसाय ईश्वर का है और ईश्वर का व्यवसाय हमेशा फलता-फूलता है। सभी चीज़ें ख़ुशी-ख़ुशी करें और ईश्वर की महिमा के लिए करें।
2. यह मान लें कि आपके सभी व्यावसायिक सौदों में ईश्वर आपका साझेदार है और वह आपके सभी ग्राहकों में वास करता है। ऐसा करने पर आपको सभी प्रकार का मार्गदर्शन मिल जाएगा।
3. यह अहसास करें कि ईश्वर ही आपका एकमात्र नियोक्ता है। यह करने पर आपको हमेशा अपनी नौकरी में लाभ होगा और आपके मन में सुरक्षा का गहरा और स्थायी भाव भी रहेगा।
4. आपका प्रबल मानसिक नज़रिया ही आपका वास्तविक बॉस है। विचार हमारे स्वामी हैं और हमारे नज़रियों को तय करते हैं। अपने मन में सद्‌भाव, सफलता और समृद्धि के विचारों को सिंहासन पर बैठाएँ और उन्हें भावनात्मक पोषण दें; आप पाएँगे कि भीतर अच्छा बॉस होने पर बाहर भी वैसा ही बॉस प्रकट हो जाएगा।
5. सेल्स लाइन में सफल होने के लिए आपका बुनियादी लक्ष्य ग्राहक की सेवा होना चाहिए; फिर सफलता सुनिश्चित है।
6. यदि आपको गीत-संगीत की प्रतिभा से नवाज़ा गया है, तो यह पहचान लें कि आपकी आवाज़ ईश्वर की आवाज़ है और आपके गायन से श्रोताओं को आनंद तथा

आशीष मिलता है। यही शोहरत और प्रसिद्धि पाने का अचूक तरीका है।

7. यदि धंधा मंदा है, तो इस तरह प्रार्थना करें: “असीमित प्रज्ञा मेरे सामने सेवा के बेहतर तरीक़े प्रकट करती है।” आपका व्यवसाय दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करेगा!
8. आपके वर्तमान अनुभव कल के कारण उत्पन्न नहीं हुए हैं, बल्कि आपके वर्तमान विचारों की बाहरी तस्वीरें हैं। इसी समय अपने विचार बदल लेंगे, तो हर चीज़ बदल जाएगी। वर्तमान पल ही एकमात्र पल है। भविष्य आपके वतर्मान विचारों द्वारा ही तय होता है।
9. ख़रीदते-बेचते समय यह अहसास करें कि आप उसी क्षण में सही वक़्त पर सही ख़रीदार या विक्रेता के संपर्क में हैं। आकर्षण का नियम आप दोनों को एक साथ ले आएगा और सौदे में आपसी संतुष्टि, सद्भाव तथा शांति रहेगी।

अध्याय दस

वृद्धि का नियम

कोरिंथियन्स 3:6 में हम पढ़ते हैं: मैने पौधा लगाया, अपोलॉस ने पानी दिया; लेकिन वृद्धि इश्वर ने दी। वृद्धि ही वह चीज़ है, जिसे संसार भर के सारे स्त्री-पुरुष खोज रहे हैं। यह उनके भीतर ईश्वर की प्रेरणा है, जो उनके जीवन के सभी पहलुओं में अधिक पूर्ण अभिव्यक्ति चाहती है।

अमीर बनने, विस्तार करने और उजागर करने की आपकी इच्छा आपके अस्तित्व का बुनियादी आवेग है। आपमें अच्छे दोस्तों का अपना दायरा बढ़ाने की इच्छा होती है, आप ज़्यादा और बेहतर भोजन, कपड़े, कारें व घर और ज़्यादा से ज़्यादा जीवन की विलासिताएँ चाहते हैं। यही नहीं, आप अधिक यात्राएँ करना चाहते हैं, आंतरिक शक्तियों के बारे में अधिक सीखना चाहते हैं और सौंदर्य का अधिक से अधिक अनुभव करना चाहते हैं। संक्षेप में, आप जीवन को अधिक प्रचुरता और संपन्नता से जीना चाहते हैं।

आप ज़मीन में गेहूँ बोते हैं और पानी देते हैं, लेकिन ईश्वर गेहूँ के दानों को सौ या हज़ार गुना करके वृद्धि प्रदान करता है। इसी तरह, आप विचार, भावना और कल्पना के माध्यम से अपने दिमाग़ में जो बोते हैं, वह कई गुना होकर प्रकट होता है।

वृद्धि का अर्थ है आपकी नियामतों का कई गुना होना, आपके मूल विचार या योजना का साकार होना। यदि कोई कार्य शुरू ही न किया जाए, तो ज़ाहिर है कोई वृद्धि नहीं हो सकती। अपने दिमाग़ पर वृद्धि के विचार की छाप छोड़ना इसी समय शुरू कर दें। बहरहाल, आप यह काम अकेले नहीं कर सकते; वृद्धि तो ईश्वर ही प्रदान करता है।

एक विचार ने किस प्रकार हज़ारों डॉलर आकर्षित किए

स्वर्गीय डॉ. हैरी गेज़ द साइकोलॉजी ऑफ़ डेली लिविंग विषय के मशहूर अंतरराष्ट्रीय वक्ता थे और उनकी पत्नी डॉ. ओलिव गेज़ ने मुझे उनके बारे में यह रोचक प्रसंग बताया।

डॉ. गेज़ जब इंग्लैंड से भाषण देने के लिए अमेरिका आए, तो वे एकदम युवा थे। उन्होंने मस्तिष्क के नियमों पर शिकागो में भाषण देने का निर्णय लिया। उनका होटल शिकागो ओपेरा हाउस के क़रीब था और जब उन्होंने खिड़की से देखा, तो उन्हें दोपहर के शो के बाद इमारत से भारी भीड़ बाहर आती दिखी। उन्होंने ख़ुद से कहा, “मैं इस ओपेरा हाउस में खचाखच भरे हॉल में मस्तिष्क के नियमों पर बोलने जा रहा हूँ। ईश्वर मुझे और मेरे सभी श्रोताओं को आशीर्वाद प्रदान करेगा और इतना देगा कि हमारे

दामन में नहीं समा पाएगा और छलक पड़ेगा।”

डॉ. गेज़ जब द साइकोलॉजी ऑफ़ डेली लिविंग पर भाषण देने के लिए ओपेरा हाउस के मैनेजर से किराए की बात करने गए, तब उनके पास सिर्फ़ सौ डॉलर थे। पहले तो यह सुनकर मैनेजर हँस दिया, लेकिन जब डॉ. गेज़ ने मस्तिष्क की शक्तियों के बारे में बोलना शुरू किया, तो वह बहुत रुचि लेने लगा और बोला कि वह उनके भाषणों की श्रृँखला ओपेरा हाउस में आयोजित करवाना चाहता है, इसलिए किराए के कई हज़ार डॉलर इकट्ठा करने के लिए वह उन्हें एक सप्ताह की मोहलत दे सकता है।

उस सप्ताह के दौरान डॉ. गेज़ बार-बार पुष्टि करते रहे, “ईश्वर वृद्धि प्रदान करता है। मेरा यह विचार अच्छा है; इससे सबका भला होता है। ईश्वर इसका विस्तार करता है और कई गुना करता है।”

फिर डॉ. गेज़ की मुलाक़ात शिकागो के करोड़पति व्यवसायी मि. मैक्कॉरमिक से हुई, जो डॉ. गेज़ के मानसिक उपचार की विधियों से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने उनके लिए एक लंच दिया। इसमें उन्होंने ग्यारह अतिथियों को आमंत्रित किया, जो सभी करोड़पति थे। डॉ. गेज़ ने उन्हें मस्तिष्क की शक्तियों पर संबोधित किया। अंतत: प्रत्येक ने उन्हें काफ़ी पैसा दिया, जिससे विज्ञापनों का ख़र्च निकल आया और किराए के लिए आवश्यक बड़ी धनराशि भी उपलब्ध हो गई।

डॉ. गेज़ का स्वप्न साकार हो गया था। उनके हर भाषण के बाद ओपेरा हाउस से भारी भीड़ निकलती थी, जैसी कि उन्होंने कुछ सप्ताह पहले अपने होटल की खिड़की से कल्पना की थी। डॉ. गेज़ ने अपने दिमाग़ में मानसिक चित्र बोया था। इसे बोते समय उनके मन में विचार के साकार होने में ख़ुशी और सुकून का भाव भी था, क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि वृद्धि ईश्वर देता है।

किस प्रकार एक स्कूली शिक्षिका सभी विद्यार्थियों को वृद्धि प्रदान करती है

स्कूल की एक शिक्षिका मेरे भाषणों में नियमित रूप से आती है। उसने मुझे बताया कि उसे शरारती बच्चों की वजह से स्कूल में बहुत परेशानी होती थी। बहरहाल, उसने नीचे दी गई नीति अपनाई, जिससे उसे उल्लेखनीय और आश्चर्यजनक परिणाम मिले।

हर सुबह कक्षा लेने से पहले पंद्रह मिनट तक वह एकांत में जाती थी, अपने मन को शांत करती थी और मन ही मन इस प्रकार का कथन कहती थी: “मैं ईश्वर का सृजनात्मक केंद्र हूँ और मैं अपनी कक्षा के सभी बालक-बालिकाओं के प्रेम, बुद्धिमानी और समझ में वृद्धि करती हूँ। मैं इसी समय हर शिष्य में प्रगति और विकास का विचार संप्रेषित कर रही हूँ। मेरी यह अटल आस्था है कि हर शिष्य तेज़ी से सीखता है और प्रेरित, सामंजस्यपूर्ण, प्रेमपूर्ण व सहयोगी है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरी कक्षा का हर बच्चा प्रगति करने वाला है और मेरा विश्वास मेरे अवचेतन मन तक संप्रेषित होता है। यही सच है।”

बाद के वर्षों में इस शिक्षिका को उसकी कक्षाओं में व्यवस्था तथा अनुशासन के लिए

बार-बार तारीफ़ें सुनने को मिलीं और उसके शिष्यों के ग्रेड असाधारण रूप से अच्छे रहे। हाल ही में उसे प्रमोशन मिल गया और उसकी तनख़्वाह बहुत बढ़ाकर दूसरे स्कूल में तबादला कर दिया गया। उसने स्वयं और अपने शिष्यों के लिए लगातार वृद्धि का दावा किया और उसने पाया कि सभी शिष्यों को वृद्धि प्रदान करने से ईश्वर ने न सिर्फ़ शिष्यों को, बल्कि उसे भी आशीष दिया।

उसकी डेस्क पर एक सूत्रवाक्य रखा है, जिस पर लिखा है: "मैं स्वयं के लिए जो चाहती हूँ, वही हर एक के लिए चाहती हूँ।" यह उसके लिए सचमुच लाभदायक सिद्ध हुआ।

केबिन के कारपेंटर से अट्टालिका निर्माता तक

हाल ही में मैं फ़ीनिक्स, एरिज़ोना में भाषण देकर लौटा हूँ। वहाँ मैंने चर्च ऑफ़ डिवाइन साइंस में अपने भाषण दिए थे। चर्च को संचालित करने वाले जैकब सेलर पूर्व के प्रख्यात रैब्बी हैं, जो अब मानसिक और आध्यात्मिक नियमों पर सेवा कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

वहाँ भाषण देते समय एक व्यक्ति से मेरी बातचीत हुई। उसने मुझे बताया कि बीस साल पहले वह उस रेगिस्तानी क़स्बे में छुटपुट काम करने वाला बढ़ई था। वह पहाड़ के क़रीब एक पुराने, खस्ताहाल केबिन में रहता था। बहरहाल, उसके मन में न्यूयॉर्क सिटी की टक्कर की अट्टालिकाएँ बनाने की अदम्य इच्छा थी। उसने ख़ुद से यह कहना शुरू किया, "मैं अमीर बन रहा हूँ, मैं दूसरों को बहुत अमीर बना रहा हूँ और मैं सभी पर कृपा की बारिश करवा रहा हूँ।"

मानसिक नज़रिया बदलने के बाद वह उन लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने लगा, जो उसकी सेवाएँ चाहते थे। उसका बढ़ई का व्यवसाय इतनी तेज़ी से फैला कि वह अकेला उसे नहीं सँभाल पा रहा था और उसे अतिरिक्त कर्मचारी रखने पड़े।

उसने एक बहुत अमीर आदमी के लिए एक मकान बनाया, जो स्वास्थ्य लाभ के लिए पूर्व में रहने आया था। उसके उत्कृष्ट कार्य के फलस्वरूप उस आदमी ने कॉन्ट्रैक्टर के रूप में उसका व्यवसाय खड़ा करवा दिया। ज़ाहिर है, उस अमीर आदमी ने उस व्यवसाय में अपना छोटा सा हिस्सा रखा था। जब वह अमीर आदमी अंतत: परलोक सिधार गया, तो वह अपना पूरा क़ारोबार उस बढ़ई के नाम ही छोड़ गया था। आज, यह पूर्व-बढ़ई करोड़ों डॉलर का स्वामी है और अब तक कई अट्टालिकाएँ बना चुका है।

इसी समय आप भी, उस बढ़ई की तरह अमीर महसूस करना शुरू करें। आप यह देखकर हैरान रह जाएँगे कि सभी दिशाओं से आपकी ओर अप्रत्याशित नियामतें आने लगेंगी। आप ज़्यादा बड़े व्यावसायिक अनुबंधों और गठबंधनों में विस्तार कर पाएँगे। अंतत: ईश्वर की मदद से आपको आगे और ऊपर बढ़ने की अपनी योजनाओं के लिए आवश्यक सारी दौलत मिल जाएगी।

चाहे आप जो भी हों या आप जो भी कर रहे हों - चाहे आप स्टेनोग्राफ़र हों या सेक्रेटरी, वकील, केमिस्ट, टैक्सी ड्राइवर या धर्मगुरु - यदि आप दूसरों के लिए दौलत,

स्वास्थ्य और ख़ुशी के विचारों पर अपने दिमाग को इसी समय केंद्रित करना शुरू करते हैं, तो वे इसे अवचेतन रूप से भाँप लेंगे और आकर्षण के सर्वव्यापी नियम द्वारा आपकी ओर आकर्षित होंगे। आप बेहद अमीर बन जाएँगे और आध्यात्मिक, मानसिक तथा भौतिक दृष्टि से समृद्ध होंगे।

लोग उसके दरवाज़े के चक्कर क्यों काटते हैं

मैं एक युवा डॉक्टर को जानता हूँ, जिसने अपनी अभूतपूर्व सफलता द्वारा अपने हमपेशा लोगों को हैरान कर दिया। उसके क्लीनिक में मरीज़ों की भीड़ लगी रहती है! उसने मुझे बताया कि जिस दिन उसने अपना क्लीनिक खोला, उस दिन उसने इस प्रकार का मनन किया: “मैं दूसरों को जीवन की वृद्धि देता हूँ। ईश्वर महान चिकित्सक है और मैं उसका उपकरण हूँ; वह मेरे माध्यम से उपचार करता है। मैं जिसे भी स्पर्श करता हूँ, वह चमत्कारिक रूप से स्वस्थ हो जाता है और मैं अनंत उपचारक उपस्थिति के सतत तादात्म्य में हूँ। मैं जीवन में अपनी सफलता, उपलब्धि और अमीरी के लिए शुक्रगुज़ार हूँ।”

हर दिन वह ऊपर बताए तरीक़े से प्रार्थना करता है। वह अपने पास आने वाले रोगियों की भीड़ को सँभाल नहीं पाता और उनमें से कइयों को उसे दूसरे डॉक्टरों के पास भेजना पड़ता है।

मानसिक नवीनीकरण ने किस प्रकार एक पादरी को लाभ पहुँचाया

हाल ही में मैंने एक पादरी से बातचीत की, जिसका धर्मसमुदाय घटकर सिर्फ़ पचास-साठ लोगों का रह गया था। बातचीत के दौरान हम इस नतीजे पर पहुँचे कि इस कमी का कारण यह था कि वह उन्हें वह नहीं दे रहा था, जो वे चाहते थे या जिसकी उन्हें ज़रूरत थी।

उसने तुरंत अपने मानसिक नज़रिए को उलट लिया। अब वह लोगों को यह सिखाने लगा कि पूर्ण और सुखद जीवन कैसे जिएँ, समृद्ध कैसे हों, सद्भावनापूर्ण मानवीय संबंध कैसे स्थापित करें, प्रेम कैसे करें और पाएँ, व्यवसाय या पेशे में समृद्ध कैसे बनें और स्वस्थ, जीवंत व प्रेरित कैसे बनें। उसे यह अहसास हो गया था कि वह दूसरों को ये गुण तब तक कभी नहीं दे सकता, जब तक कि वे उसके ख़ुद के जीवन का हिस्सा न हों।

उसने अपनी कही बातों पर अमल शुरू किया और उसने अपने धर्ममंच से जीवन के नियमों की मिसाल पेश की। तीन महीने के भीतर ही उसके चर्च का धर्मसमुदाय बढ़कर 500 हो गया। उसके लोग उसे बताते हैं, “यही वे चीज़ें हैं, जो हम सुनना चाहते हैं। हमारे चर्च में अब एक नया आदमी है!”

अपने मस्तिष्क के नवीनीकरण से उसका कायाकल्प हो चुका है। इस पादरी ने यह साबित कर दिया है कि वृद्धि का नियम गणितीय दृष्टिकोण से उतना ही सटीक है, जितना कि रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र या गुरुत्वाकर्षण के नियम हैं।

प्रगति के सतत अवसर आपके लिए विद्यमान हैं

कुछ लोग कहते हैं कि वे इसलिए आगे नहीं निकल सकते या प्रमोशन नहीं पा सकते, क्योंकि वे एक ऐसी जगह काम कर रहे हैं, जहाँ तरक़्क़ी का कोई अवसर नहीं है या जहाँ तनख़्वाह निश्चित पैमानों से निधारित है। ज़रूरी नहीं है कि यह सच हो। आप किसी भी प्रकार की परिस्थिति में जीवन में आगे बढ़ने और तरक़्क़ी करने के लिए मस्तिष्क के नियमों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

रहस्य इस बात का एक स्पष्ट मानसिक चित्र बनाना है कि आप क्या बनना चाहते हैं। फिर आपको यह विश्वास रखना है कि आपके अवचेतन की शक्ति और बुद्धिमत्ता आपको सहारा देंगी। साथ ही आपको लगन रखनी है और अपना मनचाहा व्यक्तित्व हासिल करने का संकल्प लेना है। आस्था रखें कि आपकी मानसिक तस्वीर आपके अवचेतन मन में विकसित होगी और साकार होकर आपके जीवन में प्रकट हो जाएगी।

आप इस समय जो कर रहे हों, उससे प्रेम करें और आप जहाँ हों, वहाँ जितना अच्छे से अच्छा हो सकता हो, करें। दोस्ताना, दयालु, स्नेही और सद्भावना से भरपूर रहें। बड़ा सोचें और अमीरी के बारे में सोचें। इससे आपका वर्तमान कार्य आपकी जीत की सीढ़ी बन जाएगा। अपने सच्चे मूल्य के बारे में जागरूक हों और अपने मन में अमीरी का दावा करें। आप दिन भर में जिससे भी मिलते हैं, हर उस व्यक्ति के लिए अमीरी का दावा करें, चाहे वह बॉस, सहयोगी, फ़ोरमैन, ग्राहक या मित्र हो- अपने आस-पास के सभी लोगों के लिए। आप संपन्नता और प्रगति के अपने संप्रेषण का अनुभव करेंगे और असीमित प्रज्ञा बहुत जल्द ही आपके लिए अवसर का नया द्वार खोल देगी।

पूरी दुनिया में आपको रोककर रखने वाली कोई चीज़ नहीं है। केवल एक ही चीज़ आपको रोक सकती है- स्वयं आप, आपके विचार और ख़ुद के बारे में आपकी धारणा।

जब आप प्रगति करना चाहते हैं और उसका चित्र देखते हैं और जब अधिक धन, बढ़े हुए रुतबे और प्रतिष्ठा का अवसर आपके सामने पेश किया जाता है, तो आप उस विचार के प्रति ग्रहणशील महसूस करते हैं। उसे लपक लें; यह ज़्यादा बड़े और भव्य अवसरों की ओर एक क़दम साबित होगा। प्रगतिशील जीवन में इसी क्षण दाख़िल हों और तत्काल ईश्वर की अमीरी का अनुभव करें।

किस प्रकार एक व्यवसायी ने अपनी नकारात्मक सोच पर विजय पाई

एक महिला ने एक बार मुझसे शिकायत की कि उसका पति पैसों की कमी के लिए सरकार, करों और प्रतिस्पर्धात्मक व्यवस्था को लगातार कोसता रहता है।

उसके पति से बातचीत करते समय मुझे पता चला कि वह सोचता था कि वह परिस्थितियों का स्वामी होने के बजाय उनका शिकार है। बहरहाल, उसे यह अहसास होने लगा कि वह सोच की सृजनात्मक योजना में दाखिल हो सकता है, जो उसके परिवेश और परिस्थितियों के पार जाएगी और यह भी कि वह ईश्वर के साम्राज्य का नागरिक है। उसकी दैनिक प्रार्थना इस प्रकार थी:

“वृद्धि का नियम अटल है और प्रचुर वृद्धि की ओर मेरा मन सतत रूप से खुला हुआ

है। मेरा व्यवसाय अद्भुत तरीके से बढ़ता है, फैलता है और प्रगति करता है। मेरा धन हमेशा कई गुना हो जाता है। मुझे अपने भीतर के अनंत खजाने से भीतर और बाहर दोनों ओर प्रचुर संपत्ति मिलती है। मैं अपने दिलोदिमाग़ को ईश्वर की दौलत और संपन्नता के लिए खोलता हूँ। मेरी भीतरी और बाहरी दौलत बढ़ रही है।"

जब उसने इन आंतरिक सच्चाइयों से अपने दिमाग़ को पोषण दिया, तो उसकी बाहरी आपूर्ति अधिक प्रचुर हो गई। वह अब ख़ुद का व्यवसाय करता है और बहुत दौलतमंद है।

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. वृद्धि ही वह चीज़ है, जिसे सभी इंसान चाहते हैं। यह ईश्वर की आकांक्षा है, जो आपके माध्यम से अभिव्यक्ति खोज रही है। यही आपको ऊपर आने और अधिक ऊँचे स्तर तक उठने को कहती है।
2. अपने दिमाग़ में एक मानसिक चित्र का बीज बो दें। यह काम ख़ुशी और सुकून की भावना के साथ करें। ऐसा करते समय सुखद अंत पर मनन करें और आपको प्रार्थना पूरी होने की ख़ुशी हासिल होगी।
3. आप एक सृजनात्मक केंद्र हैं और आप सभी को प्रेम, बुद्धिमत्ता तथा समझ की वृद्धि दे सकते हैं। जैसा देंगे, वैसा पाएँगे और आपके जीवन में चमत्कार हो जाएँगे।
4. इन सच्चाइयों को अपने दिमाग़ में गहरे तक धँस जाने दें। आस्था और आशा से उन्हें ओत-प्रोत कर लें: "मैं अमीर बन रहा हूँ, मैं दूसरों को अमीर बना रहा हूँ और मैं सभी पर वरदानों की बारिश कर रहा हूँ।" यही अमीरी का राजमार्ग है।
5. अपने वैचारिक जीवन में दूसरों को वृद्धि प्रदान करें और यह जान लें कि आप एक माध्यम हैं, जिसके ज़रिए ईश्वर का प्रेम, सत्य, सौंदर्य और दौलत प्रवाहित होती है। दावा करें कि ये गुण दूसरों के माध्यम से भी लगातार प्रवाहित हो रहे हैं। इससे आप दौलत, मित्रों, ग्राहकों और अद्भुत अनुभवों को अपनी ओर आकर्षित कर लेंगे।
6. यदि आप पुरोहित हैं, तो लोगों को संपन्न जीवन के बारे में सिखाएँ। उन्हें सिखाएँ कि इसे कैसे हासिल करें। उन्हें दौलत के नियम बताएँ और सुखद व सफल जीवन का विज्ञान सिखाएँ। आपके चर्च में एक भी सीट ख़ाली नहीं रहेगी।
7. अवसर हमेशा आपके द्वार पर दस्तक देते रहते हैं। आप कैसा बनना और महसूस करना चाहते हैं, इसकी एक स्पष्ट मानसिक तस्वीर बनाएँ और यह विश्वास करें कि आपके अवचेतन की शक्ति इसे साकार कर देगी। आपके पास यह अवसर इसी समय है!
8. आपके सिवाय कोई दूसरा दोषी नहीं है। सरकार, कर, प्रतिस्पर्धियों और संसार की परिस्थितियों को दोष देना छोड़ दें। आप असीम मस्तिष्क और असीम दौलत के नागरिक हैं! बड़ा सोचें, अमीरी के चित्र बनाएँ और यह महसूस करें कि आप अमीर हैं- बाक़ी काम आकर्षण का नियम कर देगा।

अध्याय ग्यारह

कल्पना के चित्र और संपन्नता

नेपोलियन ने एक बार कहा था, “कल्पना संसार पर राज करती है।” हेनरी वार्ड बीचर ने भी इसी अंदाज़ में कहा था, “कल्पना के बिना आत्मा वैसी ही है, जैसे टेलिस्कोप के बगैर वेधशाला।”

कल्पना आपके दिमाग़ की मूलभूत शक्तियों में से एक है। इसमें आपके विचारों को चित्र का रूप देने और वस्त्र पहनाने की शक्ति है; उन्हें समय के पर्दे पर दिखाने की शक्ति है। कल्पना वह शक्तिशाली औज़ार है, जिसका उपयोग सभी महान वैज्ञानिक, कलाकार, भौतिक शास्त्री, आविष्कारक, दिग्गज व्यवसायी और लेखक करते हैं। वैज्ञानिक अपनी कल्पना से वास्तविकता की गहराइयों तक पहुँचते हैं, जिससे उन्हें प्रकृति के रहस्य उजागर करने की शक्ति मिलती है।

जब संसार कहता है, “यह असंभव है; इसे नहीं किया जा सकता,” तो नियमबद्ध, नियंत्रित और निर्देशित कल्पना वाला व्यक्ति कहता है, “यह किया जा चुका है!”

ख़ुद के अमीर और सफल होने की कल्पना करना भी आपके लिए उतना ही आसान- और ज़्यादा रोचक, आकर्षक व मनोहारी- है, जितना कि ग़रीब, कंगाल और असफल होने की कल्पना करना। यदि आप अपनी इच्छाओं या आदर्शों को साकार करना चाहते हैं, तो अपने दिमाग़ में इनके साकार होने का मानसिक चित्र बनाएँ। अपनी इच्छा के साकार होने की सतत कल्पना करें। इस प्रकार आप उसे सचमुच घटित होने पर विवश कर देंगे।

आप वास्तविकता के रूप में जिसकी कल्पना करते हैं, वह आपके मस्तिष्क में पहले से ही मौजूद है और यदि आप अपने आदर्श के प्रति वफ़ादार बने रहें, तो एक दिन वह चीज़ अवश्य साकार होगी। आप अपने दिमाग़ पर जो छाप छोड़ते हैं, आपके भीतर का मास्टर आर्किटेक्ट पर्दे पर वही दृश्य दिखा देगा।

उसने करोड़ों डॉलर वाले व्यवसाय की कल्पना की

सामान्य बातचीत में एक उत्कृष्ट व्यवसायी ने मुझे बताया कि उसने किस प्रकार एक छोटे स्टोर से शुरुआत की, लेकिन नियमित रूप से और सुनियोजित तरीके से वह वर्षों तक यह चित्र देखता रहा कि वह एक बड़े कॉरपोरेशन का मुखिया है, जिसकी शाखाएँ पूरे देश में फैली हुई हैं। सुबह, दोपहर और रात को दस-पंद्रह मिनट तक वह अपने दिमाग़ में विशाल इमारतों, फ़ैक्ट्रियों और स्टोर्स के चित्र देखता था। उसे पूरा विश्वास था कि दिमाग़ की कीमियागिरी की बदौलत उसका यह सपना साकार हो जाएगा।

धीरे-धीरे उसका व्यवसाय चल निकला। उसे अपने स्टोर का विस्तार करना पड़ा और अन्य शाखाएँ खोलनी पड़ी। आकर्षण के शाश्वत नियम द्वारा वह अपनी ओर ऐसी योजनाओं, कर्मचारियों, मित्रों, धन सहित हर उस चीज़ को आकर्षित करने लगा जिसकी ज़रूरत उसे अपने आदर्श चित्र को साकार करने के लिए थी।

उसने सच्चे दिल और पूरी गंभीरता से अपनी कल्पना का अभ्यास किया और उसे विकसित करके अपने मानसिक चित्रों के अनुरूप तब तक जिया, जब तक कि कल्पना शक्ति ने उसकी इच्छाओं को साकार नहीं कर दिया। आज वह बहुत दौलतमंद है और हज़ारों कर्मचारियों वाले एक कॉरपोरेशन का प्रेसिडेंट है।

उसने अपने भाई को दौलतमंद बनाया

दक्षिण कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय की एक विद्यार्थी ने मेरी यह व्याख्या सुनी कि बाइबल में जोसेफ़ नाम का एक अर्थ कल्पना भी है। बाइबल में कहा गया है कि जोसेफ़ कई रंगों का कोट पहनता है। बाइबल के संदर्भ में कोट एक मनोवैज्ञानिक आवरण है। आपके मनोवैज्ञानिक "वस्त्र" हैं – नज़रिए, मानसिक अवस्थाएँ और आपके दिल में रहने वाली भावनाएँ। जोसेफ़ का कई रंगों का कोट हीरे के अनेक फलकों या किसी विचार को आकृति देने वाले वस्त्र पहनाने की आपकी क्षमता का प्रतीक है।

वह विद्यार्थी यह कल्पना करने लगी कि उसका बहुत ग़रीब भाई विलासिता की गोद में रह रहा है। उसने चित्र देखा कि उसके भाई का चेहरा ख़ुशी से दमक रहा है, उसकी भाव-भंगिमा बदल रही है और उसके होंठों पर बड़ी सी मुस्कान खिल रही है। उसने कल्पना की कि उसका भाई उसे वह सब बता रहा है, जो वह सुनना चाहती है, जैसे, "दीदी, मैं दौलतमंद, सफल और ख़ुश हूँ। मैं बेहतरीन महसूस करता हूँ! मेरे पास एक नई कार व प्यारा सा मकान है और मैं दौलत में खेल रहा हूँ!"

वह लड़की दिन-रात अपने मानसिक चित्र के प्रति निष्ठावान रही। उसने यह चित्र स्पष्टता और वास्तविकता की कल्पना के साथ तब तक देखा, जब तक कि उसने अपनी मानसिक फ़िल्म से अपने अवचेतन को ओत-प्रोत नहीं कर लिया। दो महीने बाद उसके भाई को एक शानदार नौकरी मिल गई। जिस कंपनी के लिए वह काम करता था, उसने उसे कामकाज के सिलसिले में एक कार दे दी और उसने लॉटरी में बहुत बड़ी धनराशि भी जीत ली! उस लड़की को अपने भाई के मुँह से वही सब सुनने की ख़ुशी, रोमांच और संतुष्टि मिली, जो उसने कल्पना में सुना था।

जहाँ अभाव है, वहाँ आप प्रचुरता और दौलत की कल्पना कर सकते हैं; जहाँ विवाद है, वहाँ शांति की कल्पना कर सकते हैं; और जहाँ रोग हैं, वहाँ स्वास्थ्य की कल्पना कर सकते हैं। कल्पना हर चीज़ प्रदान करती है; यह दौलत, सौंदर्य, न्याय और ख़ुशहाली उत्पन्न करती है, जो इस संसार में सब कुछ हैं।

आर्थिक मामलों में सफलता की कल्पना करना

मेरे एक व्यावसायिक मित्र को एक बार 10,000 डॉलर वसूल करने में मुश्किल आ रही

थी। उसके एक पुराने ग्राहक ने सामान ख़रीदने के बाद यह रक़म नहीं चुकाई थी। मेरा मित्र दो साल से भी अधिक समय से उस व्यक्ति से बार-बार तकादे कर रहा था, लेकिन उसे वादों के सिवाय कुछ नहीं मिला था। वह इस पुराने ग्राहक पर दावा ठोंकने में झिझक रहा था, क्योंकि उनका व्यावसायिक संबंध पुराना था, लेकिन वह मन ही मन उसके प्रति द्वेषपूर्ण और क्रोधित था।

मेरे सुझाव पर मित्र ने ग्राहक के प्रति अपना नज़रिया उलट दिया। वह कल्पना करने लगा कि उसका ग्राहक ईमानदार, संजीदा, प्रेमपूर्ण और दयालु है। कुछ समय बाद मेरे मित्र की प्रतिक्रिया बदल गई। वह दिन में कई बार शांति से बैठता था और अपने हाथ में 10,000 डॉलर के चेक की कल्पना करता था। वह बहुत स्पष्टता से यह कल्पना करता था कि वह उस चेक को अपने स्थानीय बैंक में जमा कर रहा है। उसने कर्ज़ चुकाने के लिए ग्राहक को धन्यवाद का एक काल्पनिक पत्र भी लिखा। फिर उसने पत्र सील करके डेस्क के ड्रॉअर में रख लिया।

वह जानता था कि वह अपने अवचेतन मन को एक निश्चित चित्र दे रहा है और वह इस बारे में भी जागरूक था कि अवचेतन उसे घटित करवा रहा है। दस दिनों में उसे उसी ग्राहक का एक लिफ़ाफ़ा मिला, जिसमें 10,000 डॉलर का चेक था। उसके साथ यह चिट्ठी भी थी, “पिछले कई दिनों से आप मेरे दिमाग़ में थे। मुझे लगा कि मुझे आपको पूरा भुगतान कर देना चाहिए। विलंब के लिए क्षमा चाहता हूँ; किसी दिन मैं पूरी बात विस्तार से बताऊँगा।” इससे साबित होता है कि मानसिक चित्र बदलने से सब कुछ बदल जाता है।

कल्पना दौलत उड़ेलती है

दरअसल टेलीविज़न, रेडियो, रेडार, सुपरजेट और अन्य सभी आधुनिक आविष्कार मनुष्य के कल्पनाशील मस्तिष्क से ही उत्पन्न हुए हैं। आपकी कल्पना असीमित ख़ज़ाना है, जो आपकी ओर संगीत, कला, कविता और आविष्कारों के सभी बेशक़ीमती मोती प्रवाहित करती है।

पल भर के लिए किसी प्रख्यात, प्रतिभाशाली आर्किटेक्ट के बारे में सोचें। वह अपने दिमाग़ में वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक सुंदर, आधुनिक, इक्कीसवीं सदी का शहर बनाता है, जिसमें स्विमिंग पूल, मछलीघर, मनोरंजन केंद्र, पार्क आदि हों। वह अपने दिमाग़ में वह सबसे सुंदर महल बना सकता है, जो किसी इंसान ने अपनी आँख से देखा हो। वह निर्माता को अपनी योजनाएँ देने से पहले ही इमारतों की संपूर्ण रूप में कल्पना कर सकता है। उसकी भीतरी अमीरी उसके और असंख्य लोगों के लिए बाहरी अमीरी का सृजन कर देती है।

आप अपने भविष्य के आर्किटेक्ट हैं। आप एक पेड़ के बीज को देखकर ही अपनी कल्पना की आँख से नदियों, झरनों आदि से भरे एक विशाल जंगल का सृजन कर सकते हैं। आप उस जंगल में सभी प्रकार के जीव-जंतुओं की कल्पना कर सकते हैं। यही नहीं, आप हर बादल में रंग भर सकते हैं। आप रेगिस्तान को देखकर उसमें गुलाब खिलने तथा आनंद पाने की कल्पना कर सकते हैं। जो लोग अंतर्बोध व कल्पना में निपुण होते

हैं, वे रेगिस्तान में पानी खोज लेते हैं और वहाँ शहर बना लेते हैं, जहाँ दूसरे लोगों को केवल रेत ही रेत और वीरान इलाक़ा ही दिखता हो।

रेगिस्तान में संपत्ति

लगभग दस वर्ष पहले मैंने एप्पल वैली में एक आदमी से कुछ ज़मीन ख़रीदी। उस आदमी ने मुझे बताया कि 1930 के दशक की शुरुआत में जब मंदी गहरा रही थी, तो वह अपनी पत्नी के साथ कार से नेवादा जा रहा था। एप्पल वैली से गुज़रते समय, जो उस वक़्त विशाल रेगिस्तान थी, उसने अपनी पत्नी से कहा, “निकट भविष्य में यहाँ पर एक क़स्बा होगा। कई लोग इस रेगिस्तान में रहने आएँगे और स्कूल, अस्पताल, घर बनाएँगे तथा उद्योग लगाएँगे। यह सरकारी ज़मीन है। मैं यहाँ पर छह सौ एकड़ ज़मीन ख़रीदने वाला हूँ।”

उस वक़्त ज़मीन की क़ीमत 2 डॉलर प्रति एकड़ थी। 2 डॉलर प्रति एकड़ के निवेश से उसने थोड़ी संपत्ति बना ली है। उस ज़मीन की क़ीमत अब 400 डॉलर प्रति एकड़ या उससे अधिक है। असंख्य स्त्री-पुरुष नेवादा जाते वक़्त उसी इलाक़े से गुज़रे होंगे। उन्हें सिर्फ़ एक रेगिस्तान नज़र आया- जबकि उस व्यक्ति ने सौभाग्य देखा।

बाइबल कहती है... मैं वीराने में पानी का ताल और सुखी ज़मीन पर पानी के सोते बनाऊँगा। (इसाइया 41:18)

एक व्यक्ति ने किस तरह अपनी इच्छाओं का कारगर चित्र देखा

एक स्कूल शिक्षिका मेरा दैनिक रेडियो कार्यक्रम सुनती है। उसने मुझे लिखा था कि उसने अपनी नोटबुक में स्वास्थ, संपति, प्रेम और अभिव्यक्ति शब्द लिख लिए हैं। उसने कहा कि उसकी सेहत ख़राब थी और उसके पास पर्याप्त पैसे नहीं थे। वह अविवाहित थी और किसी कॉलेज में पड़ाने का अवसर खोज रही थी। स्वास्थ्य के नीचे उसने अपनी नोटबुक में लिखा: “मैं पूरी तरह स्वस्थ हूँ; ईश्वर ही मेरा स्वास्थ्य है।” सपंत्ति के नीचे उसने लिखा: “ईश्वर की संपत्ति अब मेरी है और मैं अमीर हूँ।” प्रेम के नीचे उसने लिखा: “मैं ख़ुशहाल शादी-शुदा हूँ और दैवीय आनंद में रह रही हूँ।” अभिव्यक्ति के नीचे उसने लिखा: “दैवीय प्रज्ञा मुझे अपने सही काम की ओर मार्गदर्शन करती है और ले जाती है, जिसे मैं अद्‌भुत आमदनी के लिए आदर्श ढँग से करती हूँ।”

हर सुबह-शाम वह अपनी नोटबुक की इबारत देखती थी और यह दावा करती थी: “ये सारी इच्छाएँ मेरे अवचेतन मन द्वारा इसी समय पूरी की जा रही हैं।” फिर वह हर श्रेणी के पूरे परिणाम का चित्र देखने में थोड़ा समय लगाती थी। वह कल्पना करती थी कि उसका डॉक्टर उससे कह रहा है, “आप पूरी तरह ठीक हो चुकी हैं। अब आप पूर्णत: स्वस्थ हैं।” वह कल्पना करती थी कि उसकी माँ, जो उसके साथ रहती थीं, उससे कह रही हैं, “अब तुम अमीर हो। हम यात्राएँ कर सकते हैं। मैं बहुत ख़ुश हूँ।” फिर वह कल्पना करती थी कि पादरी कह रहा है, “अब मैं तुम्हें पति-पत्नी घोषित करता हूँ,” और वह “महसूस” करती थी कि उसकी उँगली पर जो काल्पनिक अँगूठी पहनाई जा

रही है, वह कितनी स्वाभाविक, ठोस और मूर्त है। सोने जाने से पहले उसका आख़िरी मानसिक चित्र यह रहता था कि उसके स्कूल का प्रिंसिपल उससे कह रहा है, “अफ़सोस है कि आप यहाँ की नौकरी छोड़कर जा रही हैं, लेकिन आपके कॉलेज की नौकरी के बारे में सुनकर ख़ुशी हुई। बधाई!”

वह हर मानसिक फ़िल्म को पूरे सुकून और आनंद के साथ अलग-अलग लगभग पाँच-पाँच मिनट तक देखती थी। वह जानती थी कि ये चित्र परासरण द्वारा उसके अधिक गहरे मन में समा जाएँगे, जहाँ वे अँधेरे में अंकुरित होंगे और सही तरीक़े से सही समय पर प्रकट हो जाएँगे। उसे यह सब बहुत आकर्षक मानसिक अभ्यास लगा। उसका संसार जादुई अंदाज़ में बदलकर उसकी नियमबद्ध, नियंत्रित व निर्देशित दैनिक कल्पना जैसा ही बन गया। तीन महीने के भीतर ही उसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो गईं।

उसे यह पता चला कि उसके भीतर एक डिज़ाइनर, एक आर्किटेक्ट और एक बुनकर होता है, जो उसके मन, विचारों, चित्रों, भावनाओं तथा धारणाओं के धागों को लेता है और उन्हें जीवन के वस्त्र में ढाल देता है। स्वास्थ्य, संपत्ति, प्रेम और अभिव्यक्ति की दौलत आपको इसी तरह मिलती है। बाइबल की उसकी प्रिय पंक्ति भजन 121:1 है, मैं अपनी नज़रें *(कल्पना)* पहाड़ियों की ओर ऊपर उठाऊँगा, जहाँ से मुझे मदद मिलती है।

आप हमेशा चित्र बना रहे होते हैं

आप लगातार अपनी कल्पना का उपयोग कर रहे होते हैं- चाहे वह सृजनात्मक तरीक़े से हो या विध्वंसात्मक। आप मानसिक चित्रों के ज़रिए सोचते हैं। अपनी माँ के बारे में सोचें। उनके बारे में सोचते वक़्त आपको उनकी तस्वीर दिखाई देती है। घर के बारे में सोचते वक़्त आप घर को अपने मन की आँख से देखते हैं। ग़रीबी का मारा आदमी हमेशा सभी प्रकार के अभावों तथा सीमाओं का चित्र देखता है और उसका मन उसके देखे गए मानसिक चित्रों के अनुसार ही परिणाम देता है।

जब आपकी शादी होने वाली थी, तो आपके मन में स्पष्ट, यथार्थवादी चित्र थे। कल्पना की शक्ति से आपने पादरी या पुजारी को देखा था। आपने उसे विवाह की रस्म पूरी कराते सुना था। आपने फूलों और चर्च को देखा था। आपने संगीत सुना था। आपने अपनी उँगली पर अँगूठी की कल्पना की थी और आप अपनी कल्पना में हनीमून मनाने नियाग्रा फ़ॉल्स या यूरोप गए थे। यह सब आपकी कल्पना में हुआ था।

इसी तरह कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने से पहले आपके दिमाग़ में एक सुंदर नाटक खेला गया था। आपने कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के सभी विचार भौतिक रूप में देखे थे। आपने कल्पना की थी कि कॉलेज का प्रोफ़ेसर या प्रेसिडेंट आपको डिप्लोमा या डिग्री दे रहा है। आपने देखा था कि सभी विद्यार्थी गाउन पहने हैं। आपने सुना था कि आपकी माँ, पिता या गर्लफ्रेंड आपको बधाई दे रही है। आपने उनके आलिंगन और चुंबन महसूस किए थे। यह सब वास्तविक, नाटकीय, रोमांचक और अद्‌भुत था।

चित्र आपके दिमाग़ में न जाने कहाँ से घुमड़ आए, लेकिन आप जानते हैं और आपको यह स्वीकार करना होगा कि ऐसा आंतरिक सृजनकर्ता था और है, जो इतना शक्तिशाली है कि उसने आपकी कल्पना में देखे गए चित्रों को जीवन, गति और आवाज़

प्रदान की। इन चित्रों ने आपसे कहा था, “हमारा जीवन सिर्फ़ आपके लिए है!”

किस प्रकार एक ब्रोकर दूसरों के लिए दौलत के चित्र देखता है

मेरा एक ब्रोकर मित्र अपने ग्राहकों को अमीर बनाने में बहुत रुचि लेता है। फलस्वरूप वह बहुत सफल है और हाल ही में उसे तरक़्क़ी देकर कंपनी का एक्ज़ीक्यूटिव वाइस-प्रेसिडेंट बना दिया गया है। उसका तरीक़ा बड़ा आसान है। ऑफ़िस आने से पहले वह स्थिर बैठता है, अपने मन को शांत करता है, अपने शरीर को शिथिल करता है और मन ही मन बहुत से ग्राहकों से बातचीत करता है। इस काल्पनिक बातचीत में ग्राहक एक के बाद एक उसके बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय पर उसे बधाई देते हैं और सही स्टॉक ख़रीदने की सलाह देने के लिए भी उसकी प्रशंसा करते हैं। वह इस काल्पनिक बातचीत को नियमित रूप से मंचित करता है और मनोवैज्ञानिक रूप से इसे सत्य के रूप में अपने अवचेतन में आरोपित कर लेता है।

दिन में उसे जब भी फ़ुरसत मिलती है, तो यह ब्रोकर अपने मानसिक चित्रों की ओर लौट आता है और इस प्रकार अपने अवचेतन मन पर गहरी छाप छोड़ देता है। उसने मुझे बताया कि उसने अपने कई ग्राहकों को काफ़ी दौलत कमाकर दी है और उसकी सलाह से अब तक किसी को भी एक पाई तक का नुक़सान नहीं हुआ है।

इस ब्रोकर को अहसास है कि जो भी मन में बोया जाता है, उसकी फ़सल स्वाभाविक प्रक्रिया के अनुसार बाहर के भौतिक संसार में प्रकट हो जाती है। यह सतत मानसिक चित्र है, जो मस्तिष्क की गहराई में उकेरा जाता है। अपनी मानसिक फ़िल्म को अक्सर चलाएँ। उसे बार-बार अपने मन के पर्दे पर देखने की आदत डाल लें। कुछ समय बाद यह एक निश्चित, आदतन कार्य बन जाएगा। वह आंतरिक फ़िल्म, जिसे आपने अपने मन की आँखों से देखा है, बाहर प्रकट हो जाएगी। रोमन्स 4:17 में हम पढ़ते हैं,... जो चीज़ें नहीं थी, उन्होंने उन्हें ऐसे बुलाया, जैसे वे वहीं थीं... और अदृश्य चीज़ें नजर आने लगीं।

अमीरी का विज्ञान

कल्पना के विज्ञान में सबसे पहले तो आपको अपनी कल्पना को अनुशासित करना होगा, ताकि यह यहाँ-वहाँ अनियंत्रित होकर न दौड़ने लगे। विज्ञान शुद्धता पर ज़ोर देता है। यदि आप रासायनिक रूप से शुद्ध उत्पाद चाहते हैं, तो आपको सारे बाहरी तत्वों के सभी अंश हटाने पड़ेंगे। आपको बाक़ी सारे कचरे को दूर फेंकना होगा।

कल्पना के विज्ञान में आप ईर्ष्या, लोभ, डर, चिंता और द्वेष जैसी सारी मानसिक अशुद्धियों को हटा देते हैं। आपको जीवन के लक्ष्यों और उद्देश्यों पर अपना सारा ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आपको एक अमीर और ख़ुशहाल जीवन जीने के अपने लक्ष्य से नहीं भटकना चाहिए। आप अपनी इच्छाओं की वास्तविकता में मानसिक रूप से डूब जाएँगे, तो आप अपने संसार में उन्हें भौतिक रूप से भी देख लेंगे।

जिस व्यवसायी का कारोबार समृद्ध हो रहा है, वह ऑफ़िस से घर आता है और

अपने मन में असफलता की फ़िल्म चलाता है, यानी वह शेल्फ़ ख़ाली देखता है, कल्पना करता है कि वह दिवालिया हो गया है और उसका बैंक ख़ाता ख़ाली हो चुका है। वह यहाँ तक कल्पना कर लेता है कि उसका धंधा बंद हो गया है, जबकि वास्तविकता यह है कि उस वक़्त वह समृद्ध हो रहा है। उसके इस नकारात्मक मानसिक चित्र में तनिक भी सच्चाई नहीं है। यह सरासर झूठ है।

दूसरे शब्दों में, जिस चीज़ से वह डरता है, वह उसकी दूषित कल्पना के सिवाय कहीं मौजूद नहीं है। यह असफलता कभी साकार नहीं होगी- जब तक कि वह भय के भाव से उस दूषित चित्र को ऊर्जा न देता रहे। यदि वह लगातार यही मानसिक चित्र देखता रहेगा, तो ज़ाहिर है उसे असफलता झेलनी पड़ेगी। उसके पास असफलता और सफलता दोनों का ही विकल्प है, लेकिन वह असफलता को चुन रहा है।

उन मानसिक चित्रों, विचारों और छवियों को अपने दिमाग़ के सिंहासन पर बैठाएं, जो आपको स्वस्थ करें, आशीष दें, समृद्ध करें, प्रेरित करें और शक्ति दें। यह सच है कि आप अपनी कल्पना जिस रूप में करते हैं, आप वैसे ही बन जाते हैं। आपकी सतत कल्पना आपकी दुनिया को दोबारा बनाने के लिए पर्याप्त है। अपने मन के नियमों पर विश्वास करें कि वे आपकी भलाई को साकार रूप में प्रकट कर देंगे। इस तरह आप जीवन की सारी नियामतों और अमीरी का अनुभव कर सकते हैं।

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. “कल्पना विश्व पर राज करती है।” -नेपोलियन
2. कल्पना आपके दिमाग़ की एक बुनियादी शक्ति है और इसमें आपके सभी विचारों को साकार रूप देकर संसार के पर्दे पर दिखाने की शक्ति है।
3. यदि आप व्यवसाय में हैं, तो आप एक ज़्यादा बड़े व्यवसाय, नए ऑफ़िसों, नई इमारतों और अतिरिक्त स्टोर्स का मानसिक चित्र देख सकते हैं। मस्तिष्क की कीमियागिरी की बदौलत ये चित्र वास्तविक हो जाएँगे।
4. आप दूसरों को भी अमीर बना सकते हैं, बशर्ते आप अपने मानसिक चित्र में उन्हें वैसा देखते हों, जैसा उन्हें होना चाहिए: प्रफुल्लित, ख़ुशहाल, आनंदमग्न, दौलतमंद और सफल। अपने मानसिक चित्र के प्रति निष्ठावान रहेंगे, तो वह साकार हो जाएगा। इस तरह आप दूसरे व्यक्ति को आशीष देते हैं।
5. यदि आपको कोई कर्ज़ वसूलने में मुश्किल आ रही है, तो अपने हाथ में चेक का काल्पनिक चित्र देखें, उसकी वास्तविकता महसूस करें और उस व्यक्ति की समृद्धि व सफलता के लिए शुक्रगुज़ार रहें जिस पर आपका कर्ज़ है। ऐसा करेंगे, तो वह चमत्कारिक रूप से आपका पैसा लौटा देगा।
6. मनुष्य की काल्पनिक शक्तियों से ही हमारी सारी नई खोजें, जैसे रेडियो, टेलीविज़न, रेडार और सुपरजेट हवाई जहाज़ बने हैं। कल्पना मस्तिष्क की गहराई तक जाती है और जो भी बीज मौजूद होता है, उसे अंकुरित करके संसार के पर्दे पर दिखा देती है।

7. जब आप रेगिस्तान देखते हैं, तो आपको क्या नज़र आता है? कुछ लोग ज़बर्दस्त दौलत देखते हैं और वे रेगिस्तान को गुलाब खिलने जैसा आनंददायक अनुभव बना देते हैं। कल्पना को “ईश्वर की कार्यशाला” कहा जाता है।

8. आप कोई मानसिक फ़िल्म चलाकर हर इच्छा पूरी होने की कल्पना कर सकते हैं। अपनी इच्छा को नाटकीय रूप से मंचित करें और अंत की कल्पना करें; आपका अवचेतन इसे साकार कर देगा।

9. आप हमेशा कल्पना कर रहे होते हैं, चाहे वह नकारात्मक हो या सृजनात्मक। केवल वही कल्पना करें, जो प्रिय हो और आपके तथा दूसरों के हित में हो। ख़ुद से पूछें “मैं किसी दूसरे के लिए जो चित्र देख रहा हूँ, क्या मैं भी उसी तरह जीना पसंद करूँगा?” आपका जवाब “हाँ” होना चाहिए। याद रखें, आप दूसरों के लिए जो इच्छा करते हैं वह आप स्वयं के लिए भी कर रहे हैं।

10. कल्पना करें कि दूसरे लोग ख़ुशहाल, आनंदमग्न, अमीर और समृद्ध हैं। उनकी समृद्धि व आनंद पर ख़ुश हों। यह अपने लिए दौलत हासिल करने का अचूक तरीक़ा है।

11. कल्पना के विज्ञान में आप लोभ, ईर्ष्या, डाह, डर, शंका और क्रोध जैसे सारे कचरे और अशुद्धियों को दूर कर देते हैं। अपना ध्यान केवल अपने लक्ष्यों पर केंद्रित करें और कल्पना करें कि वे दैवीय योजना के तहत पूर्ण हो गए हैं।

12. मनुष्य वही है, जो वह स्वयं के होने की कल्पना करता है। वह कल्पना करें, जो प्यारी, शुभ और ईश्वर सदृश हो। ख़ुद को अमीर महसूस करेंगे, तो स्वर्ग की सारी दौलत आपकी ओर आकर्षित होने लगेगी।

अध्याय बारह

ऊर्ध्वगामी और समृद्ध बनें

बाइबल में कहा गया है, अगर मुझे पृथ्वी से ऊपर उठा दिया जाए, तो मैं सभी लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लुँगा। (जॉन 12: 32)

बाइबल के अन्य कथनों की तरह ही यह कथन भी विशुद्ध रूप से मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक है, जिसे आलंकारिक भाषा में लिखा गया है। यह हम सभी को बताता है कि हम ख़ुद को ग़रीबी, रोग, अभाव और सभी तरह की सीमाओं से ऊपर कैसे उठाएँ।

ऊपर उठने वाला या ऊर्ध्वगामी बनने के लिए आपको अपनी इच्छाओं को स्वीकृति के बिंदु तक ऊपर उठाना होता है। इसके बाद प्रकटीकरण अवश्य होगा। आपकी भौतिक इंद्रियाँ जो खोज-ख़बर देती हैं, वह काफ़ी निराशाजनक है। ऊर्ध्वगामी के रूप में आप अपने भीतर मौजूद असीमित उपस्थिति तथा शक्ति की ओर मुड़ते हैं और वहाँ पर अपने मन का लंगर डाल लेते हैं। यह असीमित उपस्थिति आपकी पुकार पर प्रतिक्रिया करती है। जब आप दैवीय शक्ति को पुकारते हैं, तो आपको जवाब अवश्य मिलेगा। इसके ज़रिए आप ऐसी आस्था, साहस, शक्ति और बुद्धिमत्ता पा सकते हैं, जो सामान्य भौतिक इंद्रियों से परे होती है। तब आप ऊपर उठ जाते हैं, पुरानी अवस्था मर जाती है और नई अवस्था का पुनर्जन्म होता है।

आप हताश मनोदशा में हितकारी चीज़ो को प्रकट नहीं कर सकते। स्वप्न देखें और इसकी वास्तविकता पर मनन करें। इस तरह आप तमाम बाधाओं और मुश्किलों से ऊपर उठ जाएँगे। जब आप अपने भीतर ईश्वर की उपस्थिति पर मनन करते हैं, तो आप स्वयमेव अपने दिमाग़ में घुमड़ने वाली सभी डरावनी छायाओं को तितर-बितर कर देते हैं।

नियम यह है कि आप महज़ संयोग से समुद्र किनारे किसी को डूबने से बचाकर या अकस्मात् हुई मुलाक़ात में किसी करोड़पति को आकर्षित करके झुग्गी और ग़ुमनामी से दौलत, सम्मान तथा शोहरत तक ऊपर नहीं उठ सकते। एक सरल सच्चाई याद रखें: आपको हमेशा अपने चरित्र का प्रदर्शन करना होगा, क्योंकि चरित्र ही भाग्य है।

ऊँचाइयों तक कैसे उठें

अपनी ऊर्जा ,योग्यताओं और गुणों को प्रकट करें। अपनी आंतरिक शक्तियों के बारे में अधिक सीखने का उत्साह विकसित करें। फिर आप आश्चर्यजनक पर्वत-शिखरों तक पहुँचने में कामयाब हो सकते हैं। जो ऊर्जावान, आत्मविश्वासी और उद्यमी व्यक्ति उचित काम में जुटता है, सही चीज़ करता है और स्वर्णिम नियम का पालन करता है, वह अपने

जीवन को सफल बना लेगा, चाहे उसे कोई मददगार अजनबी मिले या न मिले, चाहे वह सही सांसद को जानता हो या न जानता हो; चाहे वह लॉटरी जीत पाए या न जीत पाए।

आपका चरित्र और मानसिक नज़रिया आपको बनाने या मिटाने का काम करते हैं। यह आपके बारे में जितना सच है, उतना ही आपके देश, आपके व्यवसाय, आपके चर्च या किसी अन्य संगठन के बारे में भी सच है।

यदि आपके मन में ख़ुद को ऊपर उठाने और अपना सिर भीड़ के ऊपर रखने की इच्छा है, तो ईश्वर से ख़ुद को वह देने को कहें, जिसकी आपको ज़रूरत है- और वह ऐसा अवश्य करेगा। आपके मन में जिस गुण की इच्छा है, उस पर हर दिन मनन करके आप अपने अवचेतन मन में उसका निर्माण कर सकते हैं।

विजय पाने की ख़ुशी

आप यहाँ पर विकास करने, आगे जाने और अपने भीतर के देवत्व को खोजने के लिए आए हैं। आप यहाँ पर समस्याओं, मुश्किलों और चुनौतियों से दो-चार होने - और उन पर विजय पाने के लिए आए हैं। ख़ुशी विजय पाने में है! यदि क्रॉसवर्ड पज़ल आपके लिए पहले से ही भरी हुई हो, तो यह संसार बहुत ही नीरस और बोझिल होगा। पुल बनाते वक़्त इंजीनियर को सभी बाधाओं, असफलताओं और मुश्किलों को पार करने में ख़ुशी होती है। आप यहाँ पर बुद्धिमत्ता, शक्ति और समझ में समृद्ध बनते हुए अपने मानसिक और आध्यात्मिक संसाधनों को पैना करने आए हैं। वरना आप कभी भी अपने देवत्व को नहीं खोज पाएँगे।

कभी भी अपने छोटे बच्चे को हर चीज़ के लिए अनंत काल तक आप पर निर्भर न रहने दें। जब वह पर्याप्त बड़ा हो जाए, तो उसे सिखाएँ कि लॉन कैसे तराशना है, अख़बार कैसे बेचना है और पैसे कमाने के लिए छुटपुट काम कैसे अच्छी तरह करना है। उसे श्रम की गरिमा सिखाएँ। उसे यह भी सिखाएँ कि उसे पड़ोसी का लीन तराशने या अख़बार बेचने के बदले में जो पैसा मिलता है, वह अच्छी तरह काम करने की बदौलत मिलता है। इससे आपके बेटे को अपनी उपलब्धि पर गर्व होगा और दूसरों की सेवा करने में अपने योगदान पर भी गर्व होगा। इससे वह स्वावलंबन सीखेगा और उसका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। उसे यह भी सिखाएँ कि वह दूसरों में अच्छाई देखे और उसे प्रकट करे। जब आप ऐसा करेंगे, तो वह हमेशा निर्भर, शिकायत करने वाला और रोने वाला नहीं बनेगा; इसके बजाय वह तो ऊर्ध्वगामी बनेगा। वह धन का सम्मान करेगा और अपने कमाए पैसे को बचाएगा, लेकिन आप उसे जो आसान पैसा देंगे, उसे वह कंप्यूटर गेम्स या पूल हॉल में बर्बाद कर देगा।

दूसरों को ऊपर कैसे उठाएँ

आपको इस बारे में सतर्क रहना चाहिए कि आप दूसरों की मदद किस प्रकार करते हैं। कभी भी किसी व्यक्ति के विकास करने और बढ़ने का अवसर न छीनें। जो युवक बहुत

आसानी से और अक्सर पैसा तथा मदद पाता रहता है, उसे यह आत्म-साक्षात्कार और श्रम से अधिक आसान लगता है। हमेशा मदद करते रहना उसके पुरुषोचित विकास के लिए विनाशकारी है। हर समय मदद करना और उसके पुरुषोचित गुणों को नष्ट करना छोड़ दें। उसे संघर्ष करके उबरने और अपनी आंतरिक शक्तियों को खोजने का अवसर प्रदान करें, वरना वह दूसरों पर आश्रित हो जाएगा और हमेशा मदद माँगता रहेगा।

मैंने एक महिला से कहा कि वह पूर्व से आए अपने एक रिश्तेदार को आश्रित बनाना छोड़ दे। उस महिला का नज़रिया था: “बेचारा टॉम यहाँ पर अजनबी है। उसके लिए नौकरी खोजना मुश्किल है,” आदि। वह उसका किराया चुकाती रही, उसके लिए किराना ख़रीदती रही और उसे पॉकेट मनी देती रही। उस महिला का कहना था कि वह ऐसा तब तक करती रहेगी, जब तक कि उसे नौकरी न मिल जाए। टॉम को कभी नौकरी नहीं मिल पाई। इसके बजाय वह पूरी तरह आश्रित बन गया- और वह इस बात पर महिला से चिढ़ता भी था कि वह उसे ज़्यादा नहीं देती थी! क्रिसमस डिनर के दौरान उसने महिला की अधिकांश चाँदी चुरा ली। वह महिला विलाप करने लगी, “जब मैंने उसकी ख़ातिर इतना कुछ किया था, तो उसने ऐसा क्यों किया?”

बहरहाल, वह उसे अभाव और सीमा की निगाहों से देख रही थी। वह उसे ऊपर नहीं उठा रही थी। महिला को यह अहसास नहीं हुआ कि वह आदमी असीमित देवत्व के साथ एकरूप है और अपनी सही जगह पर पहुँचेगा। आलंकारिक भाषा में कहा जाए तो उस महिला ने स्वर्ग की दौलत के मानसिक वस्त्र पहनाने के बजाय उसे सांसारिक चिथड़ों में लपेट दिया था। उस आदमी ने अवचेतन रूप से इसे पकड़ लिया और उसी के अनुरूप प्रतिक्रिया की।

आपको उस व्यक्ति की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए, जो सचमुच भूखा हो या अभाव या कष्ट में हो। यह सही, अच्छा और सोलह आने सच है। बहरहाल, इतना ध्यान रखें कि आप उसे अमरबेल न बना दें। आपकी मदद हमेशा दैवीय मार्गदर्शन पर आधारित होनी चाहिए। आपकी प्रेरणा इस तरह मदद करने की होनी चाहिए, जिससे वह अपनी मदद स्वयं कर सके। सामने वाले को सिखाएँ कि वह जीवन की अमीरी कहाँ खोजे, किस प्रकार आत्मनिर्भर बने और मानवता के प्रति अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान कैसे दे। यदि आप ऐसा करते हैं, तो उसे कभी भी सूप के कटोरे, पुराने कपड़ों या ख़ैरात की ज़रूरत नहीं पडेगी।

...ये चीज़ें... तुमने की हैं और... बाक़ी को अधूरा छोड दिया है। (मैथ्यू 23:23) हम सभी मदद का हाथ बढ़ाना चाहते हैं, लेकिन दूसरों की कमियों, विकृतियों, आलस, उदासीनता और लापरवाही में योगदान देना ग़लत है।

चरित्र ही भाग्य है

हम सभी यहाँ पहिए में अपने कंधे की ताकत से धक्का लगाने आए हैं। यदि आप सिर्फ़ एक लंगोट पहन रहे हैं, तब भी किसी न किसी ने इसे आपके लिए बनाया था। आप दूसरों के लिए क्या कर रहे हैं? क्या आप काम कर रहे हैं और अपने गुणों व योग्यताओं का योगदान दे रहे हैं? कई भिखारी ऐसे भी हैं, जो अच्छे-खासे शरीर के बावजूद भीख

माँगने को पेशा बना लेते हैं। जब तक आप उन्हें भीख देते रहेंगे, वे कभी काम नहीं करेंगे। वे अमरबेल और परजीवी हैं। चाहे लंदन हो या न्यूयॉर्क या कोई और जगह, उनमें से कुछ बहुत दौलतमंद हैं तथा उनके पास आलीशान मकान व कारें हैं।

हर व्यक्ति के भीतर अनखोजी प्रतिभाओं, शक्तियों और दौलत का विशाल ख़जाना भरा रहता है। हर व्यक्ति जिम्मेदार है और लड़कों को समाज के प्रति उनकी ज़िम्मेदारियों के बारे में जागरूक बनाना चाहिए। हम सभी जीवन की राह पर मानवता का हिस्सा हैं। आप यहाँ अपने हिस्से का काम करने के लिए हैं, चाहे यह पतवार खींचना हो या कार चलाना। जीवन आस्था, साहस, सहनशीलता, लगन और समर्पण को पुरस्कृत करता है तथा इन गुणों को बड़ा देता है। बाधाओं से उबरने में ही आपके चरित्र का विकास होता है और चरित्र ही भाग्य है।

आपका आंतरिक आश्रय

सरकार या लोगों पर नहीं बल्कि ईश्वर पर निर्भर रहें। सरकार आपको तब तक कोई चीज़ नहीं दे सकती, जब तक कि वह पहले उसे आपसे ले न ले। इसके अलावा, कोई भी सरकार शांति, सद्भाव, प्रसन्नता, संपन्नता, सुरक्षा, बुद्धिमत्ता, पड़ोसी के प्रति प्रेम, समानता, समृद्धि या अच्छाई के लिए कानून नहीं बना सकती। ये सभी चीज़ें आपके भीतर के आध्यात्मिक संसार से आती हैं।

वह परजीवी है, जो अपने नाम, पृष्ठभूमि, खानदान या अच्छे चेहरे की बदौलत चलता रहता है, जब तक कि लोगों को यह अहसास नहीं होता कि भीतर से वह कितना खोखला है। फिर वह गिर जाता है- क्योंकि उसके पास कोई आंतरिक सहारा और शक्ति नहीं होती।

वह किस प्रकार शिखर तक पहुँचा

लॉस एंजेलिस के एक बिज़नेस एक्ज़ीक्यूटिव ने मुझे बताया कि 1929 में जब शेयर बाज़ार लुढ़का, तो उसका सब कुछ चला गया। उसके भाई का भी। उनमें से प्रत्येक के पास दस लाख डॉलर से अधिक संपत्ति थी। उसके भाई ने आत्महत्या कर ली। उसने कहा कि अब उसका सब कुछ चला गया था, इसलिए जीने के लिए कुछ बचा ही नहीं था।

बिज़नेस एक्ज़ीक्यूटिव ने मुझे बताया कि उसने सोचा, “मेरा पैसा चला गया है, लेकिन उससे क्या? मेरे पास अच्छा स्वास्थ्य है, प्यारी पत्नी है, योग्यताएँ और गुण हैं। मैं दोबारा पैसे कमा लूँगा। ईश्वर मेरा मार्गदर्शन करेगा और मेरे लिए एक नया द्वार खोल देगा। मैं लाखों डॉलर कमाकर दिखाऊँगा।” उसने अपनी आस्तीन चढ़ाई और माली बन गया। यहाँ-वहाँ छुटपुट काम करके उसने थोड़ा पैसा इकट्ठा किया, शेयर बाज़ार में निवेश किया और उसके शेयरों के भाव आसमान छूने लगे। वह दूसरों को सलाह देने लगा और दौलत कमाने में उनकी भी मदद की।

वह ऊर्ध्वगामी था। उसने ख़ुद को ऊपर उठा लिया, क्योंकि वह जानता था कि

ईश्वर की शक्ति उसे बाहर निकलने का रास्ता दिखाएगी और उसकी प्रार्थनाओं का जवाब देगी। उसने अपने भीतर के आध्यात्मिक ख़जाने को पुकारा, जिसके बाद उसे शक्ति, साहस, बुद्धिमत्ता और मार्गदर्शन मिल गया।

ईश्वर की दौलत आपकी है

बाइबल कहती है, इश्वर के क़रीब पहुँचो और वह आपके क़रीब पहुँचेगा... (जेम्स 4: 8) इसका अर्थ यह है कि असीमित प्रज्ञा आपकी प्रार्थना पर प्रतिक्रिया करती है और जब आप पुकारते हैं, तो जवाब देती है। मैं और मेरे पिता एक हैं। (जॉन 10:30) आप और ईश्वर एक हैं

ज़मीन-जायदाद, शेयरों, सरकार, रिश्तेदारों या किसी अन्य व्यक्ति पर निर्भर न रहें। ईश्वर की दी गई आंतरिक शक्ति पर भरोसा करें कि यह हर वक़्त आपको संबल और सहारा देगी। बाहर देखना बंद कर दें। भीतर की ओर देखें। यदि आप मदद के लिए बाहर की ओर देखते हैं, तो आप भीतर मौजूद ईश्वर की दौलत से इंकार कर रहे होते हैं और ख़ुद को शक्ति, बुद्धिमत्ता तथा ज्ञान से वंचित कर रहे होते हैं।

विश्वास करें कि आप भव्य आध्यात्मिक जीव हैं। अपने देवत्व को पहचानें। यही नहीं, इस सत्य पर मनन करें कि आप यहाँ पर उस अनूठेपन को मुक्त करने आए हैं, जो भीतर क़ैद है।

आपको सहारा देने वाली एक असीमित शक्ति है, यह अहसास करके हमेशा ऊर्ध्वगामी बनें। वह शक्ति आपको ऊपर उठाएगी, आपका उपचार करेगी, आपको प्रेरित करेगी, आपके लिए नए द्वार खोलेगी, आपको नए रचनात्मक विचार देगी और आपको उसमें गहरी, स्थायी सुरक्षा का अहसास प्रदान करेगी, जो कभी नहीं बदलता है - जो कल, आज और हमेशा वही है। आपको तो बस इस उपस्थिति में विश्वास भर करना है; इसके बाद आपके जीवन में चमत्कार होने लगेंगे।

ऊर्ध्वगामी व्यक्ति समस्या का सीधा सामना करता है और ख़ुद से कहता है, “यह समस्या दैवीय समाधान के मुक़ाबले छोटी है। समस्या यहाँ पर है, लेकिन ईश्वर भी यहीं पर है।” फिर वह जीत जाता है! वह सभी बाधाओं, व्यावसायिक समस्याओं और इंजीनियरिंग तथा स्थान की समस्याओं से आस्था, साहस और विश्वास के साथ जूझता है। वह बीमारी, डर और अज्ञान पर विजय पाने की ओर बढ़ता है। मनुष्य कभी भी अपनी भौतिक झोपड़पट्टी से तब तक मुक्ति नहीं पा सकता, जब तक कि वह अपनी मानसिक झोपड़पट्टी से मुक्ति न पा ले।

एक पुरानी कहावत है कि स्वस्थ मुर्गे कमज़ोर मुर्गे को चोंच मार-मारकर मार डालते हैं। स्कूल जाने वाला जो लड़का कमज़ोर, पराजित, परित्यक्त, हीन महसूस करता है और जिसे दबंग सहपाठी परेशान करते हैं, वह भीतर से भी कमज़ोर होता है। लेकिन जब वह दबंग सहपाठी के सामने खड़ा होता है, उसे चुनौती देता है और डटकर उसका मुक़ाबला करता है, तो तथाकथित दबंग सहपाठी आम तौर पर पीछे हट जाता है।

आप सभी परिस्थितियों से ऊपर उठ सकते हैं

ईश्वर के पुत्र के रूप में अपनी गरिमा और भव्यता को महसूस करें। यह अहसास करें कि दूसरों के अपमान, आलोचना और बुराई का आप पर असर नहीं हो सकता, क्योंकि आप ईश्वर में लीन हैं। यदि आप अपने भीतर ईश्वर की उपस्थिति को उन्नत कर लेते हैं और प्रेम करते हैं, तो सभी लोग- आपके तथाकथित शत्रु भी- आपकी भलाई करने के लिए प्रवृत्त हो जाएँगे।

कष्ट स्वीकार करने से इंकार कर दें और कभी भी किसी स्थिति के सामने घुटने न टेके। आप एक अलौकिक इंसान हैं; आप मानसिक रूप से सभी स्थितियों व परिस्थितियों के ऊपर उठ सकते हैं।

जब अब्राहम लिंकन को जानकारी दी गई कि उनके केबिनेट का एक सदस्य यानी युद्ध मंत्री उनकी बुराई कर रहा था और उन्हें अज्ञानी बंदर तक कह रहा था, तो उन्होंने जवाब दिया "उनके जितना महान युद्ध मंत्री इस देश में आज तक दूसरा नहीं हुआ।" कोई भी लिंकन को आहत नहीं कर सकता था और उनके अहं को चोट नहीं पहुँचा सकता था। लिंकन जानते थे कि उनकी शक्ति कहाँ थी। वे जानते थे कि उनके ख़ुद के दिमाग के अलावा कोई भी उन्हें नीचे नहीं गिरा सकता। लिंकन ऊर्ध्वगामी थे, जिसका मतलब है कि उन्होंने न सिर्फ़ स्वयं को ऊपर उठाया, बल्कि अपने भीतर के ईश्वरीय स्वरूप को भी पहचाना। इससे उन्हें पूरे देश को ऊपर उठाने की शक्ति मिली।

ख़ुद के प्रति अच्छे रहें

आप कुछ तथाकथित भला करने वालों को जानते होंगे, जो बच्चों के शोषकों, यौन अपराधियों और दूसरे ख़तरनाक क़ैदियों के लिए पैरोल की सिफ़ारिश करते हैं। इस प्रकार के अपराधी जेल से छूटते ही दोबारा हमला, बलात्कार और हत्या करने लगते हैं। हमारे अख़बार इस प्रकार की ख़बरों से भरे रहते हैं। इससे पहले कि आप दूसरों को ऊपर उठा सकें और उनकी मदद कर सकें, आपको सबसे पहले अपनी बुद्धिमत्ता तथा समझ को ऊपर उठाना होगा। आप सिर्फ़ वही दे सकते हैं, जो आपके पास है। अक्सर, तथाकथित उपदेशक और भला करने वाले लोग दूसरों पर अपनी ख़ुद की कमियाँ व अपूर्णताएँ ही आरोपित करते हैं। याद रखें, एक अंधा दूसरे अंधे को राह नहीं दिखा सकता।

आपके सिवा बदलने के लिए कोई दूसरा है ही नहीं। आपको ख़ुद के प्रति अच्छा रहना चाहिए; आपका सच्चा स्वरूप ईश्वरीय है। अपने भीतर की इस दैवीय उपस्थिति को ऊपर उठाएँ, इसका सम्मान करें, इसे नमन करें; ऐसा करते वक़्त आप अपने पड़ोसी को प्रेम और सम्मान कर रहे होते हैं। पड़ोसी आपके सबसे निकट होता है; ईश्वर आपका पड़ोसी है और यदि आप ईश्वर से प्रेम करते हैं, तो आप सभी लोगों के प्रति सद्भावना रखेंगे।

उनसे बोलो, क्योकि वे सुनते हैं, और

आत्मा आत्मा से मिल सकती है -

वे साँस से भी ज़्यादा क़रीब हैं और

हाथ-पैरों से भी ज़्यादा।

- टेनीसन, द हायर पैंथीज़्म (छंद 6)

स्वयं की वास्तविकता पर नजर डालें, जो आपके भीतर गहराइयों में पूरी तरह दमक रही है। अपने सच्चे प्रकाश को चमकने दें और परम पिता के प्रेम को अपने ज़रिए प्रवाहित होने दें, जो आपकी सारी कमज़ोरियों, कमियों और सीमाओं को मिटा देता है। ऊर्ध्वगामी व्यक्ति ने अपने भीतर ईश्वर को पा लिया है और वह उसकी उपस्थिति में शक्तिशाली तथा सुरक्षित महसूस करता है।

ऊर्ध्वगामी जानता है कि वह यहाँ पर विजय पाने के लिए आया है, क्योंकि ईश्वर कभी असफल नहीं हो सकता। चूँकि वह ईश्वर के साथ है, इसलिए उसे कोई डर नहीं रहता और वह ज़रा भी कुंठित या परेशान नहीं होता।

अपना नया आकलन करें

ऊर्ध्वगामी व्यक्ति संकल्प करता है, “ईश्वर ने मुझे यह इच्छा दी और ईश्वर की बुद्धिमत्ता इसके साकार होने की आदर्श योजना प्रकट करेगी।” इस नज़रिए से सारी कुंठा मिट जाती है।

हम सभी परस्पर निर्भर हैं। आपको किसी डॉक्टर, वकील, मनोवैज्ञानिक या बढ़ई की ज़रूरत हो सकती है- और उन्हें आपकी ज़रूरत हो सकती है। हमें एक-दूसरे की ज़रूरत है। लेकिन हमें हर एक के भीतर रहने वाले ईश्वर को ऊपर उठाने की याद रखनी चाहिए। याद रखें, हर व्यक्ति को इस तरह देखने की आदत डालें, जैसा उसे होना चाहिए: ईश्वर का पुत्र, दैदीप्यमान, ख़ुशहाल, समृद्ध और स्वतंत्र।

ऊर्ध्वगामी बनें। हर एक के दिल में वास करने वाले ईश्वर को ऊपर उठाएँ। उन्हें भव्यता और उत्कृष्टता के वस्त्र पहनाएँ। परम पिता के प्रेम की आँच से उनका स्वागत करें। जब आप अपने भीतर देवत्व को ऊपर उठा लेते हैं, तो इसके बाद आप उसे दूसरों में भी ऊपर उठा लेंगे। यदि आप खोजें, तो आप पेड़ों में वाणी, पत्थरों में उपदेश, कल-कल करती नदियों में गीत और हर वस्तु व व्यक्ति में ईश्वर खोज लेंगे।

ऊर्ध्वगामी व्यक्ति इस प्राचीन कहावत की सच्चाई जानता है: आप जो देखते है, आपको वही बनना पड़ता है; यदि आप इर्श्वर देखते हैं, तो इर्श्वर बन जाते हैं और यदि आप धूल देखते है, तो आप धूल बन जाते हैं।

जब मोज़ेस ने वीराने में साँप को ऊपर उठाया, तो मनुष्य का पुत्र भी ऊपर उठ गया। बाइबल में सन शब्द का अर्थ अभिव्यक्ति है और मैन शब्द का अर्थ मन है। इस सबका मतलब है कि आपको मोज़ेस की तरह ऊर्ध्वगामी होना चाहिए। जब आप हताश, निराश या भयभीत हों, तो अपने भीतर की आत्मा की अवधारणा को ऊपर उठाएँ, जो ईश्वर है। आपके पास एक मस्तिष्क है, जो असीमित मस्तिष्क का हिस्सा है। आपके भीतर आत्मा है, जिसे मानवीय स्तर पर भाव या भावना कहा जाता है। दूसरे

शब्दों में, आपका अदृश्य हिस्सा ईश्वर है।

रेंगना, सरकना, गटर में जीना और भँवर में रहना छोड़ दें! जीवित रहने के लिए शर्मिंदा होना छोड़ू दें। अपना नया आकलन करें, अपना एक नया ब्लूप्रिंट तैयार करें। साँप पेट के बल रेंगता है, बिलों में छिपता है या रोशनी से दूर चट्टानों के पीछे छिप जाता है। जब आप अक्षम या कमज़ोर महसूस करते हैं और आपका नज़रिया धूल के कीड़े जैसा होता है, तो आप ज़मीन पर रेंग रहे होते हैं और इंद्रियों से मिले प्रमाण से नियंत्रित हो रहे होते हैं। ऐसे में आपको महसूस होता है कि आप आनुवंशिकता, परिवेश और परिस्थितियों के शिकार हैं। सृजनात्मक कार्य में दो साँप तनकर खड़े होते हैं, जो सेना के मेडिकल ऑफ़िसर्स द्वारा पहना जाने वाला प्रतीक है। इस प्रकार साँप ईश्वर की असीमित उपचारक उपस्थिति का प्रतीक है। यह आपको अपने भीतर की उपचारक उपस्थिति को ऊपर उठाने की याद दिलाता है। ईश्वर आपके चेतन और अवचेतन मन के रूप में आपके भीतर हैं। आप जिसे भी सच महसूस करते हैं और सच होने का दावा करते हैं आपका अवचेतन उसी तरह प्रतिक्रिया करेगा। इस तरह आप सभी सीमाओं, बाधाओं और अवरोधों से ऊपर उठ सकते हैं।

जवाब मिलने वाली प्रार्थना की ख़ुशी का अनुभव कैसे करें

बुक ऑफ़ नंबर्स में कहा गया है, और मोज़ेस ने पीतल का एक साँप बनाया और उसे एक खंभे पर रख दिया और यह घटित हो गया कि यदि कोई साँप किसी व्यक्ति को काट लेता था, तो पीतल के साँप को देखने पर वह जीवित रहता था। (नंबर्स 21:9) कोई भी समझदार व्यक्ति इस कहानी को शब्दशः सच नहीं मानेगा। बाइबल मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक सत्यों का चित्रण करने के लिए बाहरी मूर्त चीज़ो का इस्तेमाल करती है। आलंकारिक रूप से, साँप आपको तब काटता है, जब आप नफ़रत, ईर्ष्या, डाह, शत्रुता या प्रतिशोध से भरे होते हैं। कई लोग दूसरों की सफलता और उपलब्धियों को देखकर लोभ करते हैं या उन्हें शत्रुता का डंक चुभने लगता है। डर, अज्ञान और अंधविश्वास का डंक करोड़ों लोगों को डँस लेता है।

मनोवैज्ञानिक रूप से, मोज़ेस का अर्थ है ईश्वर की शक्ति की जागरूकता और अपनी गहराइयों से इस शक्ति को बाहर निकालने की आपकी क्षमता। पीतल दो धातुओं का यौगिक है, जो अपनी मनचाही वस्तु के संदर्भ में आपके चेतन और अवचेतन मन के संयोग का प्रतीक है। यदि आपके चेतन और अवचेतन मन में कोई संघर्ष या बहस नहीं है, तो आपको अपनी प्रार्थना का जवाब मिलेगा।

जब आप अपने भीतर मौजूद ईश्वर की असीम उपचारक उपस्थिति को निहारते हैं और दावा करते हैं कि जो ईश्वर के लिए सत्य है, वह आपके तथा सभी मनुष्यों के लिए भी सत्य है, तो आपकी सारी कमज़ोरियों का इलाज हो जाता है। फिर आप अपने समर्थन में काम करने वाली आध्यात्मिक शक्तियों को मुक्त कर देंगे और आप रेंगने, सरकने, धूल के कीड़े की तरह चलने वाले व्यक्ति से ऊपर उठकर ईश्वर की ख़ुशी में आस्था व विश्वास की ऊर्ध्वगामी अवस्था में पहुँच जाएँगे, जो आपकी शक्ति है।

इसी पल से ऊर्ध्वगामी बनें! आपमें जो आत्मा है, वह ईश्वर का अंश है। यह अजेय,

अभेद, अनंत, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है। अपने मस्तिष्क के भीतर की इस उपस्थिति और शक्ति के साथ एकरूप हो जाएँ। प्रतिक्रिया को महसूस करें और अकेलेपन, डर, बीमारी, ग़रीबी तथा हीनता का आपका रेगिस्तान गुलाब की तरह खिलकर दमकने लगेगा... मैं तुम्हें बाज़ के पंखों पर बैठाकर अपने पास लाया (एकसोडस 19:4)। इससे आपको अधिक पूर्ण जीवन के लिए आर्थिक नियामतें भी मिल जाएँगी।

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. ऊर्ध्वगामी बनने के लिए आपको अपनी इच्छाओं को स्वीकृति के बिंदु तक ऊपर उठाना होता है; फिर ये साकार हो जाती हैं। अपने सपने को देखते रहें और इसकी वास्तविकता पर मनन करते रहें।
2. आपका चरित्र या मानसिक नज़रिया आपको बना भी सकता है और मिटा भी सकता है।
3. संसार में दो प्रकार के लोग होते हैं: जो दूसरों को ऊपर उठाते हैं और जो दूसरों पर निर्भर होते हैं।
4. यह अहसास करके सामने वाले को ऊपर उठाएँ कि उसके पास स्वर्ग की असीम दौलत है और वह उसके सपने से अधिक समृद्ध है।
5. आपका चरित्र ही भाग्य है। जीवन साहस, आस्था, सहनशीलता और लगन को पुरस्कार देता है। बाधाओं से उबरते वक़्त ही आपके चरित्र का विकास होता है।
6. ईश्वर की सारी समृद्धि आपकी है, क्योंकि ईश्वर या असीमित प्रज्ञा हमेशा प्रतिक्रिया करती है। आप जब भी पुकारेंगे, आपको जवाब अवश्य मिलेगा।
7. आप अपने भीतर की ईश्वरीय उपस्थिति को ऊपर उठाकर और उसके साथ एकरूप होकर सभी परिस्थितियों से ऊपर उठ सकते हैं।
8. अपने प्रति अच्छे बनें, क्योंकि आपका वास्तविक स्वरूप ईश्वरीय है। अपने भीतर के ईश्वर को ऊपर उठाएँ और उस देवत्व का सम्मान करें, जो सर्वव्यापी तथा सर्वशक्तिमान है- एकमात्र दैवीय उपस्थिति और एकमात्र शक्ति है।
9. ऊर्ध्वगामी बनें और हर एक के भीतर के ईश्वर को ऊपर उठाएँ। पहले अपने भीतर के देवत्व को ऊपर उठाएँ; इसके बाद आप इसे दूसरों में भी ऊपर उठा सकते हैं।
10 अपनी निगाह ऊपर की ओर घुमाएँ और अपने भीतर की असीमित उपचारक उपस्थिति को देखें। जब आप प्रतिक्रिया महसूस करेंगे, तो आपको प्रार्थना के साकार होने की ख़ुशी का अनुभव होगा। इसमें आर्थिक नियामतें भी शामिल हैं।

अध्याय तेरह

कृतक्ष हृदय संपन्नता को आकर्षित करता है

धन्यवाद के साथ हम उसकी उपस्थिति में चलते हैं। (साल्म 95:2)

मानसिक, आध्यात्मिक और भौतिक संपन्नता की सारी प्रक्रिया का सार एक ही शब्द में बताया जा सकता है: कृतज्ञता। किसी भी प्राप्त वस्तु के लिए कृतज्ञता से भरा विचार हृदय से की गई प्रार्थना ही है। इससे आपको नियामतें मिलती हैं। कृतज्ञ हृदय वाला व्यक्ति ख़ुशहाल और दौलतमंद होता है। शेक्सपियर ने कहा था: "हे ईश्वर, तुमने मुझे जीवन दिया है, मुझे कृतज्ञता से भरा हृदय भी दो।"

अमेरिका के बुद्धिमान दाशनिक हेनरी थोरो ने कहा था: "हमें इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहिए कि हम पैदा हुए थे।" पल भर के लिए विचार करें कि अगर आप पैदा नहीं हुए होते, तो क्या होता? आप कभी बेहतरीन सूर्योदय या सुंदर सूर्यास्त नहीं देख पाते। आप कभी अपने बच्चे की प्यारी आँखें और अपने कुत्ते की प्रशंसात्मक नजरें या स्वामी पर उसकी अपलक दृष्टि नहीं देख पाते। आप कभी प्रकृति के सौंदर्य या तारों से भरे आकाश को नहीं निहार पाते, जो आत्मा का दैनिक आहार है।

आप कभी बर्फ़ से लदे पहाड़ों को धूप में हीरों की तरह जगमगाते नहीं देख पाते। आप कभी अपने प्रियजनों के प्रेमपूर्ण आलिंगन को महसूस नहीं कर पाते। आप कभी अपने आस-पास की समृद्धि नहीं देख पाते और फूलों या ताजा-ताजा कतरी गई घास की ख़ुशबू भी नहीं सूँघ पाते।

सुबह की सुंदरता के लिए शुक्रगुज़ार और कृतज्ञ हों। कृतज्ञ हों कि आपके पास ईश्वर के सौंदर्य को देखने के लिए आँखें हैं, आसमान के संगीत और पक्षियों का गीत सुनने के लिए कान हैं, ईश्वर की धुन बजाने के लिए हाथ हैं और एक आवाज़ है, जो आपको दूसरों से सुकून, साहस और प्रेम के शब्द बोलने में समर्थ बनाती है।

अपने घर, प्रियजनों, रिश्तेदारों, कामकाज और व्यावसायिक सहयोगियों के लिए कृतज्ञ हों। बार-बार कहें, "मैं अपने परिवार के हर सदस्य के लिए प्रार्थना और दुआ करता हूँ; मैं धन्यवाद देता हूँ, मैं कृतज्ञ हूँ, मैं अपने पति अथवा पत्नी और बच्चों में ईश्वर को ऊपर उठाता हूँ और प्रशंसा करता हूँ। वे जो भी कर रहे हैं, मैं उस हर चीज़ के लिए दुआ करता हूँ। मैं जो भी उपहार गढ़ता हूँ, उनमें मैं उन सभी को आशीष देता हूँ। मैं जानता हूँ कि देना पाने से अधिक श्रेयस्कर है। मैं अपने व्यवसाय को दुआ देता हूँ। मैं अपने सहक़र्मियों, ग्राहकों और सभी लोगों को दुआ देता हूँ। मेरा कामकाज फैलता है, विस्तृत होता है, कई गुना होता है, बढ़ता है और हज़ार गुना होकर मेरी ओर लौटता है।"

कृतज्ञता का नियम

सबसे पहले तो आप पूरी तरह और पूरे दिल से स्वीकार करते हैं कि एक असीमित प्रज्ञा है, जिससे सारी चीज़ें प्रवाहित होती हैं। दूसरे, आप विश्वास करते हैं कि यह स्रोत आपके विचार के अनुरूप प्रतिक्रिया करता है। तीसरे, आप आंतरिक कृतज्ञता की गहरी भावना द्वारा इस असीमित प्रज्ञा से ख़ुद को जोड़ लेते हैं।

कृतज्ञता का एक नियम है और परिणाम पाने के लिए आपको इस नियम पर चलना ही होगा। बाइबल में बताया गया यह नियम इस प्रकार है, ईश्वर के क़रीब पहुँचो और वह तुम्हारे क़रीब पहुँचेगा। यह नियम क्रिया और प्रतिक्रिया का नैसर्गिक सिद्धांत है, जो पूरी सृष्टि में हर ओर व्याप्त है। इसका अर्थ यह है कि आप अपने अवचेतन मन पर जो भी छाप छोड़ते हैं, वह प्रकट हो जाएगी। आपके मन का कृतज्ञतापूर्ण नज़रिया, जो अच्छाई के लिए धन्यवाद भरी प्रशंसा में ऊपर उठता है, आपके अधिक गहरे मन का विश्वास बन जाता है, जिसके फलस्वरूप आप जिस चीज़ पर दावा करते हैं, वह आपकी ओर आने लगती है।

कृतज्ञता किस प्रकार अमीरी को आकर्षित करती है

एक अस्थि रोग विशेषज्ञ ने एक बार मुझे बताया था कि वह बचपन में बहुत ग़रीब था और पढ़ाई का ख़र्च पूरा करने के लिए उसे दरबान का काम करना पड़ा था। जब उसने अपना क्लीनिक खोला, तो पूरा सप्ताह गुज़र गया, लेकिन एक भी रोगी नहीं आया। वह कडुवाहट से भरा और आलोचनात्मक था। दूसरे सप्ताह उसका पहला रोगी दाख़िल हुआ, जो महिला थी। वह उससे बोली, “आपने यहाँ अपना क्लीनिक खोला, इस बात के लिए हम बहुत कृतज्ञ हैं। हमें अपने इलाक़े में आपकी ज़रूरत थी। हममें से कई लोग प्रार्थना कर रहे हैं कि आप यहाँ पर ख़ुश रहें और फलें-फूलें।” फिर उसने आगे कहा “मैं हर चीज़ के लिए हमेशा बहुत कृतज्ञ होती हूँ। मैं जानती हूँ कि कृतज्ञता के अभाव के कारण बहुत सारे लोग दुख और ग़रीबी में रहते हैं।”

उस अस्थि रोग विशेषज्ञ की जिंदगी उसी पल बदल गई। उस महिला के शब्द उसके हृदय में उतर गए और उसने उस उपचारक शक्ति के लिए धन्यवाद दिया जो उसके माध्यम से उस महिला तक प्रवाहित हो रही थी। उस महिला ने उसे जो फ़ीस दी, उसके लिए भी उसने उसे धन्यवाद दिया। उसने जितनी ज़्यादा कृतज्ञता से अपना मन अपने हर उपचार और अपनी सभी अच्छी चीज़ो के स्रोत पर केंद्रित किया, उसे उतना ही ज़्यादा मिला। उसका कृतज्ञ नज़रिया उसके पूरे मन को सृष्टि की सृजनात्मक शक्तियों के अधिक क़रीबी सामंजस्य में ले आया और उसके क्लीनिक में रोगियों की भीड़ लग गई। वह बुद्धिमत्ता में अमीर बना, उसने इलाज में कई चमत्कार किए और उसकी प्रैक्टिस बहुत समृद्ध हो गई।

कृतज्ञता की तकनीक

एक पिता पढ़ाई पूरी करने के तोहफ़े के रूप में अपनी बेटी को दुनिया की सैर कराने का

वादा करता है। उस लड़की को अभी सैर के लिए पैसा नहीं मिला है, न ही वह भ्रमण के लिए गई है, लेकिन वह बहुत कृतज्ञ और ख़ुश है। वह उतनी ही ख़ुश है, मानो वह सचमुच यूरोप और फिर एशिया के लिए जाने वाले जहाज़ पर सवार हो। वह जानती है कि पिताजी अपना किया वादा पूरा करेंगे। वह बहुत कृतज्ञ है और उसने सुखद आशा तथा कृतज्ञ हृदय के साथ उपहार को मानसिक रूप से स्वीकार कर लिया है।

आप शायद कभी कार ख़रीदने के लिए किसी कार डीलर के यहाँ गए होंगे, हालाँकि उसके पास उस वक़्त आपकी मनचाही कार स्टॉक में नहीं होगी। आपने बताया कि आप क्या चाहते हैं और सेल्समैन ने कहा कि वे उसका ऑर्डर कर देंगे तथा कार उपलब्ध करा देंगे। आपने सेल्समैन को धन्यवाद दिया और बिना कार लिए लौट आए। आपको पूरा विश्वास था कि निकट भविष्य में आपको अपने ऑर्डर के अनुरूप कार मिल जाएगी, क्योंकि आपको उस डीलर की ईमानदारी पर भरोसा था।

अब ज़रा सोचिए आपको असीम और परम पिता के सृजनात्मक नियम पर कितना ज़्यादा भरोसा करना चाहिए, जो कभी नहीं बदलता और जो उसमें हमारे विश्वास पर हमेशा प्रतिक्रिया करता है!

धन्यवाद क्यों दें?

... हर चीज़ के लिए धन्यवाद दें। (1 थेसैलोनियन्स 5:18)

आदिमानव की ईश्वर की अवधारणा बचकानी थी और वह उसे ऐसे मानव के रूप में देखता था, जो सृष्टि को तानाशाही अंदाज़ में चलाता था। आदिमानव उन दासों की तरह प्रतिक्रिया करता था, जो पुराने सामंतों के सामने रेंगते व चापलूसी करते थे, जिन सामंतों के हाथ में दासों के जीवन और मृत्यु की शक्ति होती थी। इस प्रकार आदिमानव ईश्वर के सामने लेटकर, भीख माँगकर, निवेदन करके और गिड़गिड़ाकर उसकी कृपा हासिल करना चाहता था।

आज मनुष्य ईश्वर को असीमित प्रज्ञा के रूप में देखता है, जो सृजनात्मक नियम के माध्यम से कार्य करता है। यह नियम अव्यक्तिगत है, यह व्यक्तियों में भेद नहीं करता और कभी बदलता भी नहीं है। यह आज, कल और हमेशा समान रहता है। दैवीय उपस्थिति में व्यक्तित्व के सभी तत्व होते हैं, जैसे प्रेम, ख़ुशी, शांति, बुद्धिमत्ता, ज्ञान और सद्भाव। यह उस व्यक्ति के साथ निजी तथा अंतरंग बन जाती है, जो इसके तालमेल में आता है और सही प्रकार से नियम पर काम करता है। जब मनुष्य असीमित उपस्थिति और शक्ति के चमत्कारों, ख़ज़ानों व प्रतिक्रिया को खोजता है, तो उसके भीतर तुरंत ही प्रार्थना और कृतज्ञता का भाव उपजता है। उसकी आत्मा प्रसन्न हो जाती है, जैसे जब कोई बच्चा रसायन शास्त्र या प्रकृति का कोई रहस्य खोज लेता है, तो वह रोमांचित हो जाता है और ख़ुशी-ख़ुशी अपने पिता को इस खोज के बारे में बताता है। वह अपनी खोज पर ख़ुश होता है और प्रशंसा चाहता है। दस साल के एक छोटे लड़के ने मुझे एक एशट्रे भेंट की, जो उसने स्कूल में ख़ुद बनाई थी। उसने बताया कि उसने किस प्रकार धातुओं को लिया और उन्हें जोड़ा। आप उसकी आँखों में रोमांच और आश्चर्य के भाव देख सकते थे। इससे लड़के को प्रेरणा मिलेगी कि वह आगे चलकर स्कूल की प्रयोगशाला

में अधिकाधिक रहस्य खोजे। प्रशंसा और कृतज्ञता से ईश्वर या नियम पर फ़र्क़ नहीं पड़ता, लेकिन वे हमारे दिलोदिमाग़ का कायाकल्प कर देते हैं और असंख्य स्रोतों से हमारी ओर सभी प्रकार की अच्छाई को आकर्षित करने वाले आध्यात्मिक व मानसिक चुंबक बन जाते हैं, जिसमें पैसा भी शामिल है।

आपकी कृतज्ञता, प्रशंसा और धन्यवाद, चापलूसी या दासता के नज़रिए से व्यक्त नहीं होना चाहिए, मानो आप अहसान चाहते हों। इसके बजाय यह तो आपके अवचेतन मन की गहराइयों में एक रोमांचक यात्रा होनी चाहिए, जहाँ आप ईश्वर के नियमों की समीक्षा करते हैं और उनमें गहन रुचि लेने लगते हैं। इस प्रकार आप आनंदित होंगे कि जिन चीज़ो की आपको ज़रूरत है और जिन पर आप दावा करते हैं, वे सभी सैद्धांतिक रूप से आपके भीतर हैं तथा इंतज़ार कर रही हैं कि आप ख़ुशी से व कृतज्ञ हृदय से उन्हें प्राप्त करें।

जब आप जीवन और ईश्वर के सर्वव्यापी सिद्धांतों के बारे में जागरूक बनते हैं तथा उनकी क़द्र करते हैं, जिसने आपको आरंभ से अब तक हर चीज़ दी, तब आप सचमुच कृतज्ञ होते हैं और आपका हृदय प्रशंसा से भरा होता है। “सभी चीज़ें तैयार हैं, बशर्ते मस्तिष्क तैयार हो।” (शेक्सपियर)

“धन्यवाद” का चमत्कार

एक आदमी ने कहा, “बिलों का ढेर बढ़ता जा रहा है, मेरे पास पैसे नहीं हैं, मुझे दिवालिएपन का आवेदन करना होगा। मैं क्या करूँ?” मैंने सुझाव दिया कि हर सुबह दो-तीन बार दस-पंद्रह मिनट के लिए वह शांति से बैठ जाए और साहस के साथ कहे, “परम पिता, आपकी अमीरी के लिए इसी क्षण धन्यवाद।” वह शांत और आरामदेह अंदाज़ में तब तक रहे, जब तक कि कृतज्ञता की भावना या मानसिक अवस्था उसके दिमाग़ में बैठ न जाए। वह जानता था कि दौलत का विचार-चित्र ही उस धन-दौलत का मूल कारण है, जिसकी उसे ज़रूरत है। उसका विचार-भाव दौलत का मूल था, जिस पर किसी भी प्रकार की पुरानी कंडीशनिंग का कोई असर नहीं हो सकता था।

बार-बार “परम पिता, धन्यवाद” दोहराने से उसका दिल और दिमाग़ स्वीकृति के बिंदु तक ऊपर उठ गए। जब भी डर के विचार उसके मन में आते थे, तो वह तत्काल “परम पिता, धन्यवाद” उतनी बार कहता था जितनी बार आवश्यक होता था। वह जानता था कि अगर वह यह कृतज्ञ नज़रिया रखेगा, तो वह दौलत के विचार से अपने मस्तिष्क की दोबारा कंडीशनिंग कर देगा। यही हुआ। वह एक सामाजिक समारोह में एक पूर्व नियोक्ता से मिला, जिसने उसे मैनेजर बना दिया और उसे एडवांस में बहुत सारा पैसा दिया, जिससे वह अपने सारे बिलों का भुगतान कर पाया और कर्ज़ से बाहर निकल सका। उसने मुझसे कहा कि वह “परम पिता, धन्यवाद” के चमत्कारों को कभी नहीं भूल पाएगा।

कृतज्ञता का महत्व

कृतज्ञता आपको असीमित के तालमेल में रखती है और सृजनात्मक नियम के साथ जोड़े रखती है। कृतज्ञता का महत्व सिर्फ़ अपनी ओर वरदान आकर्षित करने तक ही सीमित नहीं है। आपको याद रखना चाहिए कि यदि आपका हृदय धन्यवाद से भरा हुआ न हो, तो आप अपनी वर्तमान स्थितियों और परिस्थितियों के संदर्भ में असंतुष्ट हो जाते हैं।

यदि आप अपना ध्यान ग़रीबी, अभाव, अकेलेपन, गंदगी, घटियापन और संसार की मुश्किलों तथा समस्याओं पर केंद्रित करते हैं, तो आपका मन इन सभी चीज़ो का रूप ले लेता है। यह आकर्षण के नियम की बदौलत होता है, जो कहता है कि जिस पर आप ध्यान देते हैं, उसका आप अनुभव भी करते हैं।

याद रखें यदि आप अपने मन को अभाव और सीमा पर केंद्रित रहने की अनुमति देते हैं, तो आप दुख और हीन चीज़ो से घिर जाएँगे।

अपना ध्यान जीवन में सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ पर केंद्रित करें। इससे आपको जीवन में सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ चीज़ो का अनुभव होगा तथा आप ऐसी ही चीज़ो से घिर जाएँगे।

आपके अवचेतन मन का सृजनात्मक नियम आपको उस वस्तु की छवि और समानता में ढाल देता है, जिस पर आप मनन करते हैं। दरअसल आप वही बन जाते हैं, जिस पर आप मनन करते हैं। कृतज्ञ व्यक्ति लगातार और हमेशा जीवन की अच्छी चीज़ो की आशा करता है तथा उसकी आशा हमेशा साकार रूप धारण कर लेती है।

आपको जो भी अच्छी चीज़ें मिलती हैं, उनके लिए केवल कृतज्ञ होने की आदत डालना ही आवश्यक नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है। दूसरे शब्दों में, लगातार धन्यवाद देते रहें।

सभी लोग आपके कल्याण में योगदान देते हैं। इसलिए आपको कृतज्ञता की अपनी प्रार्थना में सभी लोगों को शामिल करना चाहिए। इससे आप सभी की अच्छाई के साथ अवचेतन संप्रेषण में पहुँच जाएँगे और जीवन, पृथ्वी तथा सभी लोगों की दौलत अपने आप आपकी ओर आकर्षित होने लगेगी।

क्या आप ख़ुशहाली की क़द्र करते हैं?

कुछ साल पहले मैंने स्थानीय अख़बार में एक व्यक्ति के बारे में पढ़ा, जो दो वर्ष की उम्र से दृष्टिहीन था। उसकी एक आँख तो पूरी निकालनी पड़ी, लेकिन बाद में डॉक्टरों ने दूसरी आँख का ऑपरेशन किया और पहली चीज़ जो उसने देखी, वह था उसकी पत्नी का चेहरा। उसके लिए वह बहुत सुंदर थी और वह इससे अधिक अद्‌भुत चीज़ की कल्पना नहीं कर सकता था। वह अपनी पत्नी के साथ लगभग चालीस साल से रह रहा था, लेकिन उसने उसका चेहरा कभी नहीं देखा था। क्या आप अपनी पत्नी, अपने पति, अपने परिवार, अपने बीस की क़द्र करते हैं? क्या आप अपनी आँखों, अपने शरीर, ईश्वर में अपनी दृढ़ आस्था तथा सभी अच्छी चीज़ो के लिए धन्यवाद देते हैं?

क्षमा की दौलत

पिछले क्रिसमस पर मेरी एक आदमी से बातचीत हुई। उसने मुझे बताया कि बीस सालों से उसने अपने माता-पिता को कोई पत्र नहीं लिखा और उनके बीच किसी तरह का संवाद नहीं हुआ। उसे एक ग़लतफहमी थी। उसे लगता था कि उन्होंने उसके मुक़ाबले उसके भाई को ज़्यादा पैसे और जायदाद दे दी थी। वह क्रोधित और द्वेषपूर्ण बना रहा। दुकान में काम करने वाले उसके दो सहयोगियों ने कहा, "आप जानते हैं, यहाँ सभी कर्मचारी क्रिसमस के दिन अपने माता-पिता से मिलने जा रहे हैं। माता-पिता का होना कितना अच्छा होता होगा? काश हमारे पास क्रिसमस पर यह करने का अवसर होता! हम अनाथ हैं। हमें अपने माता-पिता के बारे में कुछ नहीं पता। माता-पिता का होना कितना बढ़िया होता है?" यह बात उस आदमी के दिल को छू गई। माता-पिता के प्रति उसका सारा क्रोध व शत्रुता तत्काल काफूर हो गई और वह उनके लिए उपहार लेकर क्रिसमस पर घर गया। उनका पुनर्मिलन बड़ा सुखद रहा। उपहार के तौर पर उसके माता-पिता ने उसे कुछ मूल्यवान शेयर दिए, जिनका मूल्य उस राशि से बहुत अधिक था, जो उसके हिसाब से उसके भाई को ज़्यादा दी गई थी।

क्षमा करना भी देना है- प्रेम, शांति और जीवन की सभी नियामतें किसी दूसरे को देना- और जो आप देते हैं, वही आपको मिलता है। यह लिखा हुआ है: देना पाने से अधिक श्रेयस्कर होता है।

कृतज्ञता पाँच करोड़ डॉलर को आकर्षित करती है

यह कृतज्ञ हृदय की शक्ति की एक आश्चर्यजनक कहानी है। युवक का नाम लूसियन हैमिल्टन टाइंग था। वह पियोरिया, इलिनॉय में जन्मा था। वहाँ बड़े सपने देखने और बड़े पैमाने पर सोचने वाले इस महत्वाकांक्षी युवक के लिए बहुत कम अवसर थे। लुसियन ने शिकागो जाकर किस्मत आज़माने की सोची। उसे एक ऑफ़िस बॉय का काम मिला, जिसमें उसे जीवन-यापन लायक़ पैसे ही मिलते थे। कमरे का किराया चुकाने के बाद उसके पास भोजन के लिए दिन भर में सिर्फ़ पचास सेंट ही बचते थे। उसने पाया कि चॉकलेट क्रीम का पाँच सेंट का बैग बहुत अच्छा लंच साबित होता है। नाश्ते में पंद्रह सेंट लग जाते थे, इसलिए डिनर पैंतीस सेंट से अधिक का नहीं हो सकता था। वह युवक बहुत धार्मिक था। उसने यह नियमित आदत डाल ली कि वह अपने हाथ में पचास सेंट का सिक्का लेकर कहता था: "ईश्वर इसे कई गुना करता है और मैं धन्यवाद देता हूँ। मैं हर दिन अधिक धन पा रहा हूँ।" हर सुबह पचास सेंट ख़र्च करने से पहले दस मिनट तक वह यह वाक्य दोहराता था। वह कई चतुर और सफल लोगों को आकर्षित करने लगा। अवसर उसकी राह में आने लगे, जिनका उसने तुरंत लाभ उठाया। "धन्यवाद, परम पिता," उसके होंठों पर लगातार रहता था। जब कई वर्ष गुज़र गए, तो कई प्रभावी लोग उसकी राय माँगने और मानने लगे। वह बेहद प्रतिभावान बन गया। उसकी मानसिक योग्यता धीरे-धीरे बढ़ती रही। व्यवसाय में उसकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा होने लगी और लोग उस पर गहरा विश्वास करने लगे। वह उनकी व्यावसायिक समस्याएँ चुटकियों में सुलझा देता था। हर सफल उपलब्धि के पहले और बाद में उसकी सतत प्रार्थना यही होती थी, "परम पिता, धन्यवाद।"

एक दिन एक आश्चर्यजनक विचार उसके मन में आया, जो उसने एक अच्छे मित्र को

बताया। मित्र को इसमें ज़बर्दस्त संभावना नज़र आई। उन्होंने साझेदारी करके “जनरल गैस एंड इलेक्ट्रिक कंपनी” की स्थापना की। इसने दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी की और सभी पूर्वी राज्यों में उसके स्टेशन हो गए तथा कई वर्षों बाद उन्होंने इसे पाँच करोड़ डॉलर में बेच दिया।

एक कवि ने एक बार कहा था: “हे ईश्वर, मुझे एक और चीज़ दो- एक कृतज्ञ हृदय।”

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. मानसिक, आध्यात्मिक और भौतिक संपन्नता की सारी प्रक्रिया का सार एक ही शब्द में बताया जा सकता है: कृतज्ञता।
2. कृतज्ञता का एक नियम है और परिणाम हासिल करने के लिए आपको नियम के अनुरूप चलना चाहिए। इसका मतलब यह है कि आप अपने अवचेतन पर जो छाप छोड़ते हैं वह व्यक्त होगी। ख़ुश होकर हर प्रकार की दौलत के लिए धन्यवाद दें। अमीर महसूस करके आप अपने अधिक गहरे मस्तिष्क पर छाप छोड़ेंगे और दौलत आपकी हो जाएगी।
3. इस वक़्त आपके पास जो चीज़ें और नियामतें हैं, उनके लिए धन्यवाद दें। उन्हें एक-एक करके गिनें और ईश्वर आपकी भलाई को कई गुना कर देगा।
4. निरंतर प्रशंसा करें और उन सृजनात्मक नियमों के ज्ञान के लिए धन्यवाद दें, जिनसे आपके जीवन में सभी प्रकार की नियामतें आती हैं। आप उस कार के लिए कृतज्ञ होते हैं, जिसका वादा आपके पिता ने किया है, लेकिन जो आपको अब तक मिली नहीं है। आपके स्वर्ग का पिता आपको उससे भी अधिक देगा। वह तो बस यह चाहता है कि आप उस पर पूरा भरोसा करें।
5. ईश्वर को असीमित मस्तिष्क और असीमित प्रज्ञा मानें, जो एक सृजनात्मक नियम द्वारा सक्रिय है। यह नियम सभी पर प्रतिक्रिया करता है और कोई भेदभाव नहीं करता। जब आप अपने भीतर की संपत्ति और महिमा को खोज लेते हैं, तो आप इस खोज पर ख़ुश हुए बिना नहीं रह सकते कि आपकी सारी मनचाही चीज़ें इस सिद्धांत में मौजूद हैं और इस बात की राह देख रही हैं कि आप ख़ुशी तथा धन्यवाद भरे हृदय से उन्हें प्राप्त करें।
6. हर दिन पंद्रह मिनट तक बैठ जाएँ अपने दिमाग़ को शांत कर लें और कहें: “परम पिता, आपकी अमीरी के लिए इसी समय धन्यवाद।” फिर आपके जीवन में चमत्कार होने लगेंगे, जिनमें पैसा आना भी शामिल हैं।
7. कृतज्ञता आपको असीमित के तादात्म्य में रखती है और सृष्टि की सृजनात्मक शक्तियों से जोड़े रखती है। इससे आप असंख्य वरदानों को आकर्षित करने वाले मानसिक और आध्यात्मिक चुंबक बन जाते है।
8. अपने आस-पास के लोगों, परिवार के सदस्यों और सहकर्मियों के प्रति गहरी क़द्र दिखाएँ। लोग चाहते हैं कि उनकी क़द्र हो। इसे खुलकर और प्रेम से दें।

9. क्षमा आपके दिमाग़ में एक निर्वात उत्पन्न करती है और आपके माध्यम से असीमित उपचारक उपस्थिति के प्रवाहित होने की राह बनाती है। कई लोग दूसरों की आलोचना, द्वेष और शत्रुता की वजह से अमीर नहीं बन पाते। इस प्रकार का नज़रिया उन तारों को तोड़ देता है, जो आपको सारी दौलत और सेहत के स्रोत से जोड़ते हैं। दूसरों को तब तक दुआ दें, जब तक कि आपके दिल में कोई दंश बाक़ी न रहे।

10. यदि आपकी जेब में सिर्फ़ एक डॉलर है, तो यह कहकर उसे दुआ दें, “ईश्वर इस धन को मेरे अनुभव में कई गुना करता है और मैं जीवन में ईश्वर की दौलत के बढ़ते हुए, अथक निरंतर प्रवाह के लिए कृतज्ञ हूँ।” फिर आप ज़बर्दस्त दौलत आकर्षित कर लेंगे।

11. परम पिता, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मेरी आवाज़ सुन ली और मैं जानता हूँ कि आप मेरी आवाज़ हमेशा सुनते हैं। (जॉन 17:24)

अध्याय चौदह

आपके शब्दों की शक्ति द्वारा दौलत के चमत्कार

क्या आपने कभी सोचा है कि शब्दों में कितनी ज़बर्दस्त शक्ति होती है? सोचना बोलना ही है। आपका विचार आपका शब्द है। बाइबल की बुक ऑफ़ प्रोवर्ब्स (25:11) में लिखा है, उचित तरीक़े से बोला गया एक शब्द चाँदी के चित्रों में सोने के सेवफल जैसा है। हमें इस तरह भी निर्देशित किया गया है: सुखद शब्द शहद जैसे होते हैं, आत्मा के लिए मधुर और अस्थियों के लिए स्वास्थ्यवर्धक। (प्रोवर्ब्स 16:24)

क्या आपके शब्द कानों के लिए मधुर हैं? यदि आप इस प्रकार की बात कहते हैं, “मैं आगे नहीं बढ़ सकता। यह असंभव है। मैं अब बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। मेरे पास अमीर बनने का कौन सा अवसर है? मैरी ऐसा कर सकती है, मैं नहीं। मेरे पास पैसे नहीं हैं। मैं इसका या उसका ख़र्च नहीं उठा सकता। मैं कोशिश करूँगा, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं।” तो आप देख सकते हैं कि आपके शब्द शहद जैसे नहीं हैं। वे सृजनात्मक नहीं हैं। वे न तो आपको ऊपर उठाते हैं, न ही प्रेरित करते हैं। इसके अलावा, आप शब्दों में जो आदेश देते हैं, वह वास्तव में सच हो जाता है।

आप जो शब्द बोलते हैं, वे अस्थियों के लिए स्वास्थ्यवर्धक होने चाहिए, जिसका अर्थ है कि आपकी भाषा को आपको ऊपर उठाना चाहिए, रोमांचित करना चाहिए और ख़ुश बनाना चाहिए। अस्थियाँ सहारे और सौष्ठव का प्रतीक हैं। आपकी भाषा को आपको सहारा और शक्ति प्रदान करनी चाहिए। इसी समय आदेश दें और सार्थक ढंग से कहें, “इस पल के बाद मैं जिन शब्दों का उपयोग करूँगा, वे मुझे तथा हर एक का उपचार करेंगे, दुआ देंगे, समृद्धि प्रदान करेंगे, प्रेरित करेंगे और शक्ति देंगे।”

चूँकि आपके शब्द वाक़ई इतने शक्तिशाली होते हैं, इसीलिए सही समय पर सही बात कहना महत्वपूर्ण होता है। यही नहीं, यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण होता है कि सभी अवसरों पर आपके शब्द “कानों को मधुर और अस्थियों को सुखद लगें।”

माइने के डॉ. फ़िनीज़ पार्कहर्स्ट क्रिम्बी ने सौ वर्षों से भी अधिक समय पहले यह संकेत किया था कि आदिमानव के मन में अपनी आशाओं, आकांक्षाओं, हसरतों, पसंद, नापसंदगी और डर के संप्रेषण की इच्छा थी। उसके मन में ये विचार और भावनाएँ अपने साथी मनुष्य तक संप्रेषित करने की गहन इच्छा थी। इसका प्रमाण पहले गुर्राहट और आहों में मिला। आख़िरकार उसने बुनियादी शब्द गढ़ लिए। फिर वह मानसिक और आध्यात्मिक विकास के अनुरूप अपने शब्दभंडार को बढ़ाता गया।

विचार और भावनाएँ व्यक्त करने की इस क्षमता के बाद शब्दों के माध्यम से सारे संसार में ज्ञान फैलाने के लिए अंतत: प्रिंटिंग प्रेस, पुस्तक टाइपराइटर और असंख्य अन्य आधुनिक आविष्कार आए। मार्कोनी ने संसार भर में अपने शब्द भेजने का निर्णय लिया।

उसके रिश्तेदारों ने सोचा कि उसका दिमाग़ चल गया है और उन्होंने उसे कुछ समय तक पागलख़ाने में भी भर्ती रखा। अंतत: उसका विचार संप्रेषण में एक नया आयाम ले आया और उसी विचार के ज़रिए आज हम समय तथा दूरी पर विजय पा चुके हैं। आज आप एक फ़ोन उठाकर संसार के दूसरे सिरे पर रहने वाले व्यक्ति से बात कर सकते हैं।

भाषा के चमत्कारों को पहचानें और यह भी कि आप जिन लोगों से संवाद करते हैं, उन्हें आप किस तरह दुआ दे सकते हैं उन्नत कर सकते हैं, समृद्ध बना सकते हैं और प्रेरित कर सकते हैं।

अधिकार के साथ शब्दों का उपयोग करना

शब्द-शक्ति परमाणु हथियारों या बमों से ज़्यादा शक्तिशाली है, क्योंकि शब्द ही यह आदेश देते हैं कि इन हथियारों का उपयोग किया जाए या नहीं। शब्द परमाणु शक्ति के उपयोग का आदेश जहाज़ को महासागर में चलाने के लिए भी दे सकते हैं और किसी शहर या देश को तबाह करने के लिए भी।

सोलोमन ने कहा था:... बुद्धिमान की ज़ुबान स्वास्थ्यवर्धक होती है। (प्रोवर्ब्स 12:18) और यह भी: जीभ में मृत्यु और जीवन की शक्ति है (प्रोवर्ब्स 18:21) यही अधिकार के साथ शब्दों का इस्तेमाल करने की कुंजी है।

मैंने ये शब्द एक ऐसे आदमी के सामने दोहराए, जो अस्पताल में हृदय रोग के कारण भर्ती था। वह दिन के अधिकांश समय इन्हें बोलने लगा: “मैं पूर्णत: स्वस्थ हूँ; ईश्वर ही मेरा स्वास्थ्य है।” जब वह बहुत बढ़िया ढंग से ठीक हो गया, तो उसके चिकित्सक को बड़ी हैरानी हुई। उसने दोबारा कार्डियोग्राफ़ लिया, जिसमें उसका हृदय सामान्य निकला। उसने शब्दों का उपयोग अधिकार और विश्वास से किया, जिसकी बदौलत वे उसके अवचेतन मन तक पहुँच गए, जिसने उसी अनुरूप प्रतिक्रिया की।

उसने मुझसे कहा, “स्वास्थ्य ही धन है। अब मैं फिर से अपने परिवार वालों और कामकाज के पास जा सकता हूँ, जिन्हें मेरी ज़रूरत है और अपने बच्चों की पढ़ाई पूरी करवा सकता हूँ।”

उसके शब्दों ने उसे दौलत दिलाई

एक व्यवसायी से मेरी बातचीत हुई। उसने कहा कि व्यावसायिक जगत में उसकी दौलत और सफलता की कुंजी इन शब्दों के पीछे स्थित सत्य का निरंतर अहसास था:... जो शब्द मैं बोलता हूँ... वे सजीव हैं और जीवन हैं। (जॉन 6:63)

उसने कहा “मेरी दौलत तथा नियामतें इन्हीं शब्दों और इन्हें सही अंदाज़ में बोलने की देन हैं। मैं इन शब्दों में अपनी सबसे गहरी भावना भर देता था। मैं जानता था कि मेरी भावना उनके पीछे की सजीवता का वास्तविक प्रमाण है और उसी से उन्हें सृजनात्मक शक्ति मिलती थी।”

इस आदमी ने व्यावसायिक जगत में महान चीज़ें हासिल कीं और ख़ुद के सामने यह

साबित कर दिया कि सही तरीक़े से सही शब्द बोलने पर दौलत मिलती है।

शब्दों पर अधिकार किस प्रकार नियामतें दे सकता है

एक रियल एस्टेट ब्रोकर ने मुझे यह रहस्य बताया कि वह अपने अवचेतन मन को किस प्रकार नियंत्रित करता है और किस तरह आदेश देता है। उसके आदेश के शब्द ये हैं: "मेरे शब्द उन सभी लोगों को उपचार देते हैं, स्वस्थ करते हैं, ऊर्जा देते हैं, समृद्ध करते हैं, संतुष्ट करते हैं और अमीर बनाते हैं, जिनके संपर्क में मैं आता हूँ या जिनके साथ मैं व्यवसाय करता हूँ।" उसका नज़रिया यह है कि वह दूसरों को जितनी अधिक जीवंतता, प्रेम, सद्भाव और दौलत देता है, उसके पास उतना ही अधिक रहती है। नियाग्रा जलप्रपात इसलिए शक्तिशाली है, क्योंकि यह उत्सुक्तता से लगातार बहता रहता है।

यह ब्रोकर बेहद लोकप्रिय और सफल है। वह यक़ीन करता है कि आप जो आदेश देते हैं वही पाते हैं, जैसा बाइबल में वादा किया गया है: तुम किसी चीज़ का आदेश दोगे और वह तुम्हारे लिए स्थापित कर दी जाएगी और तुम्हारी राहें रोशन हो उठेंगी। (जॉब 22:28)

किस प्रकार जीवित शब्द सजीव हुआ

एक बार मैंने आर्थिक समस्याओं से जूझने वाले एक आदमी की मदद करने की कोशिश की। मैंने ग़ौर किया कि वह लगातार कह रहा था, "यदि मेरे हाथ में थोड़ा पैसा आ जाता, तो सब सही हो जाता।" मैंने उसे बताया कि उसे अपने बोले गए हर आलसी शब्द पर ध्यान देना था। मैंने कहा कि अवचेतन मन मज़ाक नहीं समझता है, बल्कि उसके दिए आदेश को शब्दश: स्वीकार करता है। उसके हाथ लगातार काँप रहे थे। जिन शब्दों का वह इस्तेमाल कर रहा था, वे शंका और चिंता का संकेत दे रहे थे तथा आर्थिक रूप से उसे पेंडुलम की स्थिति में रखे हुए थे।

वह शब्दों की कायाकल्प करने वाली शक्ति का उपयोग करने लगा, ताकि वे "सजीव बन जाएँ" या साकार हो जाएँ। फिर उसने बारंबार घोषणा की: "मैं दौलत और सफलता का आदेश देता हूँ। मैं जानता हूँ कि ये शब्द मेरे अवचेतन मन में धँस जाएँगे, क्योंकि मैं उन्हें अर्थपूर्ण ढंग से और पूरी गंभीरता से कहता हूँ। मैं आर्थिक रूप से सुरक्षित हूँ, मेरे पास ज़रूरत का सारा धन है और मैं धन्यवाद देता हूँ।"

जल्द ही हवा का रुख़ पलट गया; उसके हाथों की स्थिति भी ठीक हो गई और उसकी आर्थिक स्थिति भी। फिर शब्द सजीव हो गया और हमारे बीच रहने लगा... (जॉन 1:14)

जीवित शब्द चमत्कार करता है

जिस विचार को आप विश्वास के साथ अपने दिलोदिमाग़ में रखते हैं, वह आपके शब्दों की गुणवत्ता और प्रकृति के अनुरूप साकार हो जाता है। शब्द वे मानसिक समतुल्य हैं,

जो उनकी छवि और समानता के अनुरूप परिणाम देते हैं। ऐसा न सिर्फ़ हमारे शरीर में, बल्कि हमारे सारे परिवेश, संबंधों और मामलों में होता है।

मेरी एक सहयोगी डॉ. ओलिवर गेज़ दूसरों को समृद्ध बनाने के लिए शब्द की शक्ति का निरंतर इस्तेमाल करती हैं। वे सामने वाले की मनचाही अच्छी चीज़ के संबंध में सकारात्मक कथनों का इस्तेमाल करती हैं (जिसका अर्थ है आपके दिमाग़ में यह स्थापित करना, पक्का करना और वास्तविक बनाना)। जब कोई अधिक वस्तु या धन चाहता है, तो वे दिन में अक्सर उसके लिए यह सकारात्मक कथन कहती हैं: "ईश्वर अमीर है। मैरी ईश्वर की संतान है और अब वह अमीर है। आमीन!" इस सरल तरीक़े से उन सभी लोगों को समृद्ध परिणाम मिलते हैं, जो उनकी मदद लेते हैं। इन शब्दों ने कई लोगों के जीवन में चमत्कार कर दिए हैं।

किस प्रकार शब्द चमत्कारी शक्ति उत्पन्न करते हैं

लेज़ारस की कब्र पर ईसा मसीह चमत्कारी शक्ति को आदेश देते हुए ज़ोर से कहते हैं: लेज़ारस आगे बढ़ो। (जॉन 11:43) और पुनर्जीवित व्यक्ति अपनी बहन तथा अपने मित्र ईसा मसीह का अभिवादन करने के लिए आगे बढ़कर आता है, जिन्होंने अधिकार के साथ बोला था... उन्होंने उस व्यक्ति की तरह बोला था, जिसके पास अधिकार हो... (मैथ्यू 7:29)

अपने शब्दों की शक्ति से मंत्रमुग्ध हो जाएँ। कभी भी अभाव, सीमा, विवाद या बुरे समय के शब्दों का उपयोग न करें, बल्कि एक नया शरीर और एक नया परिवेश बनाना शुरू करें, साथ ही आदेश के अपने शब्दों को बदलकर मानसिक और भौतिक दौलत भी बनाएँ। साहस के साथ घोषणा करें: "दौलत, आओ! स्वास्थ्य, आओ! सफलता, आओ!" इससे आप जवाब पाने वाली प्रार्थना की ख़ुशी महसूस करेंगे।

किस प्रकार शब्दों ने ग्राहकों को आकर्षित किया

जिन लोगों ने "ब्रह्मांडीय मानसिक शक्ति के आश्चर्यजनक नियम"* पर मेरी समृद्धि की कक्षा में हिस्सा लिया, उन्हें शब्दों की शक्ति के बेहतरीन परिणाम मिले। मैंने सुझाव दिया कि वे कुछ आकर्षक लगने वाले शब्द लें और हर दिन दो अलग-अलग समय लगभग दस मिनट तक बार-बार आदेश दें। कई ने मुझे बताया कि वे ऑफ़िस में काम करते हैं, इसलिए वे ज़ोर से नहीं बोल सकते, इसलिए जो वे घटित करवाना चाहते थे, उसे उन्होंने लिख लिया। वे उन कथनों को मन ही मन बार-बार दोहराते रहे। इस प्रकार वे अपने विचार धीरे-धीरे अवचेतन मन तक पहुँचाते रहे।

एक बीमा सेल्समैन ने साहस के साथ दावा किया: "मैं अब अपनी ओर सिर्फ़ उन्हीं स्त्री-पुरुषों को आकर्षित कर रहा हूँ, जिनकी इसमें रुचि है और जिनके पास अपने बच्चों की शिक्षा तथा अपने ख़ुद के कल्याण में निवेश करने के लिए पैसा है।" संकल्प से भरे इन शब्दों के निरंतर उपयोग से उसने रुचि लेने वाले इतने ज़्यादा लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया, जितना पहले कभी नहीं किया था। अब हर जगह से उसे संदर्भ

मिलने लगे और उसके जीवन स्तर में ज़बर्दस्त उछाल आ गया।

याद रखें- शब्दों की शक्ति ईश्वर द्वारा मनुष्य को दिए गए सबसे बड़े उपहारों में से एक है। जानवर बोल या हँस नहीं सकते। आपको यह अहसास होना चाहिए कि आप शब्दों का उपयोग दुआ या बद्दुआ देने के लिए कर सकते हैं, उपचार करने या बीमार करने के लिए कर सकते हैं, अमीरी या ग़रीबी उत्पन्न करने के लिए कर सकते हैं, अपनी बेहतरी या बदतरी के लिए कर सकते हैं। अपने शब्दों की शक्ति का इस्तेमाल अपने ख़िलाफ़ करना छोड़ दें। हमेशा दुआ दें; तब आपको जीवन में काँटे नहीं, फल मिलेंगे।

उसके शब्दों ने एक वसीयत प्रकरण सुलझा दिया

सैन फ़्रांसिस्को की एक महिला मेरी पुरानी मित्र है। उसने मुझे कुछ समय पहले फ़ोन किया और बताया कि उसके पिता ने अपनी वसीयत में उसे हिस्सा नहीं दिया था। जायदाद उसके परिवार के बाक़ी पाँच सदस्यों यानी उसके भाई-बहनों में बराबर-बराबर बाँटी जा रही थी। उसने मेरे सुझाव पर एक वकील से परामर्श लिया और हर दिन तीन-चार बार पंद्रह मिनट तक ये शब्द कहे: “जायदाद का एक दैवीय, सद्भावनापूर्ण समझौता हो रहा है। जो दैवीय अधिकार से मेरा है, वह मेरे पास आ रहा है। मैं अपने भाई-बहनों को दुआ देती हूँ, वे मुझे दुआ देते हैं और सुखद अंत होता है।”

एकाध सप्ताह बाद उसके वकील ने उसे फ़ोन करके बताया कि उसके भाई-बहन यह नहीं चाहते कि वह वसीयत को चुनौती दे। उन्हें महसूस हो रहा था कि उनके पिता ने उसके साथ अन्याय किया था क्योंकि उसने एक विधर्मी व्यक्ति से शादी कर ली थी। उन्हें लग रहा था कि इससे उनके पिता को कोई मतलब नहीं होना चाहिए था कि वह किससे विवाह करती है और वे उसे जायदाद में बराबर का हिस्सा देने के लिए तैयार हैं। वहाँ पर सचमुच सद्भावनापूर्ण क़ानूनी समझौता हुआ, जिसमें हर एक को बराबरी का हिस्सा मिला।

आपके उपचारक शब्द

“शब्द मानव जाति द्वारा प्रयुक्त सबसे शक्तिशाली औषधि हैं।” (रुडयार्ड किपलिंग) बाइबल कहती है: उसने अपना शब्द भेजा, और उनका उपचार कर दिया.... (साल्म 107:20)

हममें से हर व्यक्ति उपचारक शब्दों का उपयोग अपने लिए भी कर सकता है और दूसरों के लिए भी। यदि हमें तुरंत परिणाम नहीं मिलते हैं, तो इसका कारण है हमारी आस्था या विश्वास की प्रकृति। देखिए, चाहे वह कोई प्रियजन हो या मित्र, हमें किसी दूसरे के लिए उपचारक शब्दों का इस्तेमाल इस तरह करना चाहिए:

यह महसूस करें कि ईश्वर की उपस्थिति आपके मित्र को सराबोर कर रही है और उसके चारों ओर है। यह सद्भाव, सेहत और शांति की उपस्थिति है। महसूस करें कि उस पर दैवीय कृपादृष्टि है। भले ही सामने वाला इसके बारे में कुछ न जानता हो, लेकिन आप व्यक्तिगत रूप से मानते हैं कि उपचार हो रहा है और आपको वाक़ई इस

पर विश्वास है। अगर आप चाहें, तो दिन में कई बार यह कह सकते हैं। आपकी आस्था बढ़ती जाती है। उपचार धीरे-धीरे या तुरंत हो सकता है, जो आपके विश्वास के अनुरूप होगा। यह “अपना शब्द भेजना” है, यानी किसी दूसरे व्यक्ति की ओर अपने विचार और भावना भेजना।

धर्मगुरु इसाइया ने कहा था, “इश्वर ने मुझे ज्ञानी की ज़ुबान दी है, ताकि मुझे पता रहे कि थके हुए व्यक्ति से शब्द कैसे बोला जाए... (इसाइया 50:4)। प्रोत्साहन, प्रशंसा, प्रेम का एक शब्द; इसकी शक्ति कौन माप सकता है?

शिक्षकों का कहना था कि लड़का मंदबुद्धि है और कभी कुछ नहीं सीख सकता। शिक्षकों के अनुसार उससे कोई उम्मीद नहीं थी। बहरहाल, उसकी माँ प्रेम व आस्था में समृद्ध और शक्तिसंपन्न थी। हर दिन वह बारंबार इस प्रकार का संकल्प करती थी: “ईश्वर मेरे लड़के से प्रेम करता है और उसकी परवाह करता है। ईश्वर की प्रज्ञा उसके भीतर उमड़ती है; ईश्वर की बुद्धिमत्ता उसके माध्यम से काम कर रही है; वह ईश्वर की आदर्श अभिव्यक्ति है।”

यह लड़का अब सामान्य है और स्कूल में बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। यह आपके शब्दों की आध्यात्मिक संपत्ति है, बशर्ते वे प्रेम और समझ से भरे हों। उस महिला के शब्दों में सामंजस्य बनाने और उपचार करने की शक्ति थी।

उसके शब्दों ने भुगतान करवा दिया

एक इंजीनियरिंग फ़र्म के क्रेडिट मैनेजर के पास कई डूबत ख़ाते थे, जो कुल मिलाकर 30,000 डॉलर के थे। मैनेजर ने पिछले डूबत ख़ातो की सूची बनाई और हर सुबह काम पर जाने से पहले वह हर नाम लेता था तथा इस तरह के शब्द बोलता था: “फलां व्यक्ति समृद्ध हो चुका है, नियामतें पा चुका है और उसकी अच्छाई कई गुना हो चुकी है। वह अपने सारे कर्ज़ तुरंत चुका देता है। वह ईमानदार, गंभीर और न्यायपूर्ण है। मैं उसके चेक के लिए इसी वक़्त धन्यवाद देता हूँ। वह धन्य है; हम धन्य हैं। मैं धन्यवाद देता हूँ! आमीन!”

उसके अधिक गहरे मस्तिष्क को दिया गया उसका यह कथन या आदेश उसके हर ढीले ग्राहक़ तक पहुँच गया। उन सभी ने एक महीने के भीतर पूरा भुगतान कर दिया। आस्था और विश्वास के उसके शब्दों को उसके अवचेतन मन ने स्वीकार कर लिया था और वे टेलीपैथी के माध्यम से उन लोगों तक पहुँच गए, जिन पर कर्ज़ बाक़ी था और जिन्होंने इससे पहले भुगतान के उसके बारंबार आग्रहों का कोई जवाब नहीं दिया था।

उसके शब्दों ने किस प्रकार रोज़गार का एक नया द्वार खोला

साठ वर्षीय एक महिला ने दावा किया कि उसे नौकरी नहीं मिल पाई और उम्र के कारण उसके लिए सारे द्वार बंद हो चुके हैं। फिर उसने इस प्रकार संकल्प लिया: “मैं ईश्वर की संतान हूँ। मेरे पिता ने मुझे हमेशा सार्थक रोज़गार दिया है। मेरे पिता मुझे अच्छा भुगतान देते हैं और मेरे लिए एक नया द्वार खोल देते हैं।”

उसे नई शक्ति और आत्मविश्वास मिला, जो उसके व्यक्तित्व में तुरंत झलकने लगा। वह कई एजेंसियों में जाकर मिली और नौकरी के बारे में पूछताछ करने लगी। जल्द ही एक नियोक्ता ने उसे एक अच्छा पद दे दिया। नियोक्ता ने ख़ुशी-ख़ुशी उसे नौकरी पर रखा। उसे उस महिला के स्थायित्व, वफ़ादारी और बरसों के अनुभव की बदौलत मिली बुद्धिमानी की ही तलाश थी।

आपके शब्द आपकी समस्याओं को सुलझा सकते हैं

एक युवा सेक्रेटरी एक बहुत सख़्त मालिक के लिए काम करती थी, जिसकी भाषा थोड़ी परपीड़क किस्म की थी। उस सेक्रेटरी ने इस तरह का कथन कहा: “सृष्टि में मेरे मालिक जैसा कोई इंसान नहीं है। ईश्वर मेरे मालिक के माध्यम से सोचता है, बोलता है और काम करता है। ईश्वर उसमें है और उसके माध्यम से बोलता तथा काम करता है।”

कुछ ही समय बाद उस मालिक ने व्यवसाय की बागडोर अपने बेटे के हाथों में सौंप दी, जो जल्द ही उस सेक्रेटरी से प्रेम करने लगा। लेखक को यह कहते हुए ख़ुशी हो रही है कि उसे उनका विवाह कराने का सौभाग्य हासिल हुआ था। इस युवती ने अपने शब्दों को नियंत्रित किया और उसे दैवीय जवाब मिल गया।

जब आप असीमित के दृष्टिकोण से बोलते हैं, तो आपके शब्द सच हैं; उनमें शक्ति होती है और वे साकार होते हैं। प्रारभं में शब्द था और शब्द इर्श्वर के पास था, और शब्द ही इर्श्वर था। (जॉन 1:1)

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. आपका विचार ही आपका शब्द है। शब्द आपके मस्तिष्क का शस्त्रागार हैं। विचार ही वस्तुएँ हैं और आपके शब्द साकार होते हैं।
2. आपके शब्द परमाणु ऊर्जा से बहुत अधिक शक्तिशाली होते हैं। शब्दों का इस्तेमाल परमाणु शक्ति के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए किया जा सकता है, जैसे महासागर में जहाज़ चलाने या बिजली उत्पन्न करने में। दूसरी ओर, शब्दों का इस्तेमाल परमाणु ऊर्जा के विनाशकारी उपयोग के लिए भी किया जा सकता है।
3. अपने शब्दों को भावना से सराबोर कर दें, उनमें जीवन तथा अर्थ फूँकें। इस प्रकार आप आकारों, उपयोगों अनुभवों और घटनाओं में परिणाम का अनुभव करेंगे।
4. आप आदेश के शब्द जारी कर सकते हैं, जैसे “मेरे शब्द उपचार करते हैं, सजीव करते हैं, जीवंत बनाते हैं, समृद्ध करते हैं संतुष्ट करते हैं और उन सभी लोगों को अमीर बनाते हैं, जिनके साथ मैं व्यवसाय करता हूँ।” इन शब्दों से आपका व्यवसाय फल-फूल सकता है और समृद्ध हो सकता है। आपके शब्द आपके विचार का शरीर हैं।
5. मनुष्य जिस चीज़ का आदेश देगा, वह साकार हो जाएगी। (जॉब 22:28) दूसरे शब्दों में, आपका शब्द “सजीव बन जाता है” या आपके जगत में साकार हो जाता है।
6. आपके शब्द मानसिक समतुल्य हैं, जो उनकी छवि और समान चीज़ो को आपके

अनुभव में प्रकट कर देते हैं।

7. ऐसे व्यक्ति की तरह बोलना सीखें, जिसके पास अधिकार हो। यक़ीन रखें कि आपका अवचेतन मन आपके शब्द - आपके विश्वास - का जवाब देता है।

8. उन शब्दों का इस्तेमाल करें, जो आपको आकर्षित करते हैं, आपका मन मोहते हैं या रोमांचित करते हैं। उन्हें बार-बार दोहराएँ। इन विचारों को मन में बार-बार दोहराने से आपके जीवन में चमत्कार हो जाते हैं।

9. अपने शब्दों को ईश्वर और सत्य के दृष्टिकोण से प्रवाहित होने दें। इससे आपको क़ानूनी और अन्य मुश्किल मसलों में सामंजस्यपूर्ण समाधान मिलेगा।

10. रुडयार्ड किपलिंग ने कहा था, “शब्द मानव जाति द्वारा प्रयुक्त सबसे शक्तिशाली औषधि हैं।” आपके विचार और भावनाएँ आपके “शब्द” हैं, जो न सिर्फ़ आपका, बल्कि दूसरों का भी उपचार कर सकते हैं। ईश्वर की उपस्थिति के बारे में सोचें और सचमुच रुचि लें। आपकी चेतना ऊपर उठेगी और चेतना में आपकी वृद्धि के अनुसार ही उपचार होगा। इस तरह आप एक मंदबुद्धि बालक को तेज़ बना सकते हैं।

11. आपके शब्दों में इतनी शक्ति है कि यह कर्ज़ न चुकाने वाले ग्राहकों से भुगतान करवा सकते हैं। उन्हें दुआ दें और वे इसे अवचेतन रूप से महसूस करेंगे तथा उसी अनुरूप काम करेंगे।

12. यदि आप नौकरी की तलाश कर रहे हैं, तो भावना और ज्ञान के साथ इन शब्दों का इस्तेमाल करें: “मैं ईश्वर की संतान हूँ और ईश्वर मेरा नियोक्ता है। मुझे हमेशा अच्छा रोज़गार मिला है, और मैं जीवन में अपनी आदर्श अभिव्यक्ति तथा अद्‌भुत आमदनी के लिए अभी धन्यवाद देता हूँ।”

13. यदि कोई व्यक्ति आपसे कठोरता से बोले या परपीड़क भाषा का इस्तेमाल करे, तो साहस के साथ संकल्प करें कि ईश्वर उसके भीतर निवास करता है और पूरी सृष्टि में उस जैसा कोई दूसरा इंसान नहीं है। यह जान लें कि ईश्वर सभी में है और ईश्वर उसके माध्यम से सोचता, बोलता तथा कार्य करता है। इसकी सच्चाई को महसूस करें और आपको अपनी साकार प्रार्थना की ख़ुशी का अनुभव होगा।

---

*देखें द अमेजिंग लॉज़ ऑफ़ कॉस्मिक माइंड पॉवर, जोसेफ़ मर्फ़ी, प्रकाशक पार्कर पब्लिशिंग कंपनी, इंक. वेस्ट न्याक, न्यूयॉर्क 1965

अध्याय पंद्रह

मौन की अनुभूत दौलत

मौन ईश्वर में मस्तिष्क का विश्राम है। जिस प्रकार नींद शरीर को तरोताज़ा करती है तथा पोषण देती है, उसी प्रकार ईश्वर के साथ संपर्क से मनुष्य को पोषण, संबल तथा ऊर्जा मिलती है। इमर्सन ने कहा था, "आइए मौन हो जाएँ, ताकि हम देवताओं की फुसफुसाहटें सुन सकें।"

मौन अपने ध्यान और इंद्रियगत जागरूकता को बाहरी संसार से हटाकर अपने आदर्श, लक्ष्य या उद्देश्य पर केंद्रित करने में निहित है, जबकि आप जानते हों कि आपके अवचेतन मन की असीमित प्रज्ञा अपरिहार्य रूप से प्रतिक्रिया करेगी और जवाब प्रकट करेगी।

हर व्यक्ति जीनियस होता है

आप संसार में ईश्वर की सभी शक्तियों और गुणों के साथ आए हैं। आप व्यक्ति के रूप में सोचने की शक्ति के साथ आए हैं। आप सोचते हैं, इसलिए आपमें सृजन करने और अपनी मानसिक धारणाओं तथा विश्वासों को अपने आस-पास के संसार में आरोपित करने की शक्ति है। यदि आप अपनी सृजनात्मक शक्ति के बारे में जागरूक हैं, तो आप अमीर हैं। आपकी अमीरी, यहाँ तक कि आपकी सुरक्षा भी, सृजन करने की आपकी शक्ति में निहित है।

एक फ़िल्म स्ट्रडियो के भ्रमण के दौरान मैंने एक पटकथा लेखक से पूछा, "आप कैसे काम करते हैं? जब आप कोई नाटक लिखते हैं, तो आप क्या करते हैं?" उसने कुछ इस तरह का जवाब दिया: "मैं अपने मस्तिष्क को शांत तथा शिथिल कर लेता हूँ और बस बहाव में बहने लगता हूँ। मैं बस इतना जानता हूँ कि पटकथा का मूल विचार क्या है। मैं उस विचार के बारे में सोचता हूँ और उसका आनंद लेता हूँ। फिर रात को सोने से पहले अपने मौन में मैं पुस्तक पर ध्यान केंद्रित करता हूँ। उस वक़्त मुझे पूरा विश्वास होता है कि विषयवस्तु, पात्र और विचार मुझे दे दिए जाएँगे। सुबह जब मैं उठता हूँ, तो मेरे पास पूरी पटकथा होती है और मैं बैठकर उसे लिख लेता हूँ।"

अब वह पटकथा लेखक के मस्तिष्क के सिवा कहाँ उत्पन्न हुई? जिन विचारों पर उसने रात के मौन में मनन किया, उनकी छाप उसके अवचेतन मन पर छूट गई और फिर उसने स्वत: ही पुस्तक के लिए आवश्यक सभी सृजनात्मक विचारों के साथ प्रतिक्रिया की।

आप अपने मस्तिष्क में जीते हैं। वहीं पर आप अमीर या ग़रीब, भिखारी या चोर

बनते हैं। जब आप जीवन में मनचाही चीज़ो के सृजन में अपने विचारों की शक्ति के बारे में जान जाते हैं, तो आपके पास बहुत मूल्यवान मोती होता है। आपके भीतर की दौलत और शक्तियाँ कभी ख़ाली नहीं हो सकतीं। आपकी मानसिक दौलत की कोई सीमा नहीं है, सिवाय उन सीमाओं के, जिन्हें आप ख़ुद ही थोपते हैं।

उसने मौन से किस प्रकार दौलत पाई

रॉबर्ट लुइस स्टीवेंसन ने मौन का नियमित और सुनियोजित अभ्यास किया। उन्हें सोने से पहले रात के मौन में अपने अवचेतन मन को स्पष्ट निर्देश देने की आदत थी। जब उनका ध्यान आस-पास के इंद्रिय-जगत से हटकर अवचेतन मन की शक्ति तथा बुद्धिमत्ता की ओर मुड़ जाता था, तो वे अपने अधिक गहरे मन से आग्रह करते थे कि उनके सोते वक़्त वह कहानियाँ गढ़ ले। उदाहरण के लिए, अगर स्टीवेंसन की आर्थिक स्थिति ख़स्ता होती थी, तो अपने अवचेतन मन को वे कुछ इस तरह आदेश देते थे: "मुझे एक अच्छा रोमांचक उपन्यास दें, जो बिक सके और मुनाफ़ा दे।" उनका अवचेतन मन बेहतरीन प्रतिक्रिया करता था।

स्टीवेंसन ने कहा, "ये सूक्ष्म भूरे पदार्थ (उनके अवचेतन मन की बुद्धिमत्ता और शक्तियाँ) मुझे किसी धारावाहिक की तरह क़िस्तों में कहानी बता सकते हैं और कहानी के रचनाकर यानी मुझे इस बात से अनजान रख सकते हैं कि कहानी किस ओर बढ़ रही है।" उन्होंने यह भी कहा, "मैं जागते वक़्त जो काम करता हूँ, वह भी ज़रूरी नहीं है कि मेरा हो। सारे प्रमाण बताते हैं कि इसके अस्तित्व में भी भूरे पदार्थ का हाथ रहा है।"

उनकी मौन अवधि ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया

द प्रोफ़ेट के लेखक ख़लील जिब्रान न सिर्फ़ रात के मौन में सोचते थे, बल्कि अपने भीतर के ईश्वरीय स्वरूप से संपर्क भी करते थे। वे सभी के प्रति प्रेम, शांति, ख़ुशी और सद्भाव संप्रेषित करते थे। इसके अलावा वे रोज़ाना आंतरिक दीप्ति, प्रकाश, प्रेम, सत्य और सौंदर्य पर भी मनन करते थे। उन्होंने मानव जाति को ईश्वर के साथ मौन साधना की दौलत धरोहर में दी है। जिब्रान प्राय: उस एक, सुंदर और अच्छे ईश्वर की ओर उन्मुख होते थे। उन्होंने लिखा था, "मैं मौन को खोजता हूँ और मौन में खोजे गए ख़ज़ानों को भरोसे के साथ लुटा सकता हूँ।"

उन्होंने भीतर स्थित जीवंत जल के अनंत सोते से बुद्धिमत्ता, सत्य और सौंदर्य बाहर निकाला। रात की ख़ामोशी और असीम के तादात्म्य में वे सर्वोच्च सत्ता से प्रेरित हुए। उन्होंने बुद्धिमत्ता के भव्य मोतियों का सृजन किया, जिन्होंने उन्हें मशहूर और काफ़ी दौलतमंद भी बना दिया।

मौन में एक रोमांचक प्रयोग

मेरे दर्जी ने मुझे अपनी पुत्री के एक रोमांचक व्यावसायिक प्रयोग के बारे में बताया। वह न्यूयॉर्क में एक फ़ैशन शो में मॉडलिंग करने जा रही थी और उसने अपने पिता से कहा,

“मैंने आज शो में आठ हज़ार डॉलर का एक सुंदर अरमाइन कोट देखा। मैं जानती हूँ कि हम उसका ख़र्च नहीं उठा सकते, लेकिन मैं अपने दिमाग़ में एक प्रयोग करने जा रही हूँ। ओह, मुझे तो वह चाहिए ही!”

उसके पिता ने उससे यह कल्पना करने को कहा कि वह कोट पहन रही है, उसके सुंदर फ़र को महसूस कर रही है और उसके स्पर्श को महसूस कर रही है। उसने मन ही मन काल्पनिक कोट पहनने का अभ्यास किया। उसने उसे प्यार से बार-बार सहेजा और छुआ, जैसा कोई बच्ची अपनी गुड़िया के साथ करती है। वह यह सब करती रही और अंतत: उसे इन सबका रोमांच महसूस हुआ। हर रात की ख़ामोशी में वह काल्पनिक कोट “पहनकर” सोने गई और उसकी मालकिन बनने पर ख़ुशी महसूस करती रही। एक महीना गुज़र गया और कुछ भी नहीं हुआ। वह डगमगाने ही वाली थी, लेकिन उसने ख़ुद को याद दिलाया कि निरंतरता से ही फल मिलता है और जो अंत तक लगन रखता है, वही क़ायम रहता है (मैथ्यू 10:22)।

उसके मानसिक नाटक का परिणाम यह हुआ कि अंतत: एक रविवार की सुबह मेरे प्रवचन के बाद एक आदमी ने उसके पैर के अँगूठे पर गलती से पैर रख दिया। आदमी ने सच्चे दिल से क्षमा माँगी, उससे पूछा कि वह कहाँ रहती है और उसे कार से घर छोड़ने का प्रस्ताव रखा। उस युवती ने ख़ुशी-ख़ुशी प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। थोड़े समय की जान-पहचान के बाद उस आदमी ने विवाह का प्रस्ताव रखा, उसे हीरे की एक सुंदर अँगूठी दी और कहा, “मैंने एक बहुत सुंदर कोट देखा था। उसे पहनने पर तुम बहुत जमोगी।” यह वही कोट था, जिसने एक महीने पहले उस युवती का मन मोह लिया था। (सेल्समैन ने कहा कि कई अमीर औरतों ने वह कोट देखा था और उन्हें वह बहुत पसंद भी आया था, लेकिन न जाने क्यों उन्होंने हमेशा दूसरा कोट ख़रीदा था।)

किस प्रकार एक माँ ने अपनी भावनाओं को रिचार्ज किया

एक महिला ने मुझसे शिकायत की कि उसके बच्चे उसे पागल बना रहे थे। मैंने उसे सुझाव दिया कि हर सुबह वह पंद्रह मिनट अलग रख दे और ज़ोर-ज़ोर से 91 वें और 23 वें साल को पढ़े, फिर अपनी आँखें बंद करके ख़ुद को अपने माहौल से अलग कर दे। उसे ईश्वर के असीम प्रेम, अपार बुद्धिमत्ता, परम शक्ति और पूर्ण सद्भाव के बारे में सोचना था। उसे यह महसूस करना था कि प्रेम, शांति, ख़ुशहाली तथा आनंद का माहौल उसे और उसके बच्चों को सराबोर कर रहा है। साथ ही उसे यह दावा करना था कि ईश्वर का प्रेम और शांति उसके दिलोदिमाग़ में भरी हुई है और बच्चों की शांति, सौंदर्य, बुद्धिमत्ता व समझ में वृद्धि हो रही

उसने ईश्वर की शक्ति और बुद्धिमत्ता से अपनी मानसिक व आध्यात्मिक बैटरियों को रिचार्ज कर लिया, जिससे उसके समूचे जीवन का कायाकल्प हो गया। बच्चों के प्रति उसका प्रेम दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ा। मौन में उसे शांति की दौलत भी मिली।

किस प्रकार एक पायलट मौन का अभ्यास करता है

जब मैं पूर्वी देशों की यात्रा कर रहा था, तो मेरा हवाई जहाज़ एक तूफ़ान में फँस गया। बिजली की चमक और बादल की गरज के बीच पायलट ने मुझे बताया कि जब भी वह किसी तूफ़ान में फँस जाता है, तो वह मन ही मन 23 वाँ साल्म दोहराता है और साथ में यह भी जोड़ देता है, “ईश्वर का प्रेम इस जहाज़ को समेटे हुए है और मैं इसे दैवीय योजना के तहत नीचे उतारता हूँ।”

मैंने ग़ौर किया कि पहलेपहल तो यात्री दहशत में थे, लेकिन अचानक वे बहुत शांत हो गए। हमारे पायलट ने हाँगकाँग में सटीक तरीक़े से विमान उतारा और किसी को भी कोई चोट नहीं पहुँची। उसने दहशत में आने से इंकार कर दिया था और इस तरह सभी के लिए प्रेम व सुरक्षा की आरोग्यदायक धाराओं को प्रवाहित किया था।

उसने मौन में अपनी समस्या सुलझाई

एक आदमी ने कटु स्वर में मुझसे शिकायत की कि यूनियन कार्ड न होने के कारण उसे नौकरी नहीं मिल पा रही थी। यही नहीं, उसके पास यूनियन में शामिल होने के पैसे भी नहीं थे। वह अपने बेटे को कॉलेज भेजना और एक नया मकान ख़रीदना चाहता था, लेकिन उसने कहा, “हर क़दम पर मुझे निराशा मिल रही है।”

मैंने उससे कहा कि उसे अपने भीतर की सच्ची आवाज़ को सुनना चाहिए। वह चीज़ो के नकारात्मक पहलू को देख रहा था, लेकिन आस्था ईश्वर के शाश्वत सत्यों को सुनने से उपजती है। रात को वह स्थिर हो जाता था, अपने ध्यान को स्थिर कर लेता था और यह संकल्प करता था, “असीम प्रज्ञा मेरे लिए अभिव्यक्ति का द्वार खोलती है, जहाँ मैं दैवीय रूप से ख़ुशहाल और समृद्ध हो रहा हूँ। ईश्वर रास्ता बना रहा है कि मेरा लड़का कॉलेज जाए और ईश्वर की दौलत प्रचुरता के सैलाब में मेरी ओर प्रवाहित हो रहा है।”

कुछ दिन गुज़रने के बाद उसकी मुलाक़ात एक पूर्व नियोक्ता से हुई, जिसने तत्काल बहुत ऊँची तनख़्वाह पर उसे नौकरी दे दी। यही नहीं, उसने इस आदमी और उसकी पत्नी के रहने के लिए कारख़ाने के पास का अपना ख़ुद का कॉटेज भी दे दिया। तनख़्वाह बढ़ने के कारण वह अपने बेटे को कॉलेज भेजने में कामयाब हो गया। जवाब उसके भीतर की गहराइयों से निकला, जब उसने रात की ख़ामोशी में चुपचाप ईश्वर के प्रेम और दयालुता पर मनन किया।

रोमांचक परिणाम कैसे पाएँ

अपनी इंद्रियों के द्वार बंद कर लें, ताकि आप सांसारिक अनुभूतियों से विचलित न हों। इसके बाद मौन की अवस्था में अपने भीतर निवास करने वाली ईश्वरीय उपस्थिति के बारे में सोचें। आपको आनंदित, ग्रहणशील तथा आशावादी नज़रिए से उसकी ओर जाना चाहिए और यह पूरा विश्वास रखना चाहिए कि जब आप पुकारते हैं, तो असीमित प्रज्ञा जवाब अवश्य देती है। जब आप पानी के लिए किसी तालाब या झरने के पास जाते हैं, तो आप पानी लेने के लिए बाल्टी या कोई दूसरा बर्तन ले जाते हैं। इसी तरह जब आप असीम के साथ तादात्म्य में होते हैं, तो आपका ग्रहणशील मस्तिष्क

(बर्तन) असीम उपचारक उपस्थिति और ईश्वर के सभी उपहारों से भर जाएगा।

आप समय-समय पर अपने मस्तिष्क को दोबारा आदेश देकर उसी क्षण मौन में दाख़िल होना शुरू कर सकते हैं, जहाँ आप अपने ध्यान को इंद्रियों से महसूस होने वाली बातों से हटा लेते हैं और भीतर निवास करने वाले ईश्वर के साथ संपर्क करते हैं, तथा ईश्वर के प्रेम से अपनी आत्मा को भर लेते हैं।

बेहतरीन जीवन कैसे जिएँ

एक युवा डॉक्टर ने मुझे बताया कि रोग-निदान विद्या का अध्ययन करते समय उसे कई प्रकार के रोग लग गए, जिनका उसने अध्ययन किया था। उसे अहसास हुआ कि वह लगातार रुग्ण चित्र देखता रहता था और उसके दिमाग़ ने उन रोगों को उत्पन्न कर दिया, जिनसे वह डर रहा था।

बहरहाल, अपनी दशा का कारण मालूम होने के बाद स्थिति को दुरुस्त करने के लिए उसने यह मनन किया कि सारे रोग रोगियों के विकृत मानसिक विचारों के कारण उत्पन्न होते हैं। वह सद्भाव, स्वास्थ्य और शांति के आदर्श विचारों पर मनन करने लगा। जब भी उसे नकारात्मक स्थिति नज़र आई, तो वह पूर्णता सौंदर्य और आदर्श पर मनन करने लगा। वह सभी रोगियों में ईश्वर की उपस्थिति देखने लगा और इस प्रकार सभी रोगों से अप्रभावित हो गया।

आज वह एक बेहतरीन जीवन जीता है। वह गंभीर संक्रमण वाले रोगियों के वार्ड्स में जाता है और सभी प्रकार के रोगियों से मिलता है, लेकिन उसे कोई रोग नहीं होता।

वैज्ञानिक और मौन

एक मशहूर इंजीनियर और अंतरिक्ष वैज्ञानिक के सामने जब समस्याएँ आती हैं, तो वह अपने रिसर्च ऑफ़िस में अकेला बैठ जाता है और मन ही मन इस प्रकार मनन करता है: “मुझे इस वक़्त दैवीय समाधान के बारे में जागरूक बनाया जा रहा है। ईश्वर जवाब जानता है और मैं तथा मेरे पिता एक हैं। ईश्वर इसी पल मेरे सामने यह उजागर करता है।”

वह कहता है कि उसे हमेशा जवाब मिल जाता है, कई बार तो उसके दिमाग़ में सहज बोध की एक कौंध में या अक्सर उसके दिमाग़ में एक ग्राफ के रूप में, जो सटीक जवाब होता है। वह अपनी तकनीक को “मौन समाधान” कहना पसंद करता है।

कछ क्यों नहीं हुआ

एक महिला ने मुझे बताया कि वह हर दिन आधे घंटे तक मौन में बैठी, लेकिन इसके बावजूद उसे कोई परिणाम नहीं मिला। मुझे पता चला कि उसकी विधि यह थी कि वह संगीत बजाती थी धूप जलाती थी, और पवित्र मूर्तियों पर ध्यान केंद्रित करती थी। वह कुछ मुद्राओं में भी बैठती थी, मोमबत्तियाँ जलाती थी, उसने अपने घर में पूजाघर

बनाए और प्रार्थना करते समय पूर्व दिशा की ओर मुँह करके बैठी।

वास्तव में वह जीवन की परिधि और बाहरी चीज़ो में ही पूरी तरह संलग्न थी। उसका पूरा जीवन उथल-पुथल से भरा था। वह विभिन्न मानसिक असामान्यताओं से बीमार कुंठित, अकेली, बोर और परेशान थी। उसका मन मूर्तियों, मोमबत्तियों, कर्मकांड, धूप, संगीत और मुद्राओं पर केंद्रित था, जो सभी एक प्रकार की स्व-सम्मोहक़ निद्रा का परिणाम देती थीं। वह पूरी तरह से अपनी पाँच इंद्रियों से भरी हुई थी और दैवीय उपस्थिति से ज़रा भी संपर्क नहीं कर रही थी।

उसकी बहन ग़ैर-धार्मिक थी और उसे लगातार झिड़कती रहती थी "तुम हर दिन प्रार्थना करती हो, लेकिन इससे तुम्हें क्या फ़ायदा होता है? मेरी ओर देखो। मैं मौन में एक पल भी नहीं बैठती हूँ और ईश्वर पर भी यक़ीन नहीं करती हूँ, लेकिन मैं शक्तिसंपन्न, जीवंत और समृद्ध हूँ।" वास्तव में, वह महिला मौन में गई ही नहीं। वह तो दृश्यों, ध्वनियों और मूर्तियों में ही उलझी रही। उसने अपनी ऊर्जा और समय बाहरी चीज़ो में ही बर्बाद कर दिया। मैंने उसे इमर्सन का बुद्धिमत्तापूर्ण मौन समझाया, जिसका वह अभ्यास करने लगी। फलस्वरूप उसकी मानसिक, शारीरिक और आर्थिक स्थिति में ज़बर्दस्त परिवर्तन हुआ।

इमर्सन का बुद्धिमत्तापूर्ण मौन

संसार और अपनी इंद्रियों के सारे अहसासों से दूर हो जाएँ। इसके बाद अपने विचारों या इच्छाओं की वास्तविकता पर मनन करके बुद्धिमत्तापूर्ण मौन का अभ्यास करें। "यक़ीन करें कि यह इसी वक़्त आपके पास है और आपको यह मिल जाएगा।" इसका अर्थ है कि आपकी इच्छा, विचार, योजना, उद्देश्य या आविष्कार आपके हाथ या हृदय जितना ही वास्तविक है। मस्तिष्क के एक दूसरे आयाम में इसका रूप, आकार और हुलिया मौजूद है।

इस पर अपना ध्यान केंद्रित करें, इस पर ख़ुश हों, जान लें कि असीमित प्रज्ञा, जिसने आपको यह विचार दिया है, इसे साकार करने की आदर्श योजना भी प्रदान करेगी। इस नज़रिए को कायम रखें और आपको जवाब पाने वाली प्रार्थना की ख़ुशी महसूस होगी। यही इमर्सन का बुद्धिमत्तापूर्ण मौन है।

हर दिन समृद्ध लाभों की फ़सल काटे

हर सुबह जागने पर ईश्वर और उसके प्रेम के बारे में सोचें। प्रबल आशा, रुचि और स्फूर्त ध्यान से चौकस और जीवंत बन जाएँ। चुपचाप और धीरे-धीरे कहें, "मैं आज स्वयं को, अपनी योजनाओं, विचारों और अपने जीवन के सभी मामलों को ईश्वर की पावन सर्वव्यापकता के हवाले करता हूँ। मैं गोपनीय, सर्वोच्च स्थान पर रहता हूँ और उसकी प्रबल उपस्थिति मुझ पर, मेरे परिवार पर, मेरे व्यवसाय पर और मुझसे संबंधित सारी चीज़ो पर निगाह रखती है। ईश्वर मेरे साथ चलता है और मुझसे वार्तालाप करता है। मैं जहाँ जाता हूँ, ईश्वर और उसका प्रेम भी मेरे साथ जाता है। ईश्वर मुझे अपने सभी कार्यों

में दौलतमंद बनाता है। उसकी दौलत मेरी ओर मुक्तता से, ख़ुशी से, अंतहीन और अनंत रूप से प्रवाहित होती है। मैं हमेशा अपने होंठों पर ईश्वर की प्रशंसा लेकर पृथ्वी पर चलता हूँ।”

जब आप ऊपर बताई गई विधि से अभ्यास करते हैं, तो आपको अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रचुर लाभों की फ़सल मिलेगी।

वह आंतरिक स्थिरता

“तो फिर हमें आंतरिक स्थिरता के लिए मेहनत करनी चाहिए- एक स्थिरता और एक आंतरिक उपचार- वह आदर्श मौन, जहाँ होंठ और हृदय स्थिर हैं। अब हम अपने अपूर्ण विचारों और निरर्थक रायों के बारे में नहीं सोचते हैं। मौन में तो ईश्वर अकेला हमसे बात करता है और हम हृदय की एकाग्रता में इंतज़ार करते हैं कि हमें उसकी इच्छा मालूम चल सके। अपनी आत्मा के मौन में हम उसकी इच्छा सुनते हैं और उसका बताया काम करते हैं।” (लॉन्गफ़ेलो)

विशेष स्मरणीय बिंदु

1. मौन ईश्वर में मस्तिष्क का विश्राम है, जिसके द्वारा हमें पोषण, स्कूर्ति और नई शक्ति मिलती है।
2. हर व्यक्ति जीनियस होता है। ईश्वर की सारी शक्तियाँ मनुष्य के भीतर हैं, जो चेतन मन के स्थिर होने के बाद सामने आने का इंतज़ार कर रही हैं।
3. आप सोने से पहले अपने अवचेतन मन को प्रेम और मौन में विशिष्ट निर्देश दे सकते हैं। आपका अवचेतन मन आपके निर्देशों की प्रकृति के अनुरूप बेहतरीन तरीक़े से कार्य करेगा।
4. आप सोने से पहले अपने चेतन मन को स्थिर करके अपने अधिक गहरे मन से किसी पुस्तक, नाटक या संगीत के ज़बर्दस्त विचार निकाल सकते हैं। इसके लिए बस असीमित प्रज्ञा से प्रार्थना करें कि वह आपके सामने वह प्रकट कर दे, जो आपको जानने की ज़रूरत है।
5. अपने व्यवसाय में हर सुबह दस-पंद्रह मिनट का समय निकालकर दावा करें कि असीम प्रज्ञा आपकी सारी गतिविधियों को निर्देशित कर रही है। विश्वास रखें कि आपके भुगतान, ख़रीदारी व निर्णय ईश्वर की बुद्धि द्वारा नियंत्रित और अनुकूलित होंगे। आपका व्यवसाय बहुत शानदार तरीक़े से समृद्ध होगा।
6. यदि आप कोई महँगा कोट नहीं ख़रीद सकते, तो कल्पना करें कि आपने इसे पहन रखा है। इसके रंग और सुंदरता को महसूस करें, इसे सहेजें और प्रेम से छुएँ तथा मानसिक रूप से इसे पहनते रहें। इसके बाद वह आपको ऐसे तरीक़ों से मिल जाएगा, जिनके बारे में आप कुछ नहीं जानते।
7. आप मौन की अवस्था में अपनी मानसिक और आध्यात्मिक बैटरियों को रिचार्ज कर

सकते हैं। इसके लिए धीरे-धीरे और ख़ामोशी में 91वें और 23वें साल को दोहराएँ तथा यह विश्वास रखें कि ईश्वर की शांति आपके मन में प्रवाहित होती है व उपचार करती है।

8. समुद्र या हवा में तूफ़ान के समय शांति से यह जान लें कि ईश्वर का प्रेम आपको चारों ओर से घेरे हुए है। इससे आपको शांति का अहसास होगा।

9. प्रबल आशा, स्फूर्त और ध्यान की भावना के साथ मौन में जाएँ। इससे आपको ईश्वर के उपहार मिलेंगे- स्वर्ग की दौलत भी और सांसारिक दौलत भी।

10. जहाँ वर्तमान में विवाद, रोग या संक्रामक बीमारी और आर्थिक अभाव हैं, वहाँ ईश्वर की उपस्थिति देखकर जादुई जीवन जिएँ। आप इन सभी अप्रिय स्थितियों से मुक्त हो जाएँगे।

11. यह दावा करें कि ईश्वर के पास जवाब है और आप ईश्वर के साथ एकाकार हैं, इसलिए आपके पास भी जवाब है। इस प्रकार आपको सभी समस्याओं का दैवीय समाधान मिल जाएगा।

12. मौन में आप ख़ुद को मानसिक रूप से सभी बाहरी दृश्यों, ध्वनियों और वस्तुओं से विरक्त कर लेते हैं तथा पूर्ण हुई इच्छा की वास्तविकता पर मनन करते हैं। जब आप ऐसा करते हैं, तो ईश्वर की शक्ति आपको संबल देती है और आप साकार प्रार्थना का अनुभव करते हैं।

चाहे आप आर्थिक तंगी में हो या अपनी दौलत को कई गुना बढ़ाना चाहते हों, डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी की दौलत से संबंधित मशहूर नीति आपको बताएगी कि अपनी आर्थिक सफलता को क़ाबू में करना कितना आसान है। इस पुस्तक में आपको रोज़मर्रा की ज़िंदगी में शामिल करने के लिए कुछ आसान क़दम बताए गए हैं, जिनके द्वारा आप सीखेंगे कि:

- **संपूर्ण, खुशहाल और सफल जीवन जीने के अपने मौलिक अधिकार का इस्तेमाल कैसे करें?**
- **ज्ञान और समझ से दौलत उत्पन्न होती है, न कि प्रतिभा और किस्मत से।**
- **आकर्षण का नियम आपको किस प्रकार दौलत और खुशहाली तक पहुँचा सकता है?**
- **कृतज्ञ हृदय संपन्नता को क्यों आकर्षित करता है?**
- **कैसे आपके शब्दों – और आपके मौन – की शक्ति आपको समृद्ध बना सकती है।**

यह पुस्तक अवचेतन मन की शक्ति पर डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी के दशकों के शोध का परिणाम है। इसमें व्यावहारिक और असरदार शाश्वत सिद्धांत भरे हुए हैं। क़दम-दर-क़दम आप सीखेंगे कि आर्थिक स्वतंत्रता की कुंजी आपके भीतर ही है और आपको दौलतमंद तथा खुशहाल बनने से कोई भी नहीं रोक सकता, क्योंकि समृद्ध बनना आपका अधिकार है।

जोसेफ़ मर्फ़ी, पीएच.डी., डी.डी., मानसिक और आध्यात्मिक कार्यविधि के विश्वविख्यात विशेषज्ञ थे। उन्होंने कई बेस्टसेलिंग पुस्तकें भी लिखी हैं, जिनमें *द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड* शामिल है। उन्होंने शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक स्व-सुधार के लिए जो व्यावहारिक उपाय और तकनीकें सुझाई हैं, उनसे करोड़ों लोगों का जीवन बेहतर बना है।

MANJUL
www.manjulindia.com